अन्तिम नबी

हज़रत मुहम्मद

(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)

नबियों के क़िस्से

भाग 2

लेखक

सय्यद अबुल हसन अली नदवी (रह.)

(मौलाना अली मियाँ)

अनुवादक

सय्यद अहमद अली नदवी

प्रकाशक :

सत्यमार्ग प्रकाशन

(हिंदी अकादमी)

अल-आफ़िया

504/45/2D, टैगोर मार्ग, डालीगंज, लखनऊ

www.abulhasanalinadwi.org

® *सर्वाधिकार सुरक्षित*

पुस्तक : नबियों के क़िस्से (भाग–2)

लेखक : सय्यद अबुल हसन अली नदवी (रह.)

अनुवादक : सय्यद अहमद अली नदवी

पृष्ठ : 176

मूल्य : Rs.60/-

पुनः मुद्रित : जुलाई सन् 2011

प्रकाशक : सत्यमार्ग प्रकाशन

यूनिट : अल–आफ़िया *(रजिस्टर्ड ट्रस्ट)*

(हज़रत मौलाना अबुल हसन अली नदवी (रह.) की स्मृति में स्थापित)

504/45/2D, टैगोर मार्ग, डालीगंज, लखनऊ

Phone: 0522-2741230 E-mail: al_aafiya@yahoo.com

मिलने का पता :

- अल–आफ़िया, 504/45/2D, टैगोर मार्ग, डालीगंज, लखनऊ
- नदवी बुक डिपो, दारूल उलूम नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग, लखनऊ
- एकाडमी आफ इस्लामिक रिसर्च एण्ड पब्लिकेशन, दारूल उलूम नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग, लखनऊ
- मकतब–ए–इस्लाम, गोइन रोड, लखनऊ

www.abulhasanalinadwi.org

विषय सूची

1 प्राचीन काल 9
2 पुराने दीन 9
3 जीजरतुल रब 10
4 **जल तथा स्थल में उत्पात** 11
5 नबी को अरब खाड़ी में क्यों भेजा गया 11
6 बेसत के पूर्व 12
7 फील की घटना 15
8 अब्दुल्लाह व आमना 18
9 आप का जन्म 18
10 दूध के दिन 19
11 आमना व अब्दुल मुत्तलिब का देहान्त 21
12 अपने चाचा अबू तालिब के साथ 21
13 आसमानी प्रशिक्षण 21
14 हज़रत ख़दीजा से आपका विवाह 22
15 काबा का नव निर्माण 23
16 फुजूल का शपथ 24
17 बेसत के बाद 25
18 ग़ारे हिरा 26
19 बेसते मुबारक 26
20 हज़रत ख़दीजा के घर में 27
21 वरक़ा विन नौफ़ल 28
22 हज़रत ख़दीजा का इस्लाम लाना 29
23 हज़रत अली व हज़रत ज़ैद का इस्लाम लाना 29
24 हज़रत अबु बकर का इस्लाम लाना 30
25 कुरैश के शरीफ़ लोगों का मुसलमान होना 30
26 सफा पर खुलकर हक़(सत्य) का एलान किया 31
27 आप की कौम का दुश्मनी पर उतर आना 32
28 रसूलुल्लाह अबु तालिब के पास 33
29 कुरैश का मुसलमानों पर अत्याचार 34
30 हुजूर सल्ललाहु व सल्लम से कुरैश की मुखालफत 36
31 अबु बकर के साथ कुरैश ने क्या किया 37

www.abulhasanalinadwi.org

32 रसूलुल्लाह के मामले में कुरैश की चिंता 38
33 कुरैश की बेरहमी 39
34 हजरत हमज़ा का इस्लाम लाना 40
35 उतबा और रसूलुल्लाह के बीच बात चीत 40
36 मुसलमानों की हबशा हिजरत 42
37 कुरैश का पीछा करना 43
38 जाहिलियत का नक़्शा 44
39 कुरैश के वफद 45
40 उमर बिन ख़त्ताब का मुसलमान होना 46
41 बनी हाशिम का बहिश्कार 49
42 घाटी अबु तालिब में 50
43 समझौता टूटा 50
44 अबु तालिब और हज़रत खदीजा का इन्तेकाल 51
45 कुरान का चमत्कारिक प्रभाव 51
46 तायफ़ की यात्रा 52
47 मेराज 54
48 अरब के कबीले 55
49 अनसार के इस्लाम लाने के शुरूआत 56
50 उक़बा की बेअत (प्रथम) 57
51 मदीने में इस्लाम का फैलना 57
52 दूसरी बेअते उक़बा 57
53 मदीने हिजरत की अनुमति 58
54 रसूलुल्लाह के विरूद्ध कुरैश की साजिश 59
55 रसूलुल्लाह की मदीने हिजरत 60
56 ग़ारे सौर 61
57 ला तहजन 62
58 आपका सुराक़ा ने पीछा किया 62
59 किसरा का कंगन 63
60 पवित्र व्यक्ति 64
61 मदीने में आपका प्रवेश 64
62 मस्जिदे कुबा 66
63 अबु अय्यूब अंसारी के घर में 66
64 मस्जिदे नबवी 67

www.abulhasanalinadwi.org

65 महाजेरीन व अंसार में भाई चारगी 68
66 मुहाजिर व अनसार के बीच हुजूर की तहरीर 68
67 अजान की हुक्म 68
68 मदीने के मुसलमान खुलकर सामने आ गये 69
69 क़िबले की तबदीली 69
70 मदीने के मुसलमानों से कुरैश की छेड़ छाड़ 71
71 जंग कीं अनुमति 71
72 सराया 71
73 रमजान क रोज की अनिवार्यता 72
74 बदर की फैसला कुन जंग 72
75 लड़कों में जेहाद का शौक 74
76 काफ़िरों और मुसलमानों में संख्या का फर्क 75
77 जंग की तैयारी 76
78 अल्लाह के हुजूर आपकी दोआ 77
79 जंग की शुरूआत 78
80 प्रथम शहीद 78
81 जेहाद के शौक में दो युवकों की प्रतियोगिता 79
82 स्पष्ट विजय 79
83 जंगे बादर के बाद लोगों पर उसका प्रभाव 80
84 मुसलमान बच्चों की शिक्षा 81
85 ओहद की जंग 81
86 ओहद के मैदान में 83
87 हम उम्र (युवकों) में प्रतियोगिता 83
88 जंग 84
89 मुसलमानों के ख़िलाफ जंग 85
90 महब्बत (प्रेम और जान निसारी का नया नमूना 86
91 मुसलमानों का दोबारा जमाव 89
92 एक मोमिना का सब्र 91
93 आप पर महिलाओं की जां निसारी 91
94 जान निसारी का एक उदाहरण 92
95 जान से अधिक प्रिय 92
96 बेरे मऊना 94
97 मक़तुल का अंतिम शब्द 94

www.abulhasanalinadwi.org

98 बनी नज़ीर की जिला वतनी 95
99 ग़जवाजात 95
100 गज़वा खंदक 97
101 हिकमत – मोमिन का खोया हुआ माल 97
102 मोजिज़ात 99
103 इस्लामी शहसवार 100
104 मां अपने बेटे को जेहाद के लिए उभारती है 101
105 अल्लाह के लिए आकाश और धरती 101
106 ग़जवा बनी कुरेज़ा 104
107 माफ़ी और सख़ावत 107
108 सुलेह हुदेबिया 108
109 बेअते रिजवान 110
110 सुलहे हुदेबिया 111
111 मुसलमान की परीक्षा 112
112 खालिद बिन वलीद का इस्लाम लाना 115
113 बादशाहों को इस्लाम की दावत 115
114 ग़जवा खैबर 117
115 लशकरे इस्लाम 118
116 कामयाब लीडर 119
117 हज़रत अली औ यहूदी का मुक़ाबला 120
118 काम थोड़ा, उसका बदला बड़ा 120
119 मैंने इसलिए आपकी इताअत नहीं की 121
120 खैबर में क़्याम 122
121 यहुद की मुजरिमाना साज़िश 123
122 फतहात 123
123 उमरतुल क़ज़ा 124
124 लड़कियों की तरबियत 124
125 ग़ज़वा मौता 125
126 रूम की धरती पर 126
127 हम जंग बल और संख्या के बलबूते नहीं करते 127
128 हज़रत खालिद की हिकमत 128
129 आंखों देखा हाल 128
130 जाफ़र तय्यार 128

www.abulhasanalinadwi.org

131 हमला करने वाले 129
132 फतेह मक्का 129
133 बनी बकर और कुरैश 129
134 रसूलुल्लाह से फ़रयाद 130
135 एहद के नवीनीकरण 130
136 नबी के अपने माता पिता 131
137 अबू सुफयान की हैरत 131
138 मक्के की तैयारी 132
139 अबू सुफ़यान हुजूर की सेवा में 132
140 आम माफ़ी 133
141 अबु सुफयान फ़तेह के जुलूस का नज़ारा करते हुए 134
142 नियाज़मंदाना दाखला 135
143 माफी– रहम का दिन 136
144 छोटी मोटी झड़पें 136
145 हरम शरीफ की बुतों से पाकी 136
146 आज का दिन अच्छे व्यवहार का दिन 137
147 इस्लाम दीने तौहीद 138
148 प्रेम करने वाले नबी 139
149 अल्लाह की शरीअत 139
150 इस्लाम पर बेअत 140
151 तुम्हारे साथ ही मरना 140
152 जाहिलियत के निशानों का मिटना 141
153 फ़तेह मक्का के असरात 141
154 ग़ज़वा हुनेन 141
155 हुनेन की वादी में 142
156 कामयाबी और शिकस्त 143
157 ग़ज़वा तायफ़ 144
158 तायफ़ का मुहासिरा 144
159 हिसार खत्म 145
160 रहम व करम 147
161 खुशी से मजबूरी से नहीं 147
162 बुत परस्ती के साथ कोई नरमी नहीं 148

www.abulhasanalinadwi.org

163 तबूक की जंग 149
164 ग़ज़ेवे का समय 149
165 सहाबा का सफर 150
166 तबूक को लशकरे इस्लाम 150
167 रसूलुल्लाह का मदीने लौटना 151
168 काब बिन मालिक की आजमाईश 151
169 ग़ज़वा तबूक आख़री गज़वा 153
170 इस्लाम में पहला हज 153
171 वुफ़ूद का वर्ष 154
172 ज़कात व सदक़ात का फ़र्ज़ होना 155
173 हज्जातुल विदा 155
174 आपने हज कैसे फरमाया 156
175 वफ़ात 160
176 रसूलुल्लाह का मरज़े वफ़ात 161
177 आख़री लश्कर 162
178 घमण्ड से मुसलमानों को रोकना 163
179 दुनिया के माल से कनारा कशी 163
180 नमाज़ का एहतिमाम 164
181 आख़री खुतबा 165
182 मुसलमानों पर आख़री नज़र 165
183 कब्रों को पूजने से डराना 166
184 आख़री वसियत 166
185 रसूलुल्लाह ने दुनिया को कैसे छोड़ा 168
186 ज़वाल का समय था 168
187 सहाबा पर आपके विसाल का क्या असर पड़ा 169
188 हज़रत अबू बकर का आख़री फैसला 170
189 खिलाफ़त पर हज़रत अबु बकर से बेअत 171
190 मुसलमानों ने आपको कैसे रूख़सत किया 171
191 उम्मुल मोमेनीन उम्मे सलमा फ़रमातीं हैं 172
192 उम्मेहातुल मोमेनीन 172
193 आपकी औलाद 173
194 आपके अख़लाक 174

www.abulhasanalinadwi.org

प्राचीन काल

हज़रत ईसा बिन मरयम के बाद

हज़रत ईसा के बाद आपके प्रेषण का काल (बिअ़सत का जमाना) अधिक लम्बा हो गया था। दुनिया में तारीकी (अंधकार) बढ़ गई थी। और नबियों की शिक्षा की रोशनी (प्रकाश) समाप्त हो गयी थी। नबियों ने जो शिक्षा दी थी तौहीद (एक ईश्वर) का जो पैगाम (संदेश) दिया था और नबियों नें जो आवाज उठाई थी वह दब गयी थी लोग उसको भूल बैठे थे। जो चिराग नबियों ने जलाया था लोगों ने उसको बुझा दिया था।

पुराने दीन

बड़े बड़े दीन और अन्त में ईसाईयत जिसको लोगों ने खिलवाड़ बना लिया था दीन में हर प्रकार की तब्दीली परिवर्तन करने वालों ने उसकी रूह (प्राण) निकाल दी और उसकी अस़ल शक्ल समाप्त कर दी और यह बिगाड़ इस हद तक हो गया कि यदि वह नबी जिन पर वह दीन आया था। दोबारा दुनिया में आते तो वह अपने इस दीन को पहचानने से इनकार कर देते ला इल्मी (अनभिज्ञता) का इजहार करते। य़हूदियत चूं चूं का मुरब्बा हो गयी जिसमें न तो जिन्दगी थी और न रूह। उसके पास न दीन का पैगाम था और न दावत देने का कोई कार्यक्रम तथा योजना। दीन लोगों के लिए दर्दे सर बन गया था।

ईसाइयत अपने प्रथम काल में ही कौम के कट्टर पंथियों के जरिये तहरीफ़ (तबदीली) का शिकार हो गयी। उसका परिणाम यह निकला कि हजरत ईसा की शिक्षा और उनके दीन का प्रकाश मंद पड़ गया। अल्लाह की इबादत (पूजा) भूल बैठे। मजुस जो आग (अग्नि) की पूजा करते थे। उसके लिए पूजा स्थान और पूजा घर बनाते थे पूजा

www.abulhasanalinadwi.org

घर के बाहर वह बिल्कुल स्वतंत्र थे। अपनी इच्छानुसार अपना जीवन बिताते थे उनका न कोई धर्म था और न कोई कर्म। उनके कर्म और धर्म में बड़ा अन्तर था।

बौद्ध धर्म से जो मध्य एशिया और भारत में फैला हुआ था वह बुतों की पूजा में बदल गया। बोफ की (बुद्ध की) मूर्ति बनाकर उसकी पूजा करने लगे और ब्राह्मण - जो भारत का असली धर्म कहा जाता था अपनी पूजा तथा मूर्तियों की संख्या में विशेषता रखता था भगवानों की संख्या करोड़ों में होने के कारण इस धर्म ने अपनी विशेषता खो दी और इन्सानियत समाप्त हो गयी।

जहाँ तक अरबों का प्रश्न है वह अन्तिम दौर में हजरत इब्राहिम की शिक्षा को भुलाकर ऐसी बुतों की पूजा करने लगे जिसकी मिसाल भारत के सिवा कहीं न थी। वह शिर्क (अल्लाह के साथ पूजा में किसी को शामिल करना) में पड़ गये। और अल्लाह को छोड़कर बहुत से भगवानों की पूजा करने लगे। पूरी कौम बुतों की पूजा करने लगी हर क़बीले, शहर हर घर का एक अलग बुत और भगवान था। हजरत इब्राहिम ने काबे का निर्माण केवल अल्लाह की पूजा के लिए किया था, कौम ने उसमें 360 बुत रखकर उसको बुत खाना बना डाला था।

जज़ीरतुल अरब (अरब खाड़ी)

अरबों का चरित्र और कर्म बिगड़ चुका था उनमें शराब और जुए की आदत पड़ चुकी थी। उनके दिल (हृदय) सख़्त हो गये थे। उससे मनुष्यता नम्रता निकल चुकी थी वह अपनी लड़कियों को जिन्दा गाड़ने लगे थे। काफिलों को लूटना, स्त्रियों की लज्जा से खेलना उनकी आदत हो गयी थी। उनकी इज्जत को जानवरों के समान समझते थे किसी के मरने पर उसकी पत्नियां माल और सवारी की तरह उसके वारिसों में बटती थीं। बच्चों को मार डालने का चलन पड़ गया था। केवल इस

www.abulhasanalinadwi.org

भय (डर) से कि उनका खर्च उनको सहन करना होगा। एक दूसरे का कत्ल करना और लड़ते रहना उनकी आदत बन गयी थी। कभी-कभी यह लड़ाइयाँ चालीस वर्षों तक चलती रहती और यह उनके लिए गर्व और खेल व तफरीह की बात थी। इस आपसी लड़ाई में हजारों आदमियों का मर जाना कोई महत्व नहीं रखता था।

जल तथा स्थल में उत्पात

आपके जन्म से पूर्व लोग अपने पैदा करने वाले (स्वामी) को भूल गये थे। पिछले नबी जो शिक्षा दे गये थे उसको भुला दिया था। अपनी इच्छा और ख्वाहिश को भगवान समझ लिया था। उनके दिल से अच्छाई और बुराई का फर्क (अन्तर) जाता रहा ऐसा जान पड़ता था कि जैसे उस जमाने में कोई ऐसा नहीं था जिसको अपने दीन की चिन्ता और फिक्र हो जो अपने पैदा करने वाले की वास्तव में पूजा करे और उसकी पूजा में किसी को शरीक न करे (शामिल न करे)।

नबी को अरब खाड़ी में क्यों भेजा गया

अल्लाह ने इस्लाम की दावत के लिए अरब का चयन किया ताकि इस्लाम की शिक्षा पूरे संसार में फैले। अरबो का दिल साफ स्लेट की तरह था जिस पर अभी तक कोई लिपि (लिखावट) नहीं लिखी गयी थी जिसका मिटाना असंभव होता है। इसके अतिरिक्त उस जमाने में ईरानी, रूसी और भारत वालों को अपनी सभ्यता, संस्कृति तथा उन्नति पर गर्व था और अरब जिनके दिल साफ व छल-कपट से दूर थे केवल उनके दिलों में जिहालत थी।

वह अशिक्षित थे उनमें देहाती पन था जो आसानी से दूर किया जा सकता था और इसकी जगह (स्थान) नई शिक्षा दी जाती तो उसको स्वीकार करना उनके लिए सहल और आसान था। यह अरब दीने

www.abulhasanalinadwi.org

फितरत (प्रकृति) पर उस समय तक कायम थे। यदि कोई हक़ की सच्ची बात उनके समझ में न आती तो वह जंग करते थे लड़ते थे। जब सत्यता उनको मालूम हो जाती, आँखों से अंधकार का परदा हट जाता तो वह फिर सत्यवादियों से प्रेम करते, उनका आदर करते, सत्य को गले लगाते और उसके लिए यदि आवश्यकता पड़ती तो अपनी जान भी देते थे। यह बलवान थे। घुड़ सवार थे अमानतदार थे।

अरब खाड़ी व मक्का में काबा था यह काबा जिसका निर्माण हज़रत इब्राहिम और उनके सुपुत्र हज़रत इस्माईल ने किया था ताकि लोग अल्लाह की बगैर किसी को शरीक् किये इबादत (पूजा) करें और यह काबा तमाम दुनिया के लिए दावत (प्रचार) और अल्लाह की इबादत के लिए कियामत तक (केन्द्र) मरकज बना रहे।

"बेशक यह पहला घर है जो लोगों के लिए अल्लाह की पूजा हेतु बनाया गया जो मक्का में है। जो हिदायत और बरक्त के लिए है।"

(सूरह आल इमरान)

बेसत के पूर्व (मक्का और कुरैश)

हज़रत इब्राहिम ने मक्का का इरादा किया। यह मक्का पहाड़ों से घिरा एक चटयल मैदान था। उसमें ऐसी कोई चीज नहीं थी जिस पर मनुष्य के जीने का सामान हो, न वहाँ खाने की कोई चीज थी और न पीने के लिए पानी था। हज़रत इब्राहिम के साथ उनकी पत्नी हाजरा और उनके सुपुत्र इस्माईल थे। बुत परस्ती से भाग कर यहाँ आये थे जो संसार में फैली हुई थी। यहाँ आने का कारण केवल यह था कि वह एक खुदा की पूजा की जगह का निर्माण करें जिसको (केन्द्र) मरकजियत प्राप्त हो जिसमें केवल एक अल्लाह की इबादत (पूजा) हो और जो लोगों के लिए हिदायत का (स्तंभ) मीनार और पनाहगाह हो।

www.abulhasanalinadwi.org

अल्लाह ने आप के इस कार्य को स्वीकार किया और अल्लाह ने इस काम में बरकत दी अल्लाह ने इस छोटे से परिवार जो एक पुत्र और माता पर शामिल था और जिनको इब्राहिम ने एक बंजर जमीन पर छोड़ दिया था। जो संसार से कटा था अल्लाह ने उनके पीने के लिए जमज़म का कुँआ निकाला और उसमें बरकत दी कि संसार के लोग उसका पानी पीते हैं। और अपने साथ ले जाते हैं। हज़रत इस्माईल पल बढ़ कर थोड़े बड़े हुए। हज़रत इब्राहीम ने उनको ज़बह करने का इरादा किया उस समय हज़रत इस्माईल लड़कपन की अवस्था में थे। हज़रत इब्राहिम ने जो स्वप्न देखा उसको वह हकीकत (वास्तविकता) बनाना चाहते थे। वह अपनी प्रिय वस्तु (बेटा) अल्लाह की मुहब्बत पर कुरबान करने वाले थे हज़रत इब्राहिम ने स्वप्न में पाये आदेश को स्वीकार किया और उसका पालन करने की अपनी इच्छा प्रकट की। और बेटे के ज़ब्ह पर तैयार हो छूरी चला दी। परन्तु अल्लाह ने महान ज़बीहे से उसका फिदया दिया और हज़रत इस्माईल को सुरक्षित रखा ताकि अल्लाह की दावत में वह हज़रत इब्राहिम का हाथ बटायें और उनको रसूलुल्लाह के जद्दे अमजद (पुरख) होने का शरफ (गर्व) प्राप्त हो।

हजरत इब्राहिम मक्का लौट कर आये और बाप बेटे ने मिलकर काबा का निर्माण किया। इन दोनों ने इसको स्वीकार करने और इसमें बरकत पैदा करने की अल्लाह से दुआ की कि वे दोनों इस्लाम के लिए जिये और इस्लाम के लिए मरें और अल्लाह उनकी औलाद में एक नबी भेजे जो हज़रत इब्राहिम की दावत का नवीनीकरण करे और उस कार्य को पूरा करे जिसको उन्होंने प्रारम्भ किया है। हज़रत इब्राहीम और इस्माईल दोनों काबा की दीवारे उठा रहे थे और यह दुआ करते जाते कि "हमारे मालिक हमें अपना फरमाबरदार (आज्ञाकारी) बना। हमारी औलाद में से एक गिरोह को अपना फरमाबरदार सेवक बना। ऐ

www.abulhasanalinadwi.org

अल्लाह हमको इबादत (पूजा) का तरीका बता और हम पर दया दृष्टि कर। तू वास्तव में दया करने वाला है। ऐ हमारे परवरदिग़ार (पालनहार) उन लोगों में से ही एक पैगम्बर भेज जो उनको तेरी आयते पढ़ पढ़ कर सुनाये और किताब व दानाई सिखाये और उनके दिलों (हृदय) को पाक साफ करे बेशक तू हिकमत वाला है और ग़ालिब (बलवान) है।''

(सूरह बक़रह)

अल्लाह ने उनकी संतान में बड़ी बरकत दी और यह परिवार खूब फला और फूला। अदनान की खूब संतान हुई। यह हजरत इस्माईल के पोते थे इन्ही की संतान में फहर बिन मालिक थे। इनकी औलाद में कुसई बिन कुलाब थे जो बैतुल्लाह (काबा) के मुहाफिज और निगरां थे। उन्हीं के पास काबा की चाबियाँ (कुन्जी) थीं। ज़म ज़म के पिलाने का प्रबंध इनके पास था। हज के मौसम में लोगों की मेहमानदारी इन्हीं के सुपुर्द थी मजलिसे नदवा में परामर्श तथा महत्वपूर्ण कार्य हेतु सभाओं का प्रबन्ध इनके पास था। मक्का का हर प्रकार का आदर इनको प्राप्त था। जंग तथा लड़ाई के समय झन्डा इनके पास होता था।

इनकी संतान में यह शरफ तथा आदर अब्दे मुनाफ को प्राप्त हुआ। हाशिम, अबदे मुनाफ के बड़े पुत्र थे। वह अपनी क़ौम के बड़े थे। उन्हीं के पास ज़म ज़म के पिलाने तथा हज के मौसम में मेहमांनदारी (जियाफ़त) का प्रबंध इन्हीं के पास था और यह रसूलुल्लाह के दादा अब्दुल मुत्तलिब के पिता थे। अब्दुल मुत्तलिब को मेहमान नवाजी और सिकाया का पद अपने चाचा मुत्तलिब बिन अब्दे मुनाफ से प्राप्त हुआ। इनको जो आदर, शोहरत और नेक नामी प्राप्त हुई वह इनके बाप दादा में किसी अन्य को प्राप्त नहीं हुई। फहर बिन मालिक की औलाद का नाम कुरैश पड़ा इसी नाम से इस क़बीले की शोहरत

www.abulhasanalinadwi.org

हुई। यही नाम सब नामों पर ग़ालिब रहा। अरब के लोगों में कुरैश नाम बड़े आदर और ताज़ीम से लिया जाता था सब कबीलों में इज्जत थी, मान था इस कबीले में अच्छी और बलीग़ व फसीह जबान (भाषा) बोली जाती थी। व्यवहार में, बहादुरी में उनका कोई मुकाबिल नहीं था और यह कबीला लड़ाई झगड़ा से सदैव दूर रहता और झगड़ों को ना पसन्द करता था कुरैश हज़रत इब्राहिम और उनके सुपुत्र हज़रत इस्माईल के दीन धर्म पर कायम थे। तौहीद और अल्लाह की वहदानियत पर विश्वास था इन में अम्र बिन लही पहला व्यक्ति है जिसने इस दीन में तबदीली पैदा की और बुत परस्ती (पूजा पाठ) की नींव रखी। जानवरों का आदर (ताजीम) करवाया और भगवान के नाम पर साडों को छोड़ने की परम्परा चलाई। हराम व हलाल की नित नये ढंग निकाले जो हजरत इब्राहिम की शरिअ़त के विपरीत थे। अम्र शाम़ गया उसने वहा बुतों की पूजा करते लोगों को देखा। यह पूजा पाठ उसको भला लगा उसने वहाँ से कुछ मूर्तियां लीं और उनको लेकर मक्का आ गया। और उन मूर्तियों को काबा में रखवा दिया और लोगों को उनकी पूजा और उनका आदर करने को कहा कुछ लोगों का कहना है कि बुत परस्ती की (नींव) बुनियाद धीरे धीरे इसी प्रकार पड़ी। प्रारम्भ (शुरू) में जो लोग मक्का से बाहर सफर (यात्रा) पर जाते वह अपने साथ अरब के कुछ पत्थर तबररूक (प्रसाद) के तौर पर ले जाते थे। उसके बाद जो पत्थर उनको पसन्द आ जाता उसको वह पूजा के लिए रख लेते थे।

फील की घटना

यह घटना इस बात की प्रमाण थी कि कोई बड़ी घटना होने वाली है। और अल्लाह् (भगवान) अरब वालों के साथ भलाई का मामला करने वाले हैं। और अल्लाह ताला काबा को जो श्रेणी शान व आदर देने वाले हैं वह दुनिया व संसार में किसी घर को नहीं मिलेगा।

www.abulhasanalinadwi.org

इस घटना का सारांश (खुलासा) यह है कि अबरहा अल अशरम जो नज्जाशी की ओर से सनआ़ में राज्यपाल था उसने सनआ़ में एक बड़े गिरजे का निर्माण कराया और उसका नाम कुल्लैस रखा उद्देश्य केवल यह था कि अरबों के हज का रूख़ उस तरफ हो जाये उसके लिये यह दुख और कष्ट की बात थी कि काबा की यह हैसियत बाकी रहे कि हर ओर (दिशा) से लोग काबा आएं हज करें। यह स्थान गिरजा को मिलना चाहिए यही उसका उद्देश्य था।

अरब यह पसंद नहीं करते थे कि काबा के बराबर कोई दूसरा घर काबा का स्थान ले। काबा की मुहब्बत उसका आदर अरबों के खमीर (घुट्टी) में पड़ा था। वह किसी प्रकार किसी दशा में काबा का स्थान किसी को देने के लिए तैयार नहीं थे। इसका बड़ा चर्चा हुआ और हर जगह इसकी बात होने लगी। चुनांचि एक कनानी कुल्लेस जाकर उसे नापाक कर दिया। अबरहा को यह बात बहुत बुरी लगी। और उसने गुस्से में कसम खाई कि वह काबा को अवश्य नष्ट करेगा। अबरहा इस कार्य के लिए लश्कर लेकर निकल पड़ा उसके साथ हाथियों की एक बड़ी संख्या थी। जब अरबों ने यह बात सुनी तो उन पर बिजली गिर पड़ी। वह बहुत डरे और इसका प्रयत्न करने लगे कि किसी प्रकार इस लश्कर को रोका जाये। उनको यह एहसास हुआ कि वह लश्कर रोक न सकेंगे। अन्त में उन्होंने यह मामला अल्लाह पर यह सोचकर छोड़ दिया कि यह घर अल्लाह का है वही इसकी रक्षा करेगा।

अबरहा और अब्दुल मुत्तालिब के बीच हुई बात चीत से यह बात सिद्ध होती है। अबरहा ने उनके दो सौ ऊँट पकड़ लिये थे उनको लेने के लिए जब वह अबरहा के पास गये तो उसने उनका आदर किया उनके लिए पलंग से नीचे उतर आया और उनको अपने पास बिठाया और उनसे उनके आने का कारण जानना चाहा। उन्होंने अबरहा से कहा कि मैं अपने दो सौ ऊँट जो तुमने पकड़ लिए हैं वापस लेने आया हूँ।

www.abulhasanalinadwi.org

जब वह अपनी बात कह चुके तो अबरहा ने उनको लज्जित करते हुए कहा कि तुम मुझसे दो सौ ऊँटों के लेने की बात कर रहे हो और उस घर की बात नहीं करते जो तुम्हारे और तुम्हारे बाप दादा का दीन व धर्म है। मैं तो उसको (ढाने) गिराने आया हूँ। अब्दुल मुत्तालिब ने उसको उत्तर दिया कि मेरा मामला ऊँटों से सम्बन्धित है। घर का मामला अल्लाह का है। यह घर अल्लाह का है। वही इसकी रक्षा करेगा। अबरहा बोला सम्भव नहीं कि मुझे कोई रोक सके। उन्होंने उत्तर दिया तुम जानो और वह जाने।

कुरैश अबरहा के लश्कर और उस अत्याचार (जुल्म) व ज़ियादती से बचने के लिए पहाड़ों पर चढ़ गये। देख रहे थे कि अल्लाह अपने घर की सुरक्षा कैसे करता है। अब्दुल मुत्तल्लिब और उनके साथ कुरैश के कुछ लोग काबे के दरवाजे का कुन्डा पकड़कर अल्लाह से अबरहा और उसके लश्कर से सुरक्षित रहने की दुआ कर रहे थे अबरहा अपने लश्कर के साथ काबा को गिराने को बढ़ा उसके हाथी का नाम महमूद था। वह हाथी मक्का के रास्ते (मार्ग) में बैठ गया उसको उठाने के लिए उसे बहुत मारा लेकिन मार खाने के बाद भी वह जमीन से नहीं उठा। उसका रूख जब यमन की ओर किया तो वह उठकर भागने लगा। उसी समय अल्लाह ने समुद्र के रास्ते चिड़ियाँ भेजी हर चिड़िया कंकरियां उठाये हुए थी। यह कंकरियां (पत्थर) जिसको लग जाता वह मर जाता यह देख कर हबशा वाले जिस रास्ते से आये थे उसी रास्ते से भागने लगे। चिड़ियों के पत्थरों से वह गिरते रहे और मरते रहे। अबरहा का जिस्म भी छलनी हो गया उसके साथी उसको अपने साथ, वापस ले जाने लगे तो उसका एक एक पोर गिरने लगा। उसको लेकर जब सनआ आये तो वह बहुत बुरी मौत मरा। इसका कुर्आन ने इस तरह वर्णन (ब्यान) किया है कि

"तर्जुमा"-"क्या तुमने नहीं देखा कि तुम्हारे रब ने हाथी वालों

www.abulhasanalinadwi.org

के साथ क्या किया। क्या उनका दांव गलत नहीं किया और उन पर झुण्ड के झुण्ड चिड़ियां नहीं भेजी जो उन पर कंकरीले पत्थरों को फैंकती थी और उनको ऐसा कर दिया गोया खाया हुआ भूसा।"

(सूरह फील 1.5)

जब अल्लाह ने हबशा वालों को असफल लौटाया और अल्लाह ने उन्हें अजाब (पाप) पहुंचाया तो उससे अरबों में कुरैश का आदर बढ़ गया और वह कहने लगे कि वह तो अल्लाह वाले हैं। अल्लाह ने उनकी तरफ से लड़ाई लड़ी और दुश्मन को शिकस्त दी। इस घटना की विशेषता बढ़ी। कहा जाने लगा कि यह घटना फील वर्ष में हुई, उस लड़के का जन्म फील वर्ष में हुआ। यह बात या घटना फील वर्ष के पूर्व या बाद में हुई। अस्हाबुल फील की घटना स0 570 ई0 में घटी।

अब्दुल्लाह व आमना

कुरैश के सरदार अब्दुल मुत्तलिब के 10 पुत्र थे। अब्दुल्लाह उनके बीच के बेटे थे। अब्दुल्लाह का विवाह उन्होंने बनी जहरा क़बीले के सरदार वहब की बेटी (पुत्री) आमिना से किया। आमिना उस समय कुरैश में अपनी फज़ीलत (श्रेष्ठता) व रूतबे में खातूने अव्वल (प्रथम महिला) थीं। जब आमिना गर्भवती (हामिला) थी तो अब्दुल्लाह का देहान्त हो गया। हज़रत आमिना को ऐसे प्रमाण मिल रहे थे कि उनका लाल (सुपुत्र) बड़ी शान वाला होगा।

आपका जन्म (पैदाइश)

रसूलुल्लाह की पैदाइशे मुबारक (शुभ जन्म) रबीउल अव्वल की 12 तारीख सोमवार को हुई। हजरत ईसा के 570 वर्ष के बाद अतः संसार में यह दिन सबसे जियादा मुबारक और सबसे पवित्र तिथि थी। आपका शजरा (जन्म कुण्डली) निम्न प्रकार है। मोहम्मद बिन अब्दुल्लाह

www.abulhasanalinadwi.org

बिन अब्दुल मुत्तलिब बिन हाशिम, बिन अबदे मुनाफ, बिन कुसई, बिन किलाब, बिन मुर्रा बिन काब, बिन लुई, बिन ग़ालिब, बिन फहर, बिन मालिक, बिन नजर, बिन कनाना, बिन खुजैमा, बिन मदरका, बिन इलयास, बिन मुजेर, बिन मआद, बिन अदनान- अदनान का नसब हज़रत इसमाईल बिन इब्राहिम पर समाप्त होता है। आपका जन्म हो जाने पर आपकी माता ने आपके दादा अब्दुल मुत्तलिब को यह कहला कर बुला भेजा कि आपके पोते का जन्म हुआ है। सूचना पाते ही दादा आये आपको देखा आप को गोद में लिया और उनको लेकर काबे में दाखिल हुए और अल्लाह से दुआ की, अल्लाह की प्रशंसा की और आपका नाम मुहम्मद रखा। यह नाम अरबों के लिए बिल्कुल नया था इसलिए अरबों को इस नाम पर आश्चर्य हुआ।

रज़ाअत दूध पिलाने के दिन

अब्दुल मुत्तलिब को अपने यतीम पोते के लिए जो उनकी औलाद में सबसे जियादा अजीज़ थे अरबों के रिवाज के अनुसार आया (दूध पिलाने- खिलाने वाली) की तलाश हुई जो अरब देहात की हो। यह सआदत हज़रत हलीमा सादिया के भाग में आई। वह बच्चे की तलाश में शहर आयी थीं। वह (काल) सूखे का जमाना और बड़े कठिन दिन थे। हर दाई चाहती थी कि उसको किसी मशहूर धनवान का बच्चा मिले। इसी कारण दाइयों ने आपको स्वीकार नहीं किया केवल यह सोचकर कि एक यतीम के दादा से उनको क्या प्राप्त होगा। पहली बार दाई हलीमा ने भी यह सोचकर रसूलुल्लाह को स्वीकार करने में हिचकिचाहट महसूस की। लेकिन फिर उनका इरादा आपको लेने के लिए बदला। अल्लाह ने उनके दिल में आपकी मोहब्बत पैदा की और उन्होंने हुजूर को स्वीकार किया। उनको कोई दूसरा बच्चा नहीं मिला था। वह आपको लेकर क़ाफिले में आई तो उन्होंने आपकी बरकत

www.abulhasanalinadwi.org

अपनी आखों से देखी। हर चीज़ एक नई शान और हर चीज में बरकत नजर आई। दूध में दूध वाले जानवरों में, बूढ़ी ऊँटनी में तथा गधी में। उनके साथ जो भी दूध पिलाने वालियां साथ आयी थी कहने लगी कि हलीमा तुमको बड़ा मुबारक (भाग्यशाली) लड़का मिला है। इसी कारण उनको दाई हलीमा से जलन होने लगी। अल्लाह की तरफ से खैरो बरकत का मामला बराबर रहा यहाँ तक कि बनी सअ़द में आपकी आयु मुबारक के 2 वर्ष पूरे हो गये। और बीबी हलीमा ने आपका दूध छुड़ा दिया। आपकी परवरिश दूसरे बच्चों के मुकाबले भिन्न थी इसी अवधि में बीबी हलीमा आपको लेकर आपकी मां की खिदमत में उपस्थित हुई साथ ही यह इच्छा भी प्रकट की, कि कुछ समय के लिए आप को उनके पास और रहने दिया जाये। हज़रत आमिना ने हज़रत हलीमा को इसकी अनुमति दे दी और वे आपको लेकर फिर लौट आई, वापसी के बाद एक दिन बनीसअ़द (जंगल में बकरियां चराने के दौरान) दो फरिश्ते आपके पास आये और आपका सीनए मुबारक खोला और आपके हृदय से गोश्त के टुकड़े के समान एक काली चीज़ निकाली और फैंक दी, आपके दिल को खूब साफ किया, धोया फिर उसको वापस रखा और सीने को उसी हालत में कर दिया जैसे पहले था।

रसूलुल्लाह ने अपने दूध शरीक भाइयों के साथ बकरियां चरायीं और आपकी परवरिश प्राकृतिक सरल वातावरण तथा सुरक्षित ग्रामीण जीवन एवं बनू सअ़द की प्रसिद्ध स्वच्छ भाषा में हुई। बनू सअ़द की वाक्य सरलता (फसाहत) ख्याति थी। आप हर एक के प्रिय थे आपके (दूध सम्मिलित) भाई आपको बहुत चाहते थे आप भी उनसे मुहब्बत करते थे। कुछ दिनों के बाद आप अपनी माता तथा दादा के पास लौट आये और अल्लाह ने आपकी अच्छी तरबीयत की।

www.abulhasanalinadwi.org

आमिना व अब्दुल मुत्तलिब का देहांत

जब आप 6 वर्ष के हुए तो आमिना का देहांत (इन्तकाल) अबवा (जो मक्का और मदीना के बीच में है) में हो गया। फिर आप अपने दादा के पास रहने लगे, वह उनका बड़ा ख्याल रखते कअ़बे की छांव में अपने बिछौने पर बिठाते और बड़ी शफ़कत फरमाते। जब आपकी आयु 8 वर्ष की हुई तो दादा अब्दुल मुत्तलिब का देहांत हो गया।

अपने चाचा अबूतालिब के साथ

आपने दादा अब्दुल मुत्तलिब के देहांत के बाद अपने चाचा अबूतालिब के साथ रहने लगे यह अब्दुल्लाह के सगे भाई थे (एक मां-बाप से) अब्दुल मुत्तालिब, अबूतालिब को इसके लिए वसीयत भी किया करते थे अतः आप उनके साथ में रहने लगे। अबूतालिब अपने बेटों से भी अधिक आपको चाहते और प्यार करते थे।

आसमानी प्रशिक्षण

अल्लाह की हिफाजत (रक्षा) में आप पले व बढ़े और जवान हुए हर बुराई व जाहलियत की आदतों से दूर रहे आप अपनी कौम में सबसे अधिक मनुष्यत्व वाले आदरणीय, उत्तम स्वभाव वाले उच्चता और लज्जा वाले सबसे अधिक सच्ची बात कहने वाले अत्यधिक अमानतदार और हर प्रकार की बुराई और बेहयाई से दूर रहने वाले थे। आप की कौम आपका आदर करती और आपको अमीन कहती थी। आप रिश्तों के मिलाने वाले थे लोगों का बोझ हलका करने वाला मेहमानों का इक्राम करने वाले थे। अपनी मेहनत की रोज़ी खाते थे। आवश्यकतानुसार गिजा पर किनाअत करते।

www.abulhasanalinadwi.org

जब आप 14.15 वर्ष के हुए उस समय अलफुज्जार की लड़ाई कैस और कुरैश के बीच छिड़ चुकी थी। कुछ दिन आपने उस लड़ाई को बहुत करीब से देखा और आप तीरों को कुरैश तक पहुचाते थे। इस प्रकार आप को जंग का अभ्यास तथा अनुभव हुआ और शहसवारी और सिपाहगरी की जानकारी हुई।

हज़रत खदीजा से आपका विवाह

जब आप 25 वर्ष के हुए तो आपका विवाह हज़रत खदीजा से हुआ जो कुरैश की श्रेष्ठ महिलाओं में से थीं तथा तमाम महिलाओं में बुद्धिमान, स्वभाववान तथा धनवान थीं। उनके पति अबूहाला का देहांत हो गया था, वह बेवा थी उस समय उनकी आयु चालीस वर्ष थी और आप सलल्लाहू अलैहि वसल्लम की आयु 25 वर्ष थी।

हज़रत ख़दीजा ताजिर महिला थीं उनके माल धन से लोग व्यापार किया करते थे। माल उनका मेहनत दूसरों की, लाभ हानि युक्ति नियम से विभाजित होता कुरैश क़ौम ताजिर (व्यापारी) क़ौम थी। जब आप सल्लाहुअलैहि व सल्लम उनका माल लेकर शाम गये तो हज़रत खदीजा को आपकी सच्चाई आपके व्यवहार तथा आपके स्वभाव की जानकारी हुई। शाम के सफर में उनकी जो श्रेष्ठता प्रकट हुई उसकी भी जानकारी उनको हुई। उन्होंने उनसे शादी करने की प्रार्थना की इसके पूर्व बड़े-बड़े सरदारों की मांगों को वह अस्वीकार कर चुकी थीं। हज़रत हमजह ने शादी का जवाबी पैगाम हजरत खदीजा तक पहुंचाया और अबुतालिब ने आपके निकाह का खुत्बा पढ़ा और विवाह हो गया। यह प्रथम खातून थी जिनसे रसूलुल्लाह ने विवाह किया। आपकी समस्त संतान इन्हीं से हुई। सिवाये इब्राहीम के।

www.abulhasanalinadwi.org

काबा का नव निर्माण और एक बड़े झगड़े की समाप्ति

जब आप 35 वर्ष के हुए तो कुरैश ने काबा के नव निर्माण का इरादा किया और उस पर छत डालने का परामर्श हुआ। इसके पूर्व काबा मिट्टी और गारे से जोड़े बिना एक दूसरे पर पत्थर रख दिये गये थे जिसकी ऊंचाई आदमी के कद तक थी। इसको गिराकर ही नव निर्माण संभव हो सकता था।

निर्माण कार्य प्रारम्भ हुआ और दीवारें हजरे असवद तक पहुंची तो हजरे असवद के मामले में ज़बरदस्त मतभेद हुआ। हर कबीला चाहता था कि पत्थर के रखने का गर्व उसको प्राप्त हो। यह मतभेद बढ़कर जंग तक आ पहुँचा जाहिलियत के जमाने में तो जरा-जरा सी बात पर लड़ना झगड़ना साधारण बात थी।

वह सब जंग के लिए तैयार हो गये। बनू अबदुद दार ने खून से भरा एक बड़ा प्याला तैयार किया उन्होंने और बनू अदी ने मरते दम तक लड़ने की शपथ ली। खून के प्याले में हाथ डालकर इस शपथ की पुष्टि की। यह गोया झगड़े और लड़ाई का संकेत था इसी परेशानी और उलझन में कुरैश ने कई दिन गुजारे अन्त में इस बात पर सब सहमत हुए कि मस्जिद के दरवाजे से जो पहले प्रवेश करेगा वही हमारे बीच फैसला करेगा। जिस व्यक्ति ने पहले मस्जिद के दरवाजे से प्रवेश किया वह हुजूर की जात थी। जब उन सबने आपको देखा तो चैन की सांस ली और कहा कि यह मोहम्मद हैं, अमीन हैं, हमें इनका फैसला स्वीकार है। रसूलुल्लाह ने एक कपड़ा मंगवाया और पत्थर को अपने हाथ से उस चादर में रखा और फरमाया कि प्रत्येक कबीला इस चादर के कोनों को पकड़े और उसको उठायें। सबने मिलकर उस स्थान तक उसको उठाया जहाँ उसको रखना है। जब वहाँ तक पहुँच गया तो फिर

www.abulhasanalinadwi.org

आपने उसको अपने हाथों से उठाकर उस स्थान पर रख दिया फिर निर्माण कार्य प्रारम्भ हुआ। इस सूझ बूझ समझदारी व हिकमते अमली से आप ने सबको लड़ाई से बचा लिया। इससे बढ़कर इस मुआमले में और कोई तदबीर न थी।

फुजूल की शपथ

रसूलुल्लाह सल्लाहु अलैहि व सल्लम फुजूल की शपथी संधि में सम्मिलित हुए जो श्रेष्ठ शपथों में सुनी गयी है। उसका कारण यह हुआ कि जुबैद क़बीले से एक शख्स बिक्री का सामान लेकर मक्के आया जिसे आसबिन वाइल मक्का के एक सज्जन ने खरीदा लेकिन उसका हक (कीमत) रोक लिया तो जुबैदी ने मक्के शरीफ लोगों से मदद मांगी तो सब वाइल के मुकाबले में मदद से इन्कार कर दिया तो कुछ मरूवत वाले लोगों ने जरूरत महसूस की और अब्दुल्लाह बिन जुदआन के घर में लोग (जमा) इकट्ठा हुए। उन सबके लिए खाना तैयार किया गया और अल्लाह की कसम खाकर यह अहद लिया (शपथ ली गयी) कि वह सब यकजा होकर जालिम के मुकाबले मजलूम की हर तरह सहायता और मदद उस समय तक करते रहेंगे जब तक उसको उसका हक न मिल जाये। इस हलफ नामे का नाम फुजूल की शपथ रखा। उन्होंने कहा कि यह काम हमने अपने कर्तव्य के अलावा किया है। उसके बाद वह सब आस बिन वाइल के पास आये और जुबेदी का सामान वापस दिलवाया।

आप इस मुआहिदे से बड़े प्रसन्न थे और इस मोआहिदे की पाबन्दी की और नबी बनने के बाद फरमाया कि मैं अब्दुल्लाह बिन जुदआन के घर पर एक ऐसे मोआहिदे में शरीक था जिसमें अगर इस्लाम की दावत के साथ भी मुझे बुलाया जाये तो मैं उसे स्वीकार करूंगा। उन्होंने इस पर शपथ ली थी कि वह हकदार का हक़ दिलाएगें।

www.abulhasanalinadwi.org

जालिम को मजलूम पर जुल्म होने से रोकेंगे। अत्याचार न करने देंगे।

यह बात अल्लाह की हिकमत और अल्लाह की तरफ से आपकी तरबियत की थी। रसुलुल्लाह उम्मी थे इसी हालत में पले और बढ़े। न वह पढ़ते थे न लिखते थे। और दुश्मनों की इलजाम तराशी से दूर रहे। कुर्आन ने कहा कि "ऐ पैगम्बर आप इस किताब से (कुर्आन) से पहले न कोई किताब पढ़े हुए थे और न कोई किताब अपने हाथ से लिख सकते थे ऐसा होता तो बातिल परस्त ज़रूर शुबहे में पड़ते। और कुर्आन ने आपको उम्मी का लकब दिया है, अतः कहा वह जो मुहम्मद रसुलुल्लाह जो नबीए उम्मी हैं, जो लोग उनकी पैरवी करते हैं। जिनके अवसाफ (गुण) को वह अपने यहां तौरात और इनजील में लिखा हुआ पाते हैं।

बिअ्सत के बाद

मनुष्यता की प्रातः तथा उसके सौभाग्य का उदय

रसूलुल्लाह सल्लूल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी उमर (आयु) के 40 वर्ष पूरे फरमाये तो इनसानियत की सुबह नमूंदार हुई और सआदत तुलूअ़ हुई। अल्लाह का यह नियम रहा है कि जब पथभ्रष्टता का अंधेरा छा जाए, दुर्भाग्य का काल लम्बा हो जाए अत्याचार बढ़ जाये, नेकी और बदी का फर्क समाप्त हो जाये, इनसानियत दम तोड़ने लगे तो अल्लाह इस संसार को बचाने हेतु नबी भेजता रहा है।

जो कुछ आपने अपनी बलन्दी से देखा उससे दिल को ऐसी चोट लगी जैसे आप अकेले हों और आपको कोई उभार रहा हो, सो आपको एकान्त प्रिय होने लगा, अतः आप मक्का से इतनी दूर जाने लगे कि मक्का के घर छुप जाते और आप मक्का की घाटियों और वादियों में

www.abulhasanalinadwi.org

घिर जाते और आप जिस पेड़ या पत्थर के पास से गुजरते उससे आवाज़ आती अस्सलमु अलेक या रसूलल्लाह। आप अपने दाये बाये और इर्द गिर्द देखते तो पेड़ों और पत्थरों के सिवा कुछ नजर न आता था।

जो बात सबसे पहले प्रकट हुई वह थी आपके सच्चे स्वप्न जो आप देखते। आप जो स्वप्न देखते वह सुबह के प्रकाश (रौशनी) के समान प्रकट होते।

गारे हिरा में

आप अधिकतर ग़ारे हिरा में एकान्त लेते, कभी-कभी लगातार कई रातें उस ग़ार में आप गुजारते। आप कुछ खाने का प्रबंध फरमा लेते आप इब्राहीमी तरीके पर अल्लाह की इबादत में व्यस्त रहते जो सीधे अल्लाह से जोड़ने वाला प्राकृतिक धर्म था।

आप सल्ललाहु अलैहि वसल्लम की बिअसत

इसी प्रकार आप गारे हिरा में तशरीफ ले जाते रहे, एक बार वह घड़ी आ गई जिसमें आपको नबुव्वत मिलनी थी आपके जन्म के इकतालिसवे वर्ष रमजान की 16 तारीख थी और अगस्त की 6 तारीख वर्ष 610 ई0 था आप गारे हिरा में थे कि फरिश्ता आया और कहा कि पढ़ो (इकरा) आपने उत्तर दिया कि मुझे पढ़ना नहीं आता। आपने फरमाया कि उस फरिश्ते ने मुझे पकड़ा और दबोचा मैंने उसकी तकलीफ (कष्ट) को महसूस किया फिर मुझे छोड़ दिया और कहा कि पढ़ो (इकरा) मैंने उत्तर दिया कि मैं पढ़ा नहीं हूँ उसने फिर मुझे पकड़ा और जोर से दबोचा कि मैने उसका दबाव महसूस किया। फिर मुझे छोड़ दिया और तीसरी बार कहा कि पढ़ो (इकरा) फिर मैंने उत्तर

www.abulhasanalinadwi.org

दिया कि मैं पढ़ा हुआ नहीं हूँ। कहा कि : इक़्रअ बिस्मि रब्बिकल्लजी ख़लक, ख़लक़ल् इन्सान मिन् अलकिन, इक़्रअ् व रब्बुकल अक् रम् अल्लजी अ़ल्लम बिल् क़लमि अल्लमल् इन्सान मालम यअ़लम्- अनुवाद " ऐ मोहम्मद अपने पैदा करने वाले का नाम लेकर पढ़ जिसने संसार को पैदा किया है। जिसने मनुष्य को खून की फुटकी से पैदा किया। पढ़ो तुम्हारा पैदा करने वाला बड़ा करीम है। जिसने कलम के जरिये शिक्षा दी और मनुष्य को वह बताया जिसकी उससे पहले जानकारी और ज्ञान नहीं था।"

(सूरह अलक 1.5)

यह नुबुवव्त का प्रथम दिन था और यह पहली वही कुरान की आयात थीं।

हज़रत ख़दीजा के घर में

इस बात से आप डर गये इसलिए की ऐसी घटना न तो आपके साथ पहले घटी और न आपने ऐसी बात सुनी कि नुबुवव्त और नबियों का वकफा अरब में बड़ा लम्बा हो गया था। इसलिए आपको खतरा महसूस हुआ। आप इस हालत में घर तशरीफ लाये कि आपके पहलू भय से कंपकंपा रहे थे और आप फरमा रहे थे मुझे उठाओ। मैं खतरा महसूस कर रहा हूँ।

हज़रत खदीजा ने इसका कारण पूछा तो आपने सारा किस्सा सुना दिया। हजरत खदीजा समझदार और बुद्धिमान थीं। उन्होंने पहले ही से नुबुव्वत, नबियों और फ़रिश्तों के बारे में सुन रखा था। वह अपने चाचा के लड़के वरक़ाबिन नोफल की जियारत किया करती थीं जो इसाई हो गये थे और जिन्होंने आसमानी किताबों का पूरा अध्य्यन किया था। इन्जील और तौरात वालों के साथ उनका उठना बैठना था। वह प्राकृतिक शुद्ध स्वभाव वालों की भांति मक्का वालों की बुराइयों

www.abulhasanalinadwi.org

को पसन्द नहीं करती थीं।

रसूलुल्लाह (सल्ललाहु अलैहि व सल्लम) के अखलाक व्यवहार (आदत) जो जाहिर और पोशीदा थे उन लोगों से अधिक जानती थी इसलिए कि आपकी पत्नी थीं। उन्होंने आपके अखलाक, आदत, व्यवहार को देखा तो यह यकीन हो गया कि आप अल्लाह के चुने हुए बन्दे हैं। आपकी सीरत पसन्दीदा सीरत है। और जो भी आपके ऐसे अखलाक व सीरत का मालिक होगा उस पर शैतान, जिन या जादू का प्रभाव का डर नहीं और यह बात अल्लाह के कानून उसकी दया, हिकमत, मुहब्बत के विरूद्ध है। उन्होंने बड़े विश्वास के साथ यह कहा कि–

"हरगिज नहीं खुदा की कसम अल्लाह आपको कभी ज़लील और अनादर नहीं करेगा। आप रिश्ते जोड़ते हैं। और दूसरों का बोझ उठाते हैं। मोहताज (दीन दुखी) के काम आते हैं। मेहमान की मेहमानदारी करते हैं। और आपत्ति आने पर दूसरों की सहायता करते हैं।

वरका बिन नौफ़ल के सामने

उन्होंने विचार किया कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अपने चचा ज़ाद भाई वरका बिन नौफल के पास ले जायें जो उस समय के बड़े विद्वान थे।

आप सल्ललाहु अलैहि व सल्लम ने वरका को आप पूरा वाकिआ सुनाया जो आपने देखा था वरक़ा ने उत्तर दिया कि बाखुदा आप इस कौम के नबी हैं। आपके पास वही नामुसे अकबर आया था जो हजरत मूसा के पास आया था और आपकी कौम आपको झुटलायेगी आपको कष्ट देगी। आपको बेघर करेगी और आपसे जंग करेगी।

जब आपने यह बातें सुनी तो आपको आश्चर्य हुआ और कहा

www.abulhasanalinadwi.org

कि क्या यह लोग मुझे निकाल देंगे इस हालत में कि वो मेरी हैसियत जो कुरैश में है जानते हैं। मुझे अमीन की हैसियत से जानते हैं। मुझे सादिक (सच्चा) के लकब से याद करते हैं। आपने हैरत से पूछा क्या वह मुझे निकाल देंगे?

वरका बिन नौफल ने कहा कि हाँ जो बात तुम कह रहे हो और जो तुम लाये हो ऐसी बातें लेकर जो भी आया उसको लोगों ने स्वीकार नहीं किया उससे दुश्मनी की उससे लड़े जिस दिन आपकी कौम आपका विरोध करेगी अगर मैं उस दिन तक जिन्दा रहा तो आपकी भरपूर मदद करूंगा।

एक वक्त तक वह्य नहीं आयी फिर आप पर निरंतर कुरान आना आरम्भ हुआ।

हजरत खदीजा (रजि0) का इस्लाम लाना

हजरत खदीजा (रजि0) औरतों (महिलाओं) में सबसे पहली मुसलमान होने वाली महिला (स्त्री) हैं हजरत खदीजा ने आपकी हर जगह हिमायत की और सहायता की। आपको जो कष्ट पहुँचता था वह उसको कम करने का प्रयत्न करती और वह आपको ढारस् बंधाती।

हजरत अली व जैद बिन हारिसा का इस्लाम लाना

उसके बाद हजरत अली इस्लाम लाये उस समय उनकी आयु 10 वर्ष की थी। इस्लाम लाने से पूर्व वह रसूलुल्लाह के पास पले थे। अकाल में आपने उनको अबू तालिब से मांग लिया था और अपने घराने में शामिल कर लिया था। उसके बाद हजरत ज़ैद बिन हारिसा जो आपके गुलाम थे और आपने उनको मुतबन्ना (मुंहबोला) बेटा बनाया था, मुसलमान हुए। इन लोगों का मुसलमान होना वास्तव में ऐसे लोगों

www.abulhasanalinadwi.org

की शहादत (गवाही) थी जो आपसे सबसे अधिक करीब सबसे अधिक परिचित थे। और जो आपके चरित्र, व्यवहार आपकी सत्यता के वे सबसे अधिक वाकिफ़ और जानकार थे। और घर के लोग जो कुछ वह थे उसको जियादा जानते थे।

हज़रत अबू बकर का इस्लाम और इसके प्रचार में उनकी श्रेष्ठता

हज़रत अबूबकर इस्लाम लाये। वह अपनी बुद्धिमानी, समझदारी, हिम्मत मियाना रवी के कारण कुरेश में प्रसिद्ध थे और उनका एक स्थान था। उन्होंने अपने मुसलमान होने का एलान (प्रचार) किया वह कुरैश में प्रिय व्यक्ति थे उनको नसब (वंशावली) का ज्ञान था। वह प्रभावशाली थे और लोग उनसे प्यार करते थे। वह अच्छे किरदार वाले व्यापारी थे। इन्होंने अपने साथ उठने बैठने वालों में इस्लाम की दावत आरंभ कर दी। हजरत अबू बकर बालिग मर्दों में पहले इस्लाम लाने वाले थे।

कुरैश के शरीफ़ लोगों का मुसलमान होना

उनकी दावत से कुरैश के बहुत से नामी गिरामी (प्रसिद्ध) लोग मुसलमान हुए उन्हीं में हजरत उसमान बिन अफ्फान व जुबैर बिन अव्वाम, अब्दुर रहमान बिन औफ, सअ़द बिन वक्कास, तलहा बिन उबैदुल्लाह यह सब हुजूर की खिदमत में हजरत अबू बकर के साथ आये और मुसलमान हो गये। इसके बाद कुरैश के और लोग इस्लाम लाये जिनमें अबू उबैदा बिन जर्राह, अरक़म बिन अबी अरकम, उसमान बिन मज़ऊन व उबेदा बिन हारिस बिन मुत्तलिब, सईद बिन ज़ैद खब्बाब बिन अरत, अब्दुल्लाह बिन मसूद, अम्मार बिन यासिर, सुहेब उनके अतिरिक्त और दूसरे लोग इसके बाद लोग- औरतें और

www.abulhasanalinadwi.org

मर्द इस्लाम लाने लगे और इस्लाम की चर्चा मक्का में होने लगी।

सफा पर खुलकर हक़(सत्य) का एलान किया

शुरू में हुजूर ने तबलीग़ छुपकर की इसमें तीन वर्ष बीत गये। फिर अल्लाह ने (खुलकर) तबलीग का आदेश दिया और कहा आपको अल्लाह की तरफ से जो हुक्म मिला है उसे लोगों को सुना दीजिये और मुशरेकीन की चिन्ता न करें। और अल्लाह ने फरमाया कि अपने करीबी रिश्तेदारों को डराइये और जो इस्लाम ले आयें और आपकी पैरवी करते हैं उनसे नम्रता से पेश आइये और फरमाया कि कह दो कि मैं तो अब खुले आम डराने वाला हूँ।

आप निकल पड़े और सफ़ा पहाड़ पर चढ़कर आपने यह जोर से पुकारा "या सबाहाह" है यह नारा अरबों के लिए जाना पहचाना था दुश्मन से जब भी कोई खतरा महसूस होता ग़फलत में शहर पर या कबीले पर हमले का तो उस समय "या सबाहाह है।" की आवाज लगाई जाती थी इस आवाज पर कुरैश के सभी लोग जमा हो गये और जो नहीं आ सकते थे उन्होंने अपना नुमाइन्दा भेजा।

आपने सबको सम्बोधित करते हुए फरमाया कि ऐ बनी अब्दुल मुत्तलिब, ऐ बनी फहर, ऐ बनी काब क्या तुम मेरी बात पर विश्वास करोगे यदि मैं यह कहूँ कि इस पहाड़ के पीछे एक फौज खड़ी है और तुम पर हमला करना चाहती है?

अरब सत्यवादी थे, अमल करने वाले थे उन्होंने आप सल्ललाहु अलैहि व सल्लम को ईमानदारी, अमानतदारी, सच्चाई दूसरों की भलाई चाहने वाला पाया था। वह पहाड़ पर खड़े होकर आगे पीछे देख रहे हैं जबकि हम सिर्फ अपने आगे देख रहे हैं। तो उनकी अक्ल ने उनके

www.abulhasanalinadwi.org

इन्साफ ने यही कहलाया कि क्यों नहीं। तब आपने फरमाया कि तुमको आने वाले सख्त अजाब से डराने वाला बन कर आया हूँ।

पस कौम खामोश हो गयी लेकिन अबू लहब ने कहा कि तुम्हारा सत्यानाश हो सारा दिन, क्या केवल यही बात कहने के लिए तुमने हमें बुलाया था?

आपकी कौम का दुश्मनी पर उतर आना और अबू तालिब की आप पर शफक़त व महब्बत

जब रसूलुल्लाहु सल्ललाह अलैहि व सल्लम ने इस्लाम की दावत खुलकर लोगों को दी और हक की बात, अल्लाह के आदेशानुसार लोगों को सुना दी तो अभी कौम आपसे दूर नहीं हुई थी न कोई जवाब दिया था यहाँ तक कि आपने उनके बुतों की आलोचना की। जब आपने उनके बुतों के बारे में कहा तो सब तिलमिला गये और आपकी दुश्मनी और मुखालिफत पर सब एक हो गये।

इस परिस्थिति में आपके चचा अबु तालिब आपके लिए ढ्ाल बन गये। और आपके साथ बड़ी महब्बत व नम्रता का व्यवहार किया और आपका बचाव किया। अब आप इस्लाम की दावत व तबलीग में पूरी तरह जुट गये और कोई चीज उनको इससे रोक न सकी। अबूतालिब की शफकतें आप पर जारी रही और वह आपका बचाव करते रहे। जब आपकी दावत का काम जियादा दिनों तक चलता रहा तो कुरैश के लोग अबूतालिब के पास आये और कहने लगे कि ऐ अबूतालिब तुम्हारे भतीजे ने हमारे उपास्यों को गालियां दी है। और हमारे धर्म को बुरा कहा है और उसमें कीड़े निकालता है यह हमारे बाप दादा को अधर्मी (गुमराह) तथा अक्लमन्दों को बेवकूफ कहता है। पानी अब सर से

www.abulhasanalinadwi.org

ऊँचा हो गया है। (सहन) बर्दाश्त की भी एक सीमा होती है। आप इसको समझा दें या हमारे और उनके बीच से आप अलग हो जाएं। आप तो हमारे दीन व अकीदे पर हैं। अबूतालिब ने बड़ी सूझ बूझ और नम्रता से उनसे बात की और उचित उत्तर दिया। वह सब वहाँ से वापस लौट गये।

रसूलुल्लाह सल्ललाहु अलैहि व सल्लम अबू तालिब के सामने

अब कुरैश में रसूलुल्लाह की चर्चा अधिक होने लगी और हर व्यक्ति ने एक दूसरे को आप सल्ललाहु अलैहि व सल्लम की मुखालफत पर उभारा और विरोध का वातावरण तैयार किया और दूसरी बार कुरैश के लोग अबूतालिब के पास आये और कहा ऐ अबूतालिब आप बुजुर्ग हैं, शरीफ हैं और आपका हमारे हृदय में बड़ा स्थान और आदर है। हम आपके पास बड़ी आशा लेकर आये थे कि आप अपने भतीजे को उससे रोकें जो वह कर रहा है मगर आपने कुछ न किया हमने बहुत बर्दाश्त किया अब हम बर्दाश्त (सहन) नहीं करेंगे। अब हम अपने बाप दादा की अवहेलना (जिल्लत) और अधिक सहन नहीं करेंगे। अब हम अपने देवताओं को बुरा भला कहना नहीं सुनेंगे। अतः या तो आप उनको रोकें या फिर हम उनसे लड़ेंगे आप उनसे दूर रहें यहां तक कि एक फरीक़ हलाक हो जाए। अबूतालिब पर अपनी कौम की जुदाई और उनकी दुश्मनी की बात भारी हुई और अपने भतीजे को असुरक्षित छोड़ना नहीं चाहते थे। वह नहीं चाहते थे कि वह अपने भतीजे को कौम के हवाले कर दें इसलिए उन्होंने हुजूर को बुलाया और उनसे कहा कि–

ऐ मेरे भतीजे तुम्हारी कौम के लोग मेरे पास आये थे और मुझसे ऐसा कहा तुम मुझ पर रहम खाओ और अपने पर रहम खाओ

www.abulhasanalinadwi.org

और इतना बोझ मुझपर न लादो कि मैं उसको सहन न कर सकूं।

आपके हृदय में यह ख्याल आया कि चाचा शायद मेरे मामले में चिंतित हैं। और शायद भविष्य में सहायता अब न कर सकें तो आपने उनसे फरमाया कि,

ऐ चचा अल्लाह की क़सम यह सब मुझे इस कार्य से रोकने के लिए यदि वह सूरज मेरे दाहिने हाथ में तथा चाँद बायें हाथ में रखदें तो भी मैं इस कार्य को नहीं छोड़ सकता। या तो अल्लाह इस कार्य में मुझे सफलता दे या मुझे हलाक कर दे। इस बात को कहने के बाद आपकी आखों में आसूँ आ गये और आप रो दिये। यह कहने के पश्चात आप वापस होने लगे। अबूतालिब ने आपको बुलाया और कहा करीब आओ मेरे भतीजे। आप उनके करीब आये, अबूतालिब ने आपसे कहा कि जाओ और जो तुम्हारा जी जाहे कहो जैसे चाहो दावत का कार्य करो मेरी तरफ से कोई आपत्ति नहीं है। अपने जीतेजी तुम्हें किसी को नहीं सौपूँगा।

कुरैश का मुसलमानों पर अत्याचार

जब आपकी दावत का कार्य जोर शोर से बढ़ने लगा और कुरैश अबूतालिब से मायूस हो गये तो उन्होंने हर उस व्यक्ति पर जुल्म करना आरम्भ कर दिया जो मुसलमान हो गया। उनके कबीले में से इस जुल्म को रोकने वाला कोई नहीं था। पस हर कबीला अपने बीच उस व्यक्ति पर टूट पड़ा जो इस्लाम लाया। वह मुसलमानों को कैद में डालते थे, उनको मारते पीटते थे उनको भूखा प्यासा रखते और मक्का की सख्त गर्मी की चिलचिलाती रेत पर उनको तकलीफ देते थे।

हज़रत बिलाल हबशी मुसलमान हुए तो उनके मालिक उमैय्या बिन ख़लफ उनको ठीक दोपहर में तपतपाती रेत पर पीठ के बल

www.abulhasanalinadwi.org

उनको लिटाते और उनके सीने पर एक बड़ा सा पत्थर रखते और कहते कि तुम इसी शर्त पर मुक्ति पा सकते हो कि तुम मुहम्मद का दीन व धर्म छोड़ दो और लात उज्जा की पूजा करने लगो। वह (हज़रत बिलाल) इस कष्ट को सहन करते और कहते कि अल्लाह एक है। एक दिन हज़रत अबूबकर का गुजर उधर से हुआ तो उन्होंने एक मजबूत काँला गुलाम उमैय्या को देकर हजरत बिलाल को छुड़ा कर आजाद कर दिया।

बनी मखजूम अम्मार बिन यासिर को उनके माता पिता के मुसलमान होने पर उनको दोपहर की गर्मी में बाहर लाते और उनको तरह तरह का कष्ट देते, गरम रेत पर उनको लिटाते। जब आप का उधर से गुजर होता तो आप कष्ट सहन करने को फरमाते और जन्नत की बशारत देते। उनकी माता को उन्होंने इसलिए कत्ल कर दिया कि वह इस्लाम छोड़ने को तैयार नहीं थीं।

मुसअब बिन उमैर मक्का के शौकीन मिज़ाज खूबसूरत जवान थे उनकी माता धनवान थीं। वह अपने बेटे को अच्छा से अच्छा पहनाती और खिलाती थीं। जब मुसअब को रसूलुल्लाह की दावत व तबलीग की सूचना मिली कि आप अरकम बिन अबी अरकम के घर में इस्लाम की दावत देते हैं तो आप वहां पहुंचे और मुसलमान हो गये और रसूलुल्लाह की सत्यता को स्वीकार किया और चले गये परन्तु अपने मुसलमान होने को अपनी माता और अपनी कौम के डर से छुपाया। वह रसूलुल्लाह के पास छुप कर आते एक बार उसमान बिन तलहा ने मुसअब को नमाज पढ़ते देख लिया तो उनकी माँ और कौम को उसकी सूचना दी। उन्होंने उनको कैद में डाल दिया हबशे की हिजरत के समय तक वह कैद में रहे फिर मुसलमानों के साथ हबशा हिजरत कर गये और मुसलमानों के साथ ही वह हबशा से लौटे तो उनमें इस्लाम के प्रति और शिद्दत आ गयी। इस हालत को देखकर उनकी माता ने

www.abulhasanalinadwi.org

उनको बुरा भला कहना छोड़ दिया।

कुछ मुसलमान मुश्रेकीन की रक्षा में आ गये यह मुशरेक़ीन कुरैश के इज्जतदार और सरदार थे। वह उनकी पूरी रक्षा करते थे उसमान बिन मजऊन, वलीद बिन मुगीरा की रक्षा में आये लेकिन उसमान की गैरत व हमियत ने यह सहन नहीं किया। इसलिए उन्होंने वलीद की रक्षा में रहने से इनकार कर दिया यह कहकर कि अल्लाह को छोड़कर मैं किसी अन्य की रक्षा में जाना और रहना पसंद नहीं करता। किसी बात पर, उनकी एक मुशरिक से तू तू -मैं मैं हो गयी उस पर उस मुशरिक ने ऐसे जबरदस्त तमाचा (थप्पड़) मारा कि उनकी एक आँख जाती रही। मुगीरा बिन वलीद खड़ा यह दृश्य (मंजर) देख रहा था। वह बोला कि ऐ मेरे भतीजे तुम्हारी आँख सुरक्षित थी जब तक तुम एक मजबूत सुरक्षा में थे। इबने मज़ऊन ने उत्तर दिया कि अल्लाह की कसम मेरी अच्छी आँख की यह इच्छा है कि उसके साथ भी वही घटना घटे जो पहली आँख को हादसा पेश आया। मैं उसकी पनाह व रक्षा में हूँ जो बहुत अधिक बलवान और इज्जत वाला (आदरणीय) है।

हुजूर सल्ललाहु व सल्लम से कुरैश की मुखालफत और आपको तरह-तरह से सताना

जब नवयुवकों को इस्लाम से रोकने के समस्त प्रयास असफल हो गये और रसूलुल्लाह में भी न कोई नरमी आई, न उनको मुहब्बत हुई तो कुरैश पर यह सख्त गुजरा वह क्रोध में आ गये और कुछ बेवकूफों को आपके पीछे लगा दिया। उन्होंने आपको झुठलाया, आपको कष्ट दिये, आपको शायर तथा जादूगर कहा, काहिल और मजनून कहा। आप पर नित नये ढ़ंग से कष्ट देते और इस कार्य में हर तरीका इख्तियार किया।

www.abulhasanalinadwi.org

एक दिन इज्जतदार (आदर वाले) लोग हिज्र में हतीम के अन्दर इकट्ठा थे कि अचानक रसूलुल्लाह वहां पहुँच गये और तवाफ करते हुए उनके करीब से गुजरे। उन्होंने आप पर फिक़रा कसा और तीन बार ऐसा किया। तीसरी बार आप रूक गये और फरमाया कि ऐ कुरैश के लोगो सुन लो जिसके इख्तियार में मेरी जान है उसकी कसम मैं तुम्हारे लिए विनाश लेकर आया हूँ। पस कौम को बिल्कुल खामोश कर दिया बिल्कुल चुप बेहरकत हो गये जैसे उनमें कोई जान नहीं है। इसके बाद वह आपके साथ नम्रता से बात करने लगे।

दूसरे दिन वह सब उसी स्थान पर जमा हुए आपका फिर उधर से गुजर हुआ और जब उनके पास आये तो वह सब आप पर टूट पड़े और आपको घेर लिया। उसमें से एक व्यक्ति ने आपकी चादर घसीट ली हज़रत अबू बकर खड़े हुए और रोते हुए कहा कि तुम ऐसे आदमी को मार डालना चाहते हो जो यह कहता है कि मेरा मालिक मेरा परमेश्वर अल्लाह है। इस बात पर उन्होंने आपको छोड़ दिया लेकिन हज़रत अबू बकर की दाढ़ी पकड़कर खींचा और उनका सर खोल दिया।

एक दिन आप सल्ललाह अलैहि व सल्लम निकले रास्ते में आपको जो भी मिला उसने आपको झुठलाया और कष्ट दिये चाहे वह आजाद मनुष्य रहा हो या गुलाम। आपको जो कष्ट व तकलीफ पहुँचाई उससे दुखी होकर घर लौट गये और चादर ओढ़ कर लेट गये। इसी अवसर (मौके) पर अल्लाह ने यह सूरत उतारी या अय्युहल मुद्दस्सिर कुम फ अन्ज़िर।

अबू बकर के साथ कुरैश ने क्या किया

एक दिन हज़रत अबू बक्र इस्लाम के प्रचार हेतु मजमे (भीड़) में खड़े हुए तो वह सब गुस्से व क्रोध में आकर आप पर टूट पड़े और

www.abulhasanalinadwi.org

उनको बहुत मारा, उक़बा बिन रबीआ ने तो अपने जूते जिसमें नाल लगी थी उतार कर उससे इतना मारा कि नाक और चेहरा लहू लहा हो गया पहचानना मुश्किल हो गया।

बनू तमीम के लोग हजरत अबू बक्र को इस दशा में उठाकर ल गये कि उनके मर जाने में उनको कोई संदेह नहीं था। फिर जब हज़र अबू बक्र को होश आया तो सबसे पहले हुजूर की कुशलता पूछी। इस पर लोगों ने अबू बक्र को बुरा भला भी कहा (और कहा कि कुशलत जानना चाहते हो) उसी समय उम्मे जमील जो इस्लाम ला चुकी थी हज़रत अबू बकर के करीब आयी तो उनसे हज़रत अबू बक्र ने हुजू की कुशलता जानी तो उन्होंने कहा तुम्हारी माँ सुन रही हैं तो आप कहा उनकी परवाह न करो तो उन्होंने बताया कि आप सकुशल औ सुरक्षित हैं। हजरत अबू बकर ने कहा कि मैंने नज़र मानी है। जब तक मैं हुजूर की सेवा में उपस्थित न हो जाऊंगा कुछ खाऊंगा पियुँगा नहीं वे दोनों वही रूक गयीं। जब सन्नाटा हुआ लोग चले गये तो हजरत अबु बक्र को सहारा देकर (पकड़ा कर) आपकी सेवा में लाई हुजूर प हजरत अबुबक्र की हालत देखकर बड़ा असर (प्रभाव) पड़ा। आपने उनकी माता को बहुत दुआऐं दीं तथा आशीर्वाद दिया। और उनके मुसलमान होने के लिए उभारा और वह मुसलमान हो गयी।

रसूलुल्लाह के मामले में कुरैश की चिन्ता

रसूलुल्लाह के मामले में कुरैश बड़े चिन्तित थे कि वे क्या उपाय करें जिससे आप का चरित्र, आपकी अच्छाइयां, आपका व्यवहार जो लोगों को प्रभावित कर रहा था। लोगों के सामने ऐसा पेश करें कि लोग आपके प्रति बुरे ख्यालात खराब भावना उत्पन्न कर सकें और वह लोग जो दूर से आये थे आपसे प्रभावित न हो सकें और आपसे दूर रहें भेट न कर सकें। यह सब वलीद बिन मुगीरा जो उन सब से अधिक बुजुर्ग

www.abulhasanalinadwi.org

थे के पास इकट्ठा हुए। वह जमाना हज का था। वलीद ने उनसे कहा कि ऐ- कुरैश के लोगो हज का जमाना आ गया है। इस मौसम में अरब के वफ़ुद (काफ़िले) आने लगेंगे। उनके कान में हुजूर की बात पड़ चुकी है। अब सब एक राय होकर निर्णय लो कि आपसी मतभेद समाप्त हो कोई एक दूसरे को झुठलायेगा नहीं। इस पर बड़ी देर तक बात चीत हुई लेकिन कोई इस बात पर सहमत न हो सका। वलीद किसी बात पर संतुष्ट नहीं हुआ और उनकी हर राय और परामर्श को अस्वीकार कर दिया। तब उन सबने वलीद से पूछा कि आखिर आप क्या चाहते हैं। और आप की क्या राय है। वलीद ने कहा कि मेरी तो राय और परामर्श यह है कि सब मिलकर एक जबान होकर उसको जादूगर कहें कि यह अपना जादू दिखाने आया है। यह अपने जादू से सब परिवार में फूट डाल देगा, बाप को बेटे से, माँ को अपनी संतान से, भाई बहन, पति पत्नी में फूट डालकर सबको अलग-अलग कर देगा। इस बात को लेकर सब वहाँ से चले गये। जब हज का मौसम आया तो यह सब भिन्न मार्गो पर बैठ गये, जो गुजरता उसको डराते, धमकाते और वह बातें कहते जिन पर सब का इत्तिफाक हुआ था।

कुरैश की बेरहमी आपको कष्ट देने में

नित नये ढ़ंग से कुरैश ने आपको कष्ट और तकलीफ देना आरम्भ किया कष्ट देने में रिश्ते नाते का कोई लिहाज नहीं था और मनुष्यता को उन्होंने परे डाल दिया था।

एक दिन हुजूर मस्जिद में सजदे में थे आपको कुरैश के लोग घेरे हुए थे कि उकबा बिन अबी मुईत एक ऊंट की ओझड़ी उठा लाया और उसको आपकी पीठ पर रख दिया। उसी हालत में आप सजदे में पड़े रहे। आपकी सुपुत्री हजरत फ़ातमा आई और उस ओझड़ी को आपकी पीठ से फेंका और जिसने यह कार्य किया उसको बद-दुआ दी।

www.abulhasanalinadwi.org

एक मरतबा आप काबा में नमाज पढ़ रहे थे कि उकबा बिन मुईत आया और अपना कपड़ा आप की गरदन में डालकर खीचने लगा जिससे आपको कष्ट व तकलीफ होने लगी। हज़रत अबू बक्र ने आपको इससे छुड़ाया और उनसे कहा कि क्या तुम एक ऐसे आदमी को मार डालना चाहते हो जो केवल यह कहता है कि मेरा स्वामी अल्लाह है।

हजरत हमजा बिन अब्दुल मुत्तलिब का इस्लाम लाना

एक दिन अबु जहल सफ़ा के करीब रसूलुल्लाह के पास से गुजरा तो आपको गाली दी और कष्ट भी दिया। आपने उससे कोई बात नहीं की तो वह चला गया हज़रत हमजा तीर कमान लटकाये शिकार से लौट रहे थे उस समय हजरत हमजा कुरैश के बाइज्जत निडर और बलवान युवक थे।

आपको अब्दुल्लाह बिन जदआन की बान्दी ने वह सब कुछ बता दिया जो आप पर बीती। यह सुनकर हजरत हमजा को गुस्सा आ गया और मस्जिद में दाखिल हुए तो अबू जहल को अपने साथियों के साथ बैठे देखा। उसके करीब गये और बिल्कुल उसके सर पर पहुँच गये। और अपनी कमान उसके सर पर मार दी और उसको जख्मी कर दिया और उससे कहा कि तुम्हारी यह हिम्मत कि तुमने उसको गालियां दीं जिसके दीन पर मैं हूँ। जो वह कहते है वह मैं कहता हूँ। अबू जहल चुप रहा और हमजा मुसलमान हो गये। कुरैश में उनका बड़ा आदर और उनमें उनका एक स्थान था। अतः कुरैश को बड़ी तक्लीफ पहुँची।

उतबा और रसूलुल्लाह के बीच बातचीत

जब कुरैश ने देखा कि मुसलमानों की संख्या दिन प्रति दिन

www.abulhasanalinadwi.org

बढ़ती ही जा रही है तो उतबा ने कुरैश से इस बात की आज्ञा चाही कि वह रसूलुल्लाह से बात-चीत करेगा और उनके सामने कुछ बातें कुछ सुझाव प्रस्तुत करेगा। सम्भव है कि यह (सुझाव) तजवीज दोनों को स्वीकार हो। और रसूलुल्लाह (सल्ललाहु अलैहि व सल्लम) तबलीग का कार्य और इस्लाम का प्रचार करना छोड़ दें। कुरैश ने उतबा को बात-चीत की आज्ञा दे दी और अपना नुमाइन्दा (प्रतिनिधि) उनको मनोनीत कर दिया। उतबा आपके पास आया और बैठ गया और कहा कि ऐ मेरे भतीजे तुम भली प्रकार जानते हो कि तुम्हारी हैसियत क्या है। तुमने बेकार का झगड़ा अपनी क़ौम में खड़ा कर रखा है। हम सब एक थे। तुमने सबको अलग-अलग कर दिया। तुमने हमें जाहिल और मूर्ख कहा, हमारे बुतों को बुरा भला कहा, हमारे देवताओं में कीड़े निकाले, हमारे पूर्वज (बाप दादा) जो करते आये उसको तुमने अस्वीकार किया। मैं तुम्हारे सामने कुछ सुझाव रखता हूँ। सम्भवतः तुम उसको स्वीकार कर लोगे। आपने फरमाया अच्छा ऐ अबू वलीद कहो जो तुम्हें कहना है। मैं सुन रहा हूँ। अबू वलीद ने कहा कि ऐ मेरे भतीजे जो दीन व धर्म तुम लेकर आये हो यदि उससे तुम दौलत व माल चाहते हो तो हम तुम्हारे सामने दौलत के ढेर लगा देंगे तुम पूरे अरब में सबसे अधिक धनी पूंजीपति कहलाओगे। यदि तुम इससे इज्जत व आदर चाहते हो तो हम तुम्हें अपना नेता व सरदार बनाने को तैयार हैं। और यदि तुम सम्राट (राजा) बनना चाहते हो तो उसके लिए भी हम तैयार हैं। कि हम तुम्हें अपना राजा बना लें। यदि तुम यह बातें जादू के असर से कर रहे हो तो हम हर प्रकार का इलाज करने को तैयार हैं। उस पर जो भी व्यय आयेगा उसको हम सहन करेंगे जब तक तुम स्वस्थ न हो जाओ। जब उतबा ने अपनी बात पूरी कर ली तो आपने फरमाया कि तुमको जो कहना था कह चुके। अब तुम मेरी बात सुनो उतबा ने कहा कि कहो।

www.abulhasanalinadwi.org

आपने सूरह फुस्सिल्त आयते सजदह तक पढ़ी। उतबा ने अब यह कलाम सुना तो वह खामोश हो गया और मौनधारण किया और ध्यान पूर्वक उन आयतों को सुनता रहा और अपने दोनों हाथों को अपनी पुश्त पर टेक लिया। जब आप सजदा पर पहुँचे और आपने सजदा किया और जब आपने वलीद से फरमाया कि वलीद तुम्हें जो कुछ सुनना था सुन चुके। अब तुम जैसा समझो और जो चाहो करो। उतबा जब अपने साथियों के बीच खड़ा हुआ तो वह सब उसकी सूरत देखने लगे और कहने लगे अबू वलीद का चेहरा बदला हुआ है। जैसे वह गया था वैसा लौटा नहीं है। जब अबू वलीद बैठा तो लोगों ने उससे पूछा कि क्या सोच रहे हो। वह बोला सोचना यह है कि जैसा कलाम मैंने आज सुना है। अल्लाह की कसम (ईश्वर की सौगंध) खाकर कहता हूँ कि वह कलाम न तो जादू है, न तो कविता है। ऐ कुरैश के लोग मेरी बात मान लो। उसको उसके हाल पर छोड़ दो। इस पर कुरैश ने अबू वलीद को बुरा भला कहा और कहने लगे कि जान पड़ता है (मालूम होता है) तुम पर भी उसका जादू चल गया। वलीद ने कहा कि जो भी समझो। यह मेरी राय है। आगे तुम्हारी इच्छा जो चाहो करो।

मुसलमानों की हबशा हिजरत

जब आपने देखा कि आपके साथियों को अधिक कष्ट सहन करना पड़ रहा है। और परेशानियां अधिक उठानी पड़ रही हैं और आप उनकी रक्षा का प्रबंध भली प्रकार नहीं कर पा रहे हैं। जैसा होना चाहिए तो आपने उन सबसे फरमाया कि यदि तुम लोग हबशा की ओर चले जाओ तो यह उचित होगा। वहाँ का सम्राट (राजा) किसी पर अत्याचार (जुल्म) नहीं करता। वह धरती भी अच्छी है। वहाँ उस समय तक रहो जब तक अल्लाह कोई सूरत (उपाय) न निकाल दे। मुसलमानों की

www.abulhasanalinadwi.org

एक जमात (टोली) ने हबशा की हिजरत की। यह इस्लाम व मुसलमानों की पहली हिजरत थी। हिजरत करने वालों की तादाद (संख्या) 10 थी इन्होंने अपना अमीर (नेता) उसमान बिन मजऊन को बनाया। इसके बाद हजरत जाफर ने हिजरत की फिर वहाँ मुसलमान एक एक करके पहुँचे। वहाँ सब जमा हुए। इनमें से कुछ तो परिवार सहित गये और कुछ तनहा। हिजरत करने वालों की तादाद (संख्या) 83 थी।

कुरैश का पीछा करना

कुरैश ने जब यह देखा कि मुसलमान हबशा पहुँच गये और शान्तिपूर्वक अपने दिन बिता रहे हैं तो उन्होंने अब्दुल्लाह बिन रबीआ और अम्र बिन आस बिन वाएल को हबशा भेजा। उनके साथ वहाँ के बादशाह नजाशी, सरदारों और सेनापति को बहुत से उपहार उनको देने के लिए साथ किये ताकि वह कुरैश के प्रति अपनी सहानुभूति दिखाए। बादशाह के दरबार में दोनों पक्षों के नुमाइन्दों (प्रतिनिधियों) ने निम्न प्रकार अपनी बात रखी। उन्होंने कहा कि आपके देश मे हमारे यहाँ के कुछ बेवकूफ व पागल युवकों ने शरण ली है। उन लड़कों ने अपना दीन धर्म छोड़ दिया है। और उन्होंने आप का दीन भी स्वीकार नहीं किया बल्कि उन्होंने अपना एक अलग दीन धर्म बना लिया है। जिसे न आप जानते हैं और न हम। हमारे सम्मानित लोगों ने हमें आपके पास भेजा है कि आप उन लड़कों को हमें वापस कर दें यह बात उनके लिए उचित होगी। जो सरदार उनके करीब थे वह बोले कि ऐ बादशाह! यह बात सत्य कह रहे हैं। इनकी बात स्वीकार करें। नज्जाशी को इस बात पर क्रोध (गुस्सा) आया। उसने उनकी बात अस्वीकार की और इसको उचित नहीं समझा कि कोई आदमी उसकी शरण में आ जाये और उसकी किसी प्रकार की सहायता न की जाये। उसने मुसलमानों को बुलाया अपने आदमियों तथा मुसलमानों को सम्बोधित करते हुए

www.abulhasanalinadwi.org

मुसलमानों से कहा कि यह कौन सा धर्म है? जिसके लिए तुमने अपनी कौम को छोड़ दिया। उनको छोड़ने के बाद न तो तुमने मेरा दीन स्वीकार किया और न कोई अन्य प्रसिद्ध दीन को तुमने स्वीकार किया।

जाहिलीयत का नक़्शा और इस्लाम का परिचय

आपके चाचाजाद भाई जाफ़र बिन अबू तालिब खड़े हुए और कहा कि:-

ऐ बादशाह - हम एक जाहिलीयत वाली कौम थे बुतों की पूजा करते थे, मुरदार खाते थे, हर तरह के पाप में व्यस्त थे। हममें जो बलवान होता वह निर्बल (कमजोर) पर अत्याचार करता था। हम रिश्ते नाते को भूल गये थे। हम इसी हालत में अपना जीवन बिता रहे थे कि अल्लाह ने हमही में से एक रसूल भेजा हम उसके खानदान, परिवार, जाति, नसब उसकी सत्यवादिता, उसकी अमानतदारी, उसका व्यवहार और उसके चरित्र से परिचित थे। उन्होंने हमें यह दावत, (निमंत्रण) दी कि हम केवल एक अल्लाह (ईश्वर) कि पूजा करें। हमारे माता पिता जिन देवताओं की पूजा करते थे उसको बिल्कुल छोड़ देने को कहा। उन्होंने हमें सत्य बोलने, अमानत अदा करने, रिश्तेदारों का ख्याल रखने, पड़ोसी के साथ अच्छा व्यवहार करने, बुरी बातों से बचने और अच्छे कर्म करने की शिक्षा दी। चरित्रहीन कार्य, झूठ, कपट, धोखा, छल, कपट, यतीम के माल खाने से, पवित्र स्त्रियों पर लांछन (इलजाम) लगाने से रोका और मना किया। उन्होंने हमको आदेश दिये कि हम केवल एक अल्लाह (ईश्वर) की पूजा करें और उसकी पूजा में किसी को साझेदार न बनायें। उन्होंने हमें नमाज पढ़ने, रोजा रखने तथा ज़कात देने का निर्देश दिया। हमने उसको सत्य माना और उस पर ईमान लाये। हम एक अल्लाह की पूजा करते हैं। उसके साथ किसी को

www.abulhasanalinadwi.org

शरीक नहीं करते। जिन कार्यो के करने से उन्होंने रोका और मना किया है। हम उसको नहीं करते अर्थात उनके बताये हराम को हराम जाना और जिन कार्यो के करने के लिए उन्होंने आदेश दिये हैं उसको अनिवार्य रूप से करते हैं। हमारे लोग हमसे केवल इस कारण नाराज (असंतुष्ट) हैं कि हमने उनका धर्म स्वीकार नहीं किया। यह चाहते हैं कि हम एक अल्लाह की पूजा छोड़कर इनके देवताओं की पूजा करने लगें। जिन पापों को हमने करना छोड़ दिया यह चाहते हैं कि वही पाप हम फिर करने लगें। जब इन्होंने हमको अधिक कष्ट दिये, हमारा जीना दूभर कर दिया तो आपके देश में शरण हेतु आ गये। ऐ बादशाह हम आपसे आशा करते हैं कि हंम पर किसी प्रकार का अत्याचार न किया जायेगा।

नज्जाशी ने पूरा व्याख्यान (तकरीर) शान्तिपूर्वक सुना और यह सवाल (प्रश्न) किया कि तुम्हारे पास उदाहरण (नमूने) के लिए कोई चीज़ है। जो तुम्हारे नबी के पास अल्लाह की तरफ से आई हो? हज़रत जाफ़र ने कहा कि हाँ क्यों नहीं। नज्जाशी ने कहा कि अच्छा पढ़कर सुनाओ। हजरत जाफर ने सुरह मरयम की शुरू की आयतें पढ़ी, नज्जाशी उनको सुनकर रो दिया। आसुओं से उसकी दाढ़ी भीग गई। उसके दरबार के पदाधिकारियों पर भी उसका अधिक प्रभाव पड़ा, वह लोग भी रो दिये। यहां तक कि उनकी पवित्र पुस्तकें आंसुओं से भीग गई।

कुरैश के वफ़्द (प्रतिनिधि मण्डल) की असफलता

नज्जाशी ने कहा कि यह और हजरत मसीह जो शिक्षा लेकर आये वह एक ही है। फिर वह कुरैश के आने वालों से सम्बोधित हुआ और कहा कि अल्लाह की कसम मैं इन लोगों को तुम्हें नहीं दे सकता।

www.abulhasanalinadwi.org

इस मौके पर (अवसर) पर हज़रत अम्र बिन आस ने एक महत्वपूर्ण बात कही कि ऐ बादशाह यह तो हज़रत ईसा अ0 के बारे में पता नहीं क्या क्या कहते हैं? नज्जाशी ने हज़रत जाफ़र से पूछा कि तुम हज़रत ईसा अ0 के बारे में क्या कहते हो। हज़रत जाफ़र ने कहा कि हम उनके बारे में वही कहते हैं जिसकी हमारे नबी ने शिक्षा दी कि वह अल्लाह के बन्दे हैं, उसके दूत (पैगम्बर) हैं। उस की रूह और कलमा हैं। जो उसने कुमारी मरयम पर डाला यह सुनकर नज्जाशी ने अपना हाथ जमीन पर मारा और एक तिनका उठाकर कहा कि अल्लाह की कसम जो तुमने ईसा के बारे में बताया वह इस तिनके से अधिक नहीं है। उसने मुसलमानों को आदर दिया, सम्मान दिया और उनकी रक्षा का वादा (प्रण) किया। कुरैश के वे दोनों आने वाले अपमानित (जलील) हो कर निकले। मुसलमानों ने अच्छे पड़ोस में आदर व सम्मान पाया।

उमर बिन खत्ताब का मुसलमान होना

हजरत उमर का इस्लाम लाना मुसलमानों के लिए (ताईदे ग़ैबी) ईश्वर का समर्थन था हज़रत उमर बिन खत्ताब कुरैश कबीले के सम्मानित व्यक्ति थे। उनका रोब, दब दबा सब पर था वह बलवान थे, बहादुर थे उनकी शक्ति और बहादुरी का सब लोहा मानते थे। हुजूर की इच्छा (ख्वाहिश) थी कि यदि हज़रत उमर मुसलमान हो जायें तो इनसे इस्लाम को बल मिलेगा। इनके मुसलमान होने के लिए हुजूर ने दुआ फरमाई। उनके मुसलमान होने का वाकिआ (घटना) इस प्रकार है। उनकी बहन फ़ातिमा मुसलमान हो गयी थीं। उनके बाद उनके पति भी इस्लाम ले आये। हज़रत उमर की सख्ती और उनके डर (भय) से इन दोनों ने अपना मुसलमान होना इनसे छिपाये रखा। खब्बाब बिन अरत फातिमी को कुर्आन पढ़ाते थे। एक दिन हज़रत उमर तलवार लटकाये रसूलुल्लाह और उनके साथियों की तलाश (खोज) में निकले। उनको

www.abulhasanalinadwi.org

यह सूचना मिल गयी थी कि रसूलुल्लाह अपने साथियों सहित सफ़ा (पहाड़) के निकट (करीब) किसी घर में जमा हैं। रास्ते में उनकी मुलाकात नुऐम बिन अब्दुल्लाह जो उन्ही के कबीले बनी अदी से उनका सम्पर्क था और वह मुसलमान हो गये थे। उन्होंने पूछा कि ऐ उमर किधर जा रहे हो वे बोले (नऊजोबिल्ला) मुहम्मद को (कत्ल) करने जा रहा हूँ जो बेदीन (अधर्म) है। जिसने कुरैश की एकता को भंग किया, कुरैश को अशिक्षित कहा उसने हमारे देवताओं को ग़ालियां दीं। आज हिसाब समाप्त हो जायेगा। नुऐम ने उनसे कहा कि तुम कहाँ हो। जाओ पहले अपने घर की खबर लो। पहले जाकर उनको ठीक करो। हज़रत उमर ने पूछा कि मेरे घर में कौन? उन्होंने कहा कि तुम्हारे बहनोई और चचाजाद भाई सईद बिन ज़ैद और तुम्हारी बहन फ़ातिमा यह सब मुसलमान हो चुके हैं। इन सबने मुहम्मद के दीन को स्वीकार कर लिया है। जाओ पहले इनको देखो। हज़रत उमर उल्टे पाँव अपनी बहन व बहनोई के घर की ओर चल दिये। उस समय उनके पास ख़ब्बाब बिन अरत थे। उनके पास एक पुस्तक थी जिसमें सूरे ताहा लिखी थी। वह उन दोनों को पढ़ा रहे थे। जब उनको हज़रत उमर की सूचना मिली तो ख़ब्बाब छिप गये। फातिमा ने उस पुस्तक को रान के नीचे छिपा लिया। लेकिन हज़रत उमर ने उनका पढ़ना सुन लिया था। जब वे घर में आये (प्रवेश किया) तो पूछा कि तुम लोग क्या खसुर फुसर कर रहे थे। उन्होंने पूछा कि आपने क्या सुना। उमर ने कहा कि मुझे यह सूचना मिली है कि तुमने मुहम्मद का दीन स्वीकार कर लिया है। फिर उमर अपने बहनोई को मारने दौड़े। उनकी बहन फ़ातिमा अपने पति को बचाने खड़ी हो गयीं। हज़रत उमर ने उनको मारा और जख़्मी कर दिया। जब वह मार चुके तो उनकी बहन ने कहा कि हां यह सत्य है कि हम मुसलमान हो गये हैं। अब तुम्हें जो करना हो करो। हज़रत उमर ने जब अपनी बहन के शरीर पर खून देखा तो गुस्सा ठंडा पड़ गया और अपने

www.abulhasanalinadwi.org

किये पर नादिम (लज्जित) हुए थोड़ी देर रूककर अपनी बहन से बोले कि अच्छा वह पुस्तक तो दिखाओ जिसे मैंने तुम लोगों को पढ़ते सुना है। उनकी बहन बोली कि हमें डर है (भय) कि पता नहीं तुम उसके साथ क्या करो। उमर बोले अब डरने की कोई आवश्यकता नहीं है। उन्होंने अपने देवताओं की कसम खाकर विश्वास दिलाया तब उनकी बहन ने बड़ी नम्रता से कहा कि आप नापाक (अपवित्र) हैं। कुर्आन पवित्रता की ही हालत में छुआ जा सकता है। हज़रत उमर खड़े हुए, नहाये। उसके बाद उनकी बहन ने पुस्तक उनको पढ़ने को दी। उसमें सूरह ताहा लिखी थी। उसको जब पढ़ा तो उनका दिल (हृदय) खुल गया और कहने लगे कि कितना पाक (पवित्र) और भला कलाम है। जब खब्बाब ने यह बात सुनी तो उनके पास आये और बोले ऐ उमर मुझे ऐसा अनुभव हो रहा है कि अल्लाह ने नबी की दावत के लिए तुम्हारा चयन कर लिया है। मैंने कल ही अल्लाह के रसूल को यह दुआ करते सुनी है कि ऐ अल्लाह इस्लाम को अबू जहल या उमर के जरिये (माध्यम) मदद (सहायता) फरमा। अब तो तुम अल्लाह का लिहाज करो।

हजरत उमर ने कहा कि मुझे मुहम्मद के पास ले चलो। मैं उनके हाथ पर इस्लाम लाना चाहता हूँ। हज़रत ख़ब्बाब ने बताया कि इस समय हुजूर सफा के पास एक घर में हैं और आपके साथ आपके सहाबा भी है। हजरत उमर ने तलवार लटकाई और हुजूर के वहाँ पहुँच कर दरवाजा खट खटाया। हज़रत उमर की आवाज सुनी तो एक आदमी ने खड़े होकर दरवाजे से झाँका। उन्होंने देखा कि हज़रत उमर तलवार लटकाये हैं। वह घबराये और हुजूर के पास आये और कहा कि या रसूलल्लाह वह उमर हैं और तलवार लटकाये आये हैं। हज़रत हमज़ा बोले आने दो यदि वह सद्भावना से आये हैं तो हम उनका स्वागत करते हैं और यदि उनकी भावना ठीक नहीं है तो उसी की तलवार से

www.abulhasanalinadwi.org

उसको मार डालेंगे। फिर हुजूर ने फरमाया कि आने दो उन सहाबा ने हज़रत उमर को अन्दर आने की इजाज़त (अनुमति) दे दी। जब हज़रत उमर आने लगे तो आप आगे बढ़कर उनसे कमरे में मिले और उनका दामन मजबूती से पकड़ कर खींचा और फरमाया कि इबने ख़त्ताब किस इरादे से आना हुआ। खुदा की कसम मुझको ऐसा लगता है कि अंत से पूर्व तुमको किसी कठिनाई का सामना करना पड़ेगा। हज़रत उमर ने कहा कि मैं तो आपके पास मुसलमान होने आया हूँ। मैं आया हूँ अल्लाह पर ईमान लाने, उसके रसूल पर और उस पर जिसको अल्लाह का रसूल लेकर आया। आपने तक्बीर कही (अल्लाहु अकबर) इससे लोगों ने अनुमान लगाया कि हज़रत उमर मुसलमान हो गये। हज़रत उमर के मुसलमान होने से मुसलमानों का मनोबल बढ़ गया। इनके पूर्व हज़रत हमजा ईमान ला चुके थे। हज़रत उमर ने अपने मुसलमान होने का खुलकर एलान किया। कुरैश में यह खबर आग की तरह फैल गयी। वे हज़रत उमर से लड़ने व मरने को तैयार हो गये अन्त में वह हज़रत उमर से निराश हो गये।

बनी हाशिम का बहिष्कार

अरब कबीलों में इस्लाम तेजी से फैलने लगा तो कुरैश को चिन्ता हुई। उन्होंने परामर्श के लिए एक बैठक बुलाई और उसमें यह निर्णय लिया कि एक लिखित समझौता बनी हाशिम और बनी मुत्तलिब के लिए हो। उन्होंने यह पाबन्दी लगा दी कि वह न किसी और के यहाँ शादी कर सकते और न दूसरे उनके यहाँ शादी विवाह कर सकेंगे और कोई इनके साथ किसी प्रकार की तिजारत (व्यापार) न करे, पूरा मुआहदा धारा वार लिखकर पारित किया गया और उसको स्वीकृति दी गयी और उसका पालन अनिवार्य किया गया। उसकी पुष्टि के लिए उस समझौते को काबा के अन्दर लटका दिया गया।

www.abulhasanalinadwi.org

घाटी अबू तालिब में

कुरैश की इस पाबंदी के बाद बनी हाशिम और बनी मुत्तलिब अबूतालिब के साथ हो गये और घाटी में नजर बन्द हो गये। यह घटना नुबुव्वत के सातवें वर्ष घटी। अबू लहब बिन अब्दुल मुत्तलिब ने बनी हाशिम को छोड़ दिया और वह कुरैश के साथ हो लिये। बनी हाशिम काफी दिनों तक इस घाटी में रहे। इस बीच उन्होंने बबूल की पत्तियां खा कर अपना काम चलाया उनके बच्चे भूख व प्यास से रोते और बिलबिलाते थे। उनके रोने की आवाज दूर से सुनी जाती थी। वह व्यापारियों को भड़काते और वह चीज़ों के मूल्य इतना बढ़ा देते कि चीजें क्रय करने की क्षमता उनमें न रहे। शअ़बे अबू तालिब में इन लोगों ने इस प्रकार तीन वर्ष बिता दिये इस अवधि में उन तक कुछ चीजें (वस्तुएं) छुपाकर पहुँचायी जाती रहीं। यह कार्य कुरैश के हमदर्द उनसे सहानुभूति रखने वाले करते थे। इस इम्तेहान (परीक्षा) की घड़ी में भी रसूलुल्लाह अपनी दावत का कार्य कभी छुपकर और कभी खुलकर करते रहे और बनी हाशिम उन कष्टों को बड़े साहस से सहन करते रहे।

समझौता टूटा

कुरैश में से वह लोग जिनमें हमदर्दी थी नम्रता थी। इस समझौते के खिलाफ खड़े हो गये और उसमें आगे आगे हिशाम बिन अम्र बिन रबीआ था। उसकी अपनी कौम में इज्जत थी, मान था और आदर था। उसने कुरैश के ऐसे लोगों से सम्पर्क स्थापित किया जिनमें मनुष्यता थी, हमदर्दी थी। उसने उन लोगों को ग़ैरत दिलाई और ऐसे अत्याचार समझौते को समाप्त करने का परामर्श दिया। यह 5 व्यक्ति थे जो समझौते को तोड़ने पर सहमत हुए। दूसरे दिन कुरैश की बैठक में अबू उमय्या खड़े हुए और कहा कि ऐ मक्का वालो क्या यह तुम्हें अच्छा

www.abulhasanalinadwi.org

लगता है कि हम खायें पीये और पहने और बनी हाशिम उससे महरूम (वंचित) रहें। वह कोई चीज़ न खरीद सकते हैं और न कोई चीज़ बेच सकते हैं। खुदा की कसम मैं उस समय तक चैन (शान्ति) से नहीं बैठूंगा जब तक यह समझौता समाप्त न हो जाये। उस समय अबू जहल ने आपत्ति उठाई और उसको इसमें सफलता नहीं मिली। मुतइम बिन अदी खड़े हुए उस समझौते को फाड़ने के लिए तो उन्होंने देखा कि पूरे कागज को दीमक खा चुकी है। केवल बिस्मिकल्लाहुम्म बच रहा। इसकी सूचना हुजूर ने अबूतालिब को दी और समझौते को फाडकर फैंक दिया। उसमें जो लिखा था समाप्त हुआ।

अबू तालिब और हज़रत ख़दीजा का इन्तकाल (निधन)

नुबुव्वत के दसवें वर्ष एक ही वर्ष के अन्दर हजरत ख़दीजा और अबूतालिब की वफ़ात हुई (निधन हुआ) यह दोनों अल्लाह के रसूल के अच्छे सहयोगी और शुभचिंतक थे। इनकी वफ़ात (निधन) पर रसूलुल्लाह को बड़ा दुख हुआ। इसके बाद आपको लगातार कई कष्टों का सामना करना पड़ा।

कुर्आन का चमत्कारिक प्रभाव

तुफैल बिन अम्र अद दोसी मक्का आये। यह शोला ब्यान शायर थे, शरीफ थे। कुरैश ने इनको हुजूर से मिलने से रोका। उनको डराया और धमकाया और आप की बात सुनने से रोका। उनसे कहा कि हमें डर है कि तुम्हारे साथ भी वैसा ही न हो जैसा हमारी कौम के साथ हुआ। इसलिए तुम न तो उनकी कोई बात सुनना और न उनसे कोई बात करना। तुफैल कहते हैं कि अल्लाह की कसम वो (कुरैश) तो मेरे पीछे ही पड़ गये आखिर मैंने उनको यकीन (विश्वास) दिलाया बात

www.abulhasanalinadwi.org

न करने और उनकी बात न सुनने का। मैंने अपने कान में रूई ठूँस ली और मस्जिद की तरफ चला। काबा के पास हुजूर नमाज पढ़ रहे थे। मैं उनके पास जाकर खड़ा हो गया। अल्लाह ने अपना कलाम मुझे सुनवा ही दिया। कहने लगे कि मैंने बेहतरीन कलाम सुना। उस समय मेरे दिल ने कहा, कि मैं शायर (कवि) हूँ। रचना को समझने और उसको परखने की मुझमें लियाकत (क्षमता) है। मुझे कौन इससे रोक सकता है कि वह कलाम न सुनूं जो अच्छा है। मुझे जो चीज़ अच्छी लगेगी उसको स्वीकार करूंगा और जो मुझे बुरी लगेगी उसको स्वीकार करने के लिए कोई मुझे मजबूर नहीं कर सकता। तुफैल आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से घर पर मिले और सारी बात आपको बता दी और उनके सामने कुर्आन पढ़ा फिर वे इस्लाम ले आये। और फिर वह अपनी कौम में मुबल्लिग (दावत देने वाला) बन कर लौटे। लौटने पर परिवार के साथ रहने से इनकार कर दिया और स्पष्ट रूप से कह दिया कि परिवार के साथ तब ही रहूँगा जब वह मुसलमान हो जायें। वह सब इस्लाम ले आये। फिर उन्होंने अपने क़बीले में इस्लाम की दावत दी उनमें इस्लाम खूब फैला

तायफ की यात्रा और उसके कष्ट

अबूतालिब के निधन के बाद कुरैश आपको तकलीफ और कष्ट ज्यादा ही देने लगे। और वह कष्ट देने लगे जिसका कुरैश ने अबूतालिब की जिन्दगी में सोचा भी नहीं था। इन मूर्ख और अभागियों ने आपके सर पर मिट्टी डाल दी।

कुरैश का कष्ट देना जब बढ़ गया तो आपने तायफ प्रस्थान करने का निश्चय किया। आपने सोचा कि बनू सक़ीफ़ को इस्लाम की दावत देंगे कि वे सब मुसलमान हो जायें। आप तायफ जब तशरीफ लाये तो आपने बनू सक़ीफ के सम्मानित लोगों तथा सरदारों से भेंट करने का

www.abulhasanalinadwi.org

फैसला फरमाया। आप उनके बीच बैठे और इस्लाम की दावत दी। सकीफ के लोगों ने इसकी सख़्त मुखालिफ़त की और आपका मजाक उडाया। आपको गालियां दीं और आपको पत्थर मारे। आप एक खजूर के दरख़्त के साये में बैठ गये। आप बहुत दुखी थे आपको तायफ के लोगों से ऐसी आशा नहीं थी कि तकलीफ़ देने में मक्का वालों को पीछे छोड़ देंगे।

तायफ वाले दो-दो (पंक्तियों में) मार्ग में बैठ जाते और जब आप का उधर से गुजर होता तो आप जब पैर उठाते तो वह उस पर पत्थर मारते और जख़्मी कर देते और लहुलहान कर देते तो आप दिल व ज़बान से दुआ में अपनी कमज़ोरी और बेसरो सामानी की शिकायत फरमाते। और अल्लाह से मदद और सहायता चाहते हुए फ़रमाते।

ऐ अल्लाह मैं अपनी कमजोरी व बे सरों समानी तथा लोगों में अपने अपमानित होने की शिकायत (फ़रयाद) करता हूँ। ऐ दया करने वाले तू ही कमजोरों और दुखयारों का खुदा है। तू मेरा खुदा है मुझे किसके हवाले किया जाता है। क्या ऐसे दुश्मन के जो हम पर कुदरत रखता है। तेरा गुस्सा व ग़जब मुझ पर नहीं तो मुझे किसी की परवाह नहीं। तेरी दया दृष्टि मेरे लिए अधिक महत्वपूर्ण है। मैं तेरी जात के प्रकाश (नूर) से पनाह मांगता हूँ जिससे सारी अंधेरियां प्रकाश में बदल गई और संसार के सब कार्य ठीक व दुरूस्त हो गये और पनाह चाहता हूँ इस कि तेरा गजब मुझ पर उतरे या तेरी नाराजगी। मुझे केवल तेरी रजा चाहिये और अच्छाई करने व बुराई से बचने की ताकत (शक्ति) केवल तुझी से प्राप्त हो सकती है।

इस अवसर पर अल्लाह ने पहाड़ के फिरिश्ते को भेजा कि यदि आप चाहें और अनुमति दें तो दोनों पहाड़ जिसके बीच तायफ वाले रहते हैं मिला दें। आपने फ़रमाया नहीं मुझे आशा है कि इनकी औलाद

www.abulhasanalinadwi.org

में से तो कोई होगा जो अल्लाह की पूजा करेगा और उसकी पूजा में किसी अन्य को शामिल नहीं करेगा।

जब उतबा बिन रबीआ और शेबा बिन रबिआ ने आपकी यह हालत देखी तो उनके दिल में नम्रता और दया आ गई और दोनों ने अपने गुलाम को बुलाया जो नसरानी था और उसका नाम अददास था। उससे कहा कि यह अंगूर का गुच्छा लेकर उस आदमी के पास जाओ और उससे इसको खाने को कहो। अददास ने ऐसा ही किया और वह आपके व्यवहार से प्रभावित होकर मुसलमान हो गया। आप तायफ से मक्का लौट आये तो आपकी कौम आपकी मुख़ालिफ़त अधिक करने लगी और आपका मजाक और खिल्ली उड़ाने लगी।

मेअराज और नमाज़ की फरज़ीयत

आपको मेराज हुई। आपने रातो रात मस्जिदे हराम से मस्जिदे अकसा की यात्रा की। उसके बाद विशेष स्थानों, सातों आसमानों की सैर की, अल्लाह की निशानियों को देखा और सभी नबियों से वहाँ भेट हुई।

अल्लाह ने इसी बात को कहा कि :

उनकी आँख न तो और तरफ, मायल हुई और न हद से आगे बढ़ी उन्होंने अपने परवर दिग़ार (पालनहार) की कुदरत की कितनी ही बड़ी बड़ी निशानियां देखी।

यह अल्लाह की तरफ से मेहमान नवाजी थी। आपको तसल्ली देना थी उसके प्रति जो आपको तायफ के लोगों से तकलीफ पहुंची और उन्होंने आपका दिल दुखाया, आपका अपमान किया।

दूसरे दिन आपने मेअ़राज की बात कुरैश से बताई तो उन्होंने उसको झुठलाया और इस पर विश्वास नहीं किया और इसका मजाक

www.abulhasanalinadwi.org

उड़ाया। लेकिन हजरत अबू बकर ने कहा कि यदि यह बात नबी कह रहे हैं तो वह शत प्रतिशत सत्य है। तुमको इस पर आश्चर्य क्या है? खुदा की कसम यदि आप मुझे यह सूचना देते हैं कि वह दिन और रात के किसी हिस्से में आकाश से जमीन पर आती है तो मैं उसको सत्य मानता हूँ जो उससे भी ज्यादा आश्चर्य जनक बात है।

अल्लाह ने हर दिन 50 नमाजें अनिवार्य कीं और आप बराबर इसमें कमी कराते रहे यहाँ तक कि अल्लाह ने उम्मत पर दिन रात में पाँच वक्त की नमाजें अनिवार्य कर दी गयीं। और यह घोषणा कर दी गयी कि जो भी ईमान और एहतिसाब (पाबन्दी) के साथ यह नमाज़े पढ़ेगा उसको पचास नमाज़ों ही का सवाब (पुण्य) मिलेगा।

अरब के कबीलों में इस्लाम की दावत

रसूलुल्लाह (सल्ललाहु अलैहि व सल्लम) ने हज के मौसम में अरब कबीलों में इस्लाम की दावत देना प्रारम्भ कर दिया। उनसे सहयोग मांगा। आपने उनको सम्बोधित करते हुए फरमाया कि-

ऐ बनी फुला मैं तुममें रसूल व नबी बनाकर भेजा गया हूँ मैं तुमको अल्लाह का हुक्म सुनाता हूँ वह तुमको अल्लाह की इबादत का हुक्म देता है, और इसका हुक्म देता है कि तुम उसके साथ किसी और को साझी न बनाओ। और तुम सब उन सबकी पूजा व इबादत से रिश्ता नाता तोड़ लो जिनकी तुम अल्लाह के अलावा पूजा करते हो मैं जो कह रहा हूँ इसी को सत्य मानो उस पर ईमान ले आओ मेरी उस समय तक रक्षा करो जब तक वह पैगाम जिसको लेकर मुझे भेजा गया है आम न हो जाये।

जब आप अपनी बात कह चुके तो अबू लहब खड़ा हुआ और कहा कि ऐ बनी फुला यह तुमको लात व उज्ज़ा की पूजा तथा उससे

www.abulhasanalinadwi.org

वफादारी का तौक गरदन से उतारने को कहता है। और कहता है कि अपने सहयोगीजनों से भी रिश्ता तोड़ लो और वह स्वीकार कर लो जो यह लेकर आये हैं। तुम सब इनकी बात न तो मानो और न सुनो।

अंसार के इस्लाम लाने की शुरूआत

नबी सल्ललाहु। अलैहे वसल्लम हज के मौसम में इस्लाम की दावत देने के लिए निकले। उक़बा के पास आपको अंसार के कबीले खज़रज के कुछ व्यक्ति मिले। आपने उनको इस्लाम क़बूल करने की दावत दी और उनके सामने कुरान शरीफ की तिलावत की। यह सब मदीने में यहुदियों के पड़ोसी थे उनसे वह सुना करते थे कि भविष्य में एक नबी आने वाला है। यह लोग आपस में कहते कि कहीं यही तो वह नबी नहीं है जिसकी बातें यहूद किया करते थे। देखो कोई और अन्य तुमसे इस मामले में आगे न बढ़ जाये। उन्होंने आपके पैग़ाम को सुना और उसको सत्य जाना और फिर आपसे कहा कि हम अपनी कौम को छोड़कर आए हैं। कोई अन्य क़ौम इसके अतिरिक्त नहीं है। जिसमें इतनी बुराई बगावत, अनारकी हो। सम्भवतः अल्लाह आपके माध्यम से इनमें इत्तिफ़ाक व इत्तेहाद (ऐकता) पैदा कर दे। हम वहाँ पहुंच कर आपका पैगाम उन तक पहुँचाएंगे और दीन की उनमें तबलीग करेंगे। जिसको हमने स्वीकार किया है। यदि अल्लाह ने आपके माध्यम से हमको एक कर दिया तो फिर आपसे अधिक मान व इज़्जत वाला कोई नहीं है। वह सब ईमान लाने के बाद अपने शहर लौट आये। जब वे मदीने पहुंचे उन्होंने अपने भाइयों से रसूलुल्लाह का जिक्र किया और इस्लाम की दावत दी। यहाँ तक कि यह बात खूब फैल गयी। अंसार का कोई घर नहीं बचा जिसमें आप की चर्चा न हो।

www.abulhasanalinadwi.org

उकबा की बैअत (प्रथम)

अगले वर्ष जब हज का मौसम आया तो अंसार के 12 आदमी आपसे मिले प्रथम उक़बा की बैअत की। इस बात पर कि वह अब चोरी न करेंगे। ज़िना (हराम कारी) न करेंगे, अपने बच्चों को क़त्ल नहीं करेंगे, पुण्य के कार्य सदैव करेंगे, अल्लाह की वहदानियत पर विश्वास और यकीन होगा। जब इन लोगों ने वापसी का इरादा किया तो आपने मुसअ़ब बिन उमैर को उनके साथ कर दिया और उनको इस्लाम की शिक्षा देने के निर्देश दिये। उनसे कहा कि वह उन्हें दीन सिखायें और कुर्आन पढ़ाएं इसी कारण वह मुक़री के नाम से मशहूर हो गयें (पढ़ाने वाला) वह असअ़द बिन ज़ुरारह के मेहमान बनें और वहा वह सब की इमामत करते थे (नमाज पढ़ाते थे)

मदीने में इस्लाम का फैलना

अब अंसार (बनी औस व खजरज) के घरों में इस्लाम फैलना आरम्भ हुआ। सअ़द बिन मुआज व उसैद बिन हुजेर इसलाम लाये। यह दोनों अपनी कौम के सरदार थे। इसमें मुसअब बिन उमैर की सूझ-बूझ, हिकमत और अच्छे ढ़ंग से दावत का बड़ा दखल था। जो यह इस्लाम ले आये।

दूसरी बेअत उकबा

दूसरे वर्ष मुसअब बिन उमैर मक्का वापस आये मुशरेकीन की एक जमाअत के साथ अनसार के कुछ मुसलमान हज के लिए मक्का पहुँचे और रसूलुल्लाह (सल्ललाहु अलैहि व सल्लम) से उकबा में बैअत का वादा किया। जब हज से छुट्टी मिली और एक तिहाई रात गुजर गयी तो सब उकबा के करीब एक घाटी में जमा हुए इनकी कुल संख्या 73 थी। इसमें 2 औरतें भी थीं रसूलुल्लाह (सल्ललाहु अलैहि

www.abulhasanalinadwi.org

व सल्लम) भी तशरीफ़ लाये। आपके साथ आपके चाचा हज़रत अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब थे जो उस समय तक मुसलमान नहीं हुए थे।

आपने लोगों से बात की उनके सामने कुरान पढ़ा और अल्लाह से दुआ़ की और इस्लाम लाने को कहा। फिर आपने फ़रमाया कि मैं तुमसे इस बात पर बैअ़त लेता हूँ कि तुम मेरी सुरक्षा के लिए वही मामला करोगे जो तुम अपने परिवार के साथ करते हो। उन्होंने आपसे बैअत की फिर उन्होंने आपसे यह वादा लिया कि आप उनको तन्हा नहीं छोड़ेंगे। न अपनी क़ौम में वापस लौटेंगे। आपने उनसे वादा किया फिर आपने फरमाया कि मैं तुममें से हूँ और तुम मुझमें से हो जिससे तुम जंग करोगे उससे मैं भी जंग करूंगा और जिससे तुम सुलह करोगे मैं सुलह (समझौता) करूंगा। आपने उनमें से 12 सरदारों का चयन किया। इसमें से 9 खजरज के और 3 औस कबीले के थे।

मदीने हिजरत की अनुमति

जब रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने अंसार के इस कबीले से इस्लाम और उसके मानने वालों की सहायता पर बैअत ली तो बहुत से मुसलमान उनकी सुरक्षा में आ गये। रसूलुल्लाह (सल्ललाहु अलैहि व सल्लम) ने उन सभी को जो आपके साथ मक्का में थे, मदीने हिजरत करने के निर्देश दिये और मदीने आकर अपने अनसार भाइयों से मिल जाने के आदेश दिये और फरमाया कि अल्लाह ने तुम्हारे लिये भाइयों तथा घर का प्रबन्ध कर दिया है। जहाँ तुम सुकून (शांति) के साथ रह सकोगे। इस आदेश के बाद लोग जमाअतों की शक्ल में मक्का से मदीना हिजरत के लिए निकल पड़े और आप इस अवधि में मदीना हिजरत के लिए अल्लाह के हुक्म (आदेश) का इन्तजार करने लगें।

www.abulhasanalinadwi.org

मुसलमानों की हिजरत मक्का से मदीना इतनी सरल न थी कि वह आसानी से सहन कर लेते। मुशरेकीन ने हर प्रकार की रूकावटे मुसलमानों के लिए खड़ी कर दीं और हर तरह की परीक्षा में उनको डाल दिया। लेकिन मुहाजिर्रीन अपनी बात के धनी थे। और जो इरादा कर लिया था उससे पीछे हटने वाले नहीं थे। वह पूरी तरह मक्का को छोड़ने को तैयार थे। उनमें से जो कुछ ऐसे भी थे जिनको अपने परिवार को छोड़कर मक्का से जाना पड़ा जैसे कि अबू सालिमा के साथ पेश आया। कुछ ऐसे भी थे जिन्होंने वह सब कुछ मक्का में ही छोड़ दिया था जो वहाँ रहकर अपनी जिन्दगी में कमाया जैसे सुहैब ने किया।

हजरत उमर बिन खत्ताब, तलहा, हमजा, यजीद बिन हारिस, अब्दुर्रमान बिन औफ, जुबैर बिन अव्वाम, अबू हुज़ेफा, उसमान बिन अफ़्फान और दूसरे सहाबा ने मदीना हिजरत की। हज़रत अबूबकर और हज़रत अली को छोड़कर सबने हिजरत के लिए मदीने की यात्रा की। वह रह गये जो किसी परेशानी या परीक्षा में पड़ गये थे।

रसूलुल्लाह के विरुद्ध कुरैश की साजिश और असफलता

जब कुरैश को यह सूचना मिली कि रसूलुल्लाह (सल्ललाहु अलैहि व सल्लम) के बहुत से हमदर्द व सहयोगी मदीने में पैदा हो गये हैं और वहाँ उनका कोई जोर नहीं चल सकता तो कुरैश को आप (सल्ललाहु अलैहि व सल्लम) की हिजरत का भय हुआ। वह यह भली प्रकार जान गये कि यदि रसूलुल्लाह यहाँ से तशरीफ़ ले गये तो फिर उन पर उनका कोई जोर नहीं चलेगा। यह सोचकर वह सब दारे नदवा में जमा हो गये जो वास्तव में कुसई बिन किलाब का घर था। कुरैश अपने महत्वपूर्ण मामले और कार्यो को यहीं निपटाते और निर्णय लेते और आगे क्या करना है इसकी योजना बनाते थे। इसमें कुरैश के

www.abulhasanalinadwi.org

सब सरदार शरीक होते। दारूननदवा में सबने मिलकर यह तय कर लिया कि प्रत्येक कबीले से एक युवक का चयन हो। सब मिलकर एक साथ आप पर हमला कर दें। इस प्रकार इस जुर्म में सब बराबर के शरीक होंगे। बनी अबदे मुनाफ सारी क़ौम से जंग का खतरा मोल न लेंगे। क़ौम आप पर हमला करने की योजना बनाकर अलग हो गयी।

इसकी योजना की सूचना अल्लाह ने हुज़ूर को दे दी। आपने हज़रत अली को अपनी चादर ओढ़ा कर अपने स्थान पर सो जाने को कहा और हज़रत अली से फरमाया कि तुम्हें कोई कष्ट न होगा। इधर पूरी टोली आपके दरवाजे पर आपके इन्तेज़ार में खड़ी थी और हमला करने की तैयारी में थी कि आप बाहर तशरीफ़ लाये और थोड़ी सी मिट्टी हाथ में ले ली। उस समय अल्लाह ने उनकी बीनाई (रोशनी) समाप्त कर दी कि वह किसी को देख नहीं सकते थे। आप उनके सरों पर यह मिट्टी फैकते और सूरह यासीन शुरूअ़ की आयात से "फ़अगूशैनाहुम फ़हुम् ला युबसिरून" तक पढ़ते हुए उनके सामने से निकल और उनको आपके जाने की खबर भी नहीं हुई। इसी बीच किसी आने वाले ने उनसे पूछा कि तुम किस का इन्तेजार कर रहे हो उन्होंने उत्तर दिया कि मुहम्मद का उस आदमी ने कहा कि अरे बदबख्तो मुहम्मद तो निकल चुके उन्होंने देखा कि वह तो बिस्तर पर सो रहे हैं। आपके न होने पर उनको शक भी न हुआ। लेकिन सुबह हुई तो हज़रत अली को बिस्तर से उठते देखा तो वह बड़े शर्मिन्दा हुए और खिसयाकर लौट गये।

रसूलुल्लाह की मदीने हिजरत

आप हज़रत अबुबकर के पास तशरीफ लाये और फरमाया कि अल्लाह ने मुझे मक्का से निकलने और मदीना हिजरत करने की इजाजत (आज्ञा) दे दी है।

www.abulhasanalinadwi.org

हजरत अबूबकर ने कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल मैं आपके साथ रहना चाहँता हूँ। आप (सल्ललाहु अलैहि व सल्लम) ने साथ में रहने की अनुमति दे दी। इजाजत पाकर हजरत अबूबकर खुशी से रो दिये। फिर हज़रत अबूबक़र ने 2 सवारियों का प्रबंध किया। हजरत अबूबकर ने इस सफ़र के लिए पहले से प्रबंध कर लिया था। अब्दुल्लाह बिन उरैकित को रास्ता बताने के लिए मुआविज़े पर रख लिया था। हुजूर ने हज़रत अली को मक्का में ही रहने को फरमाया ताकि वह उनकी अमानतें लौटा दें जो लोग आपके पास अमानतें रखवाते थे। आपके सच्चे अमानतदार होने के कारण।

ग़ारे सौर

हुजूर और हज़रत अबूबकर छिपते छिपाते मक्का से निकले। हज़रत अबूबकर ने अपने सुपुत्र अब्दुल्लाह बिन अबूबक्र को यह आदेश दिया कि वह सभी खबरें (समाचार) उन तक पहुचाया करें जो मक्का वाले उनके बारे में कहें। अपने गुलाम आमिर बिन फुहेरा को निर्देशित किया कि वह दिन में बकरियां चराये और शाम को उनका दूध उन तक पहुंचाये। हज़रत असमा को खाना पहुँचाने का कार्य सौंपा। जब दोनों गारे सौर तक पहुंचे तो हज़रत अबूबकर ग़ार में गये। यह देखने के लिए कि उसमें कोई कीड़ा न हो जो आपको तकलीफ़ पहुँचाये और वह आपके आने के पूर्व साफ हो। जब दोनों गारे सौर में दाखिल हुए तो अल्लाह ने मकड़ी को भेजा जिसने ग़ार से उस पेड़ तक जाला तान दिया जो ग़ारे के मुँह पर था। और रसूलुल्लाह और हज़रत अबूबक्र को छिपा दिया। उसके बाद अल्लाह ने 2 जंगली कबूतरियों को आदेश दिया वह फड़ फड़ाती रहें। फिर मकड़ी और दरख्त के बीच आकर बैठ गयीं। "व लिल्लाहे जुनदुस् समावाति वल अर्ज़ि।"

और अल्लाह ही के हैं आकाश और धरती के लश्कर। इधर

www.abulhasanalinadwi.org

मुशरेकीन ने आप का पीछा किया और पहाड़ तक पहुँच गये पहाड़ पर चढ़े और ग़ार के मुँह तक आ गये। ग़ार के मुँह पर मकड़ी का जाला तना मिला वह कहने लगे कि यदि वह ग़ार में होते तो ग़ार के मुँह पर मकड़ी का जाला तना न मिलता।

ला तहजन इन्नल लाह मअ़ना

जब वह दोनों ग़ार में थे कि हज़रत अबूबकर ने मुशरेकीन के निशान दिखे वह कहने लगे कि ऐ अल्लाह के रसूल इनमें से एक भी यदि अपने कदमों को आगे बढ़ाये तो हम लोगों को देख लेगा। आपने फरमाया कि तुम्हारा क्या खयाल है? उन दो के बारे में जिनका तीसरा खुदा है। इसी मौके पर यह आयत उतरी।

अनुवाद- "उस समय दो ही व्यक्ति थे जिनमें एक अबूबक्र थे दूसरे स्वयं रसूलुल्लाह। जब दोनों ग़ार (सौर) में थे उस समय आप अपने रफीक को तसल्ली देते थे कि ग़म न करो अल्लाह हमारे साथ है"

आपका सुराका ने पीछा किया

कुरैश ने जब रसूलुल्लाह को नहीं पाया तो यह एलान कर दिया कि जो भी रसूल (सल्ललाहु अलैहि व सल्लम) को लायेगा उसको 100 ऊँट पुरस्कार के तौर पर दिये जायेंगे।

आप दोनों ने गारे सौर में तीन राते बिताई फिर वहाँ से निकले। साथ में उनके आमिर बिन फुहेरा थे जो मार्ग दिखाने के लिए उनको मुलाजिम रखा था। वह साहिल के किनारे किनारे चल पड़े।

सुराका बिन मालिक बिन जुअ़शम ने आपको पकड़ने और आपको कुरैश के हवाले करने का बीड़ा उठाया ताकि 100 ऊँट प्राप्त कर सकें। अपने घोड़े पर सवार होकर आपके कदमों के निशान की

www.abulhasanalinadwi.org

सहायता से आपका पीछा किया लेकिन उसके घोड़े को ठोकर लगी और वह उससे गिर गया लेकिन पीछा करने से बाज वापस नहीं आया। वह फिर घोड़े पर सवार हुआ और निशानों की मदद से पीछा करने लगा। उसके घोड़े को फिर ठोकर लगी और वह फिर गिर पड़ा। वह सवार हुआ फिर पीछा करने लगा कि ये लोग उसको नजर आ गये। उसी समय उसके घोड़े ने तीसरी मरतबा ठोकर खाई। उसके दोनों अगले पांव जमीन में धंस गये। सुराका गिर पड़ा उसके साथ बगोले के समान धुआ भी उठा।

सुराका ने जब यह कैफीयत देखी तो समझ गया कि रसूल (सल्ललाहु अलैहि व सल्लम) को इस समय अल्लाह की मदद व सहायता मिल रही है। यह हर प्रकार सफल होंगे तो उसने जोर से पुकारा और कहा कि मैं सुराक बिन जअ़शम हूँ। मैं तुमसे बात करना चाहता हूँ खुदा की कसम मुझसे आपको कोई हानि नहीं पहुँचेगी। तब आपने अबू बक्र से फरमाया कि उससे पूछो कि वह चाहता क्या है? सुराका ने उत्तर दिया कि आप हमें एक तहरीर दे दें (निशानी के तौर पर) जो हमारे और आपके बीच यादगार हो। आमिर बिन फुहेरा ने हड्डी पर एक तहरीर लिख कर दे दी।

किसरा के कंगन सुराका के हाथ में

आपने सुराका से फरमाया कि तुम्हारी कैफीयत उस समय क्या होगी जब तुम्हें किसरा के कंगन पहना दिये जायेंगे। हज़रत उमर की खिलाफत (समय) में आपकी यह भविष्यवाणी सत्य हुई जब हज़रत उमर ने सुराका को बुलाया और कंगन उनको पहनाये।

रसूलुल्लाह को सुराका ने रास्ते में खाने पीने का समान देने को कहा। आपने यह स्वीकार नहीं किया और इससे जियादा कुछ नहीं कहा कि इस बात को राज रखना।

www.abulhasanalinadwi.org

पवित्र व्यक्ति

उम्मे मअ़ब्द अल खुजाईया के पास से रसूलुल्लाह व हज़रत अबूबक्र गुजरे। उसके पास एक बकरी थी जिसका दूध चारा व पानी के अभाव के कारण सूख गया था। रसूलुल्लाह ने उसके थनों पर हाथ फेरा और अल्लाह का नाम लेकर दुआ फरमाई। उसी समय दूध जारी हो गया। आपने यह दूध उम्मे माबद और अपने साथियों को पिलाया। सबने खूब जी भर के पिया। अंत में आपने पिया। दूध दूसरी बार दूहा तो बर्तन भर गया। जब अबू माबद लौटे तो उनसे पूरा किस्सा बताया और उम्मे माबद ने कहा कि एक पवित्र व्यक्ति हमारे पास से गुजरा और अच्छी अच्छी बातें की। फिर उन्होंने अच्छे शब्दों में आप (सल्ललाहु अलैहि व सल्लम) की तारीफ (प्रशंसा) की। यह सुनकर अबू माबद बोले कि खुदा की कसम मुझे यह कुरैश का वही व्यक्ति जान पड़ते हैं जिनकी कुरैश को तलाश है।

गाइड के साथ उन दोनों ने अपनी यात्रा जारी रखी और कुबा पहुँच गये जो मदीने के क्षेत्र में हैं। यह घटना 12 रबीउल अव्वल सोमवार की है। इस्लामी तारीख (कलेन्डर) की शुरूआत (प्रारम्भिकता) होती है।

मदीने में आपका प्रवेश और भव्य स्वागत

अंसार को आपके मक्का छोड़ने की सूचना मिल गयी थी। आपकी प्रतीक्षा (इंतजार) बेचैनी से करने लगे जैसे रोजेदार ईद के चाँद का इन्तजार करता है। प्रतिदिन सुबह की नमाज पढ़कर मदीने से बाहर आकर आपके तशरीफ़ लाने का इन्तेज़ार करते और उस समय तक वापस नहीं लौटते जब तक धूप तेज नहीं हो जाती। वह जमाना गर्मी का था और तपिश भी अधिक थी।

www.abulhasanalinadwi.org

जिस समय आपने मदीने में प्रवेश किया उस समय अंसार आपका इन्तेजार करके अपने घर को वापस आ चुके थे। यहूदी, अंसार का आना, इन्तजार करना और फिर घर लौटना देखते थे। सबसे पहले आप पर नजर यहूदी की पड़ी। उसने शोर मचाकर आपके आने (आगिमन) की सूचना सबको दे दी। सूचना पाते ही अंसार अपने घरों से निकल पड़े। उन्होंने देखा कि आप एक खजूर के दरख़्त के नीचे तशरीफ़ रखते हैं। आपके साथ हज़रत अबूबकर थे जो आपकी उम्र (आयु) के जान पड़ते थे अंसार में से अधिक ऐसे भी लोग थे जिन्होने हुज़ूर के दर्शन नहीं किये थे। भीड़ इकट्ठी हो गयी। आप दोनों को लोगों ने घेर लिया कि उनके लिए दोनों में से रसूलुल्लाह का पहचानना मुश्किल हो गया। हज़रत अबूबक्र को यह महसूस (अनुमान) हुआ कि अंसार आपको पहचानने में परेशान है तो हजरत अबूबक्र खड़े हुए और एक चादर आप पर डाल दी। उसके बाद लोगों का शक दूर हो गया और लोगों ने आपको पहचान लिया। आपके आने की खुशी जो लोगों को हुई जीवनभर ऐसी खुशी (प्रसन्नता) कभी प्राप्त नहीं हुई। और हर मुसलमान खुशी से झूम उठा। हर व्यक्ति औरत हो कि मर्द (स्त्री हो या पुरूष) बच्चा हो या बूढ़ा खुशी से एक दूसरे से कहता कि यह हमारे रसूल हैं। हमारे रसूल आ गये। ऐसा मालूम पड़ता कि पूरा मदीना हर्ष व उल्लास से झूम रहा है। हर एक के चेहरे में हर्ष टपक रहा था। अंसार की बच्चियाँ खुशी से झूम झूम कर यह (कविता) पढ़ रही थी।

1. पहाड़ के उस मोड़ से जहाँ से काफिले विदा किये जाते हैं। आज वहाँ से चौदहवीं का चाँद निकल आया।

2. जब तक दुनिया (संसार) में अल्लाह का नाम लेने वाला रहेगा।

हम पर उसका शुक्र (धन्यवाद) अदा करना अनिवार्य है।

www.abulhasanalinadwi.org

3. ऐसी पवित्र ज़ात जिसको हमारे बीच भेजा गया है वाजिबुल इताअत आदेश लेकर आये हैं।

अनस बिन मालिक अन्सारी जो उस समय कम आयु के थे (लड़के थे) कहते हैं, कि मैंने देखा उस दिन से अधिक रोशन प्रकाशित दिन नहीं देखा जिस दिन रसूल्ललाह ने मदीने में प्रवेश किया।

मस्जिदे कुबा और मदीने का पहला जुमा

आपने कुबा में चार दिन कियाम फरमाया और मस्जिद के निर्माण की बुनियाद रखी। जुमे को मदीने के लिए रवाना हो गये रास्ते में बनी सालिम बिन औक कबीले की मस्जिद में जुमे की नमाज़ अदा की।

अबू अय्यूब अन्सारी के घर में

जब आप शहर में दाखिल होने लगे तो लोग रास्ते (मार्ग) पर ग्रुप बनाकर आपसे प्रार्थना करने लगे कि आप उनके घर कियाम फरमायें कुछ तो आपकी ऊँटनी की नकेल (रस्सी) पकड़ लेते। आप उनसे फरमाते कि ऊँटनी का रास्ता न रोको यह अल्लाह की ओर से निर्देशित है। यह सिलसिला चल रहा था कि आपकी ऊँटनी बनी मालिक बिन नज्जार के घर तक पहुँच गई। और वहाँ बैठ गई जहाँ आज मस्जिदे नबवी का दरवाजा है। उस समय वहाँ खजूर का एक खलयान था जिसके मालिक बनी नज्जार के यतीम बेटे थे। वह आपके रिश्तेदार भी थे। आप ऊँटनी से नीचे उतर आये अबू अय्यूब (खालिद बिन जैद) ने शीघ्र आपका सामान उतारा और उठाकर अपने घर ले गये। आपने यहीं कियाम फरमाया अबू अय्यूब ने आपकी मेहमानदारी आपका आदर और सम्मान में किसी प्रकार की कमी नहीं की। उनकी

www.abulhasanalinadwi.org

तबियत (आत्मा) ने यह पसन्द नहीं किया कि वह ऊपर रहें और आप नीचे के हिस्से में। इस कारण वह ऊपर से नीचे आ गये और हुजूर से कहने लगे कि आप ऊपर तशरीफ़ ले चलें घर वाले नीचें रहेंगे। आपने उत्तर दिया कि ऐ अबू अय्यूब हमको और हमारे मिलने वालों को नीचे रहने में सुविधा होगी।

मस्जिदे नबवी और घरों का निर्माण

रसूलुल्लाह ने उन दोनों यतीम लड़कों को बुलाया जो इस खलयान के मालिक (स्वामी) थे। आपने मस्जिद के निर्माण के लिए उस जगह को खरीदना चाहा। उन दोनों ने आपसे कहा कि या रसूलल्लाह यह हमारी ओर से हदया है (भेट) है आपने हदिये को स्वीकार करने से इन्कार फरमा दिया। आपने उन दोनों से वह जमीन क्रय की और वहाँ मस्जिद का निर्माण हुआ। और मस्जिद के निर्माण में स्वयं भाग लिया। आप ईंट पहुँचाते और लोग आपको देखकर यह कार्य करते। इस मौके (अवसर) पर आप फरमाते थे कि-

अनुवाद- ऐ अल्लाह वास्तव में बदला तो आखिरत का बदला है तू अंसार व मुहाजिरीन पर रहम फरमा। मुस्लमान उस समय बहुत खुश थे। खुशी में कविता पढ़ते और अल्लाह की तारीफ व प्रसंशा करते।

रसूलुल्लाह ने अबू अय्यूब के घर 7 माह क़ियाम किया। जब मस्जिद और मकानों का निर्माण हो गया तो आप घरों में मुन्तकिल हो गये। मक्का में दो ही प्रकार के मुसलमान बच रहे एक वह जो किसी आजमाइश परीक्षा में पड़े थे या जो दुश्मन के कैद में थे शेष सब मदीने हिजरत करने आपकी सेवा में उपस्थित हुए। अंसार का कोई घर नहीं बचा जिसके लोग इस्लाम नहीं ले आये।

www.abulhasanalinadwi.org

मुहाजिरीन व अनसार में भाई चारगी

आपने मुहाजिरीन और अंसार के बीच प्रेम, भाई चारगी, हमदर्दी और सहयोग का एक समझौता कराया। अंसार मुहाजिरीन के साथ भाई चारगी और हमदर्दी (सहानुभूति) में इतना बढ़ चढ़ कर भाग लेते कि कभी कभी कुराअनदाजी करनी पड़ती। वह अपने घर, मकान, जमीन और सामान में मुहाजिरीन को बराबर का साझेदार बनाते और उसको प्राथमिकता देते। एक अन्सारी मुहाजिर से कहता कि मेरे धन दौलत को देखो जितना उसका आधा होता हो वह तुम ले लो। मुहाजिर कहता कि अल्लाह तुम्हारे माल व दौलत व परिवार में बरकत अता फरमाये। बस तुम हमें बाजार का रास्ता (मार्ग) बतलाओ। अंसार का त्याग और मुहाजिरीन का आत्म सम्मान था।

मुहाजिरीन व अनसार के बीच रसूलुल्लाह की तहरीर और यहूद से अम्न समझौता

रसूलुल्लाह ने मुहाजिरीन और अंसार के बीच एक तहरीर तैयार की जिसमें यहूद से अमनो अमान (सुलहो शान्ती) का समझौता था। और उनको उनके दीन पर कायम रहने और माल व जायदाद की सुरक्षा की जिम्मेदारी ली गयी थी। उससे उनके अधिकारों एवं कर्तव्यों और उनकी जिम्मेदारी का उल्लेख था।

अजान का हुक्म (आदेश)

जब रसूलुल्लाह को मदीने में शान्ति और इस्लाम को मजबूती मिली तो अजान का आदेश हुआ। इसके पूर्व सब लोग नमाज समय से पढ़ने जमा होते बगैर अजान के। यहूद व नसारा की इबादत का नाकुस शंख व घन्टा बजाने का तरीका आपको ना पसन्द था। अल्लाह ने

www.abulhasanalinadwi.org

अजान का तरीका बताकर मुसलमानों को आदेश दिया। कुछ मुसलमानों ने इसको स्वप्न (ख्वाब) में भी देखा। अल्लाह के रसूल ने इसको अनिवार्य किया। शरइ तौर पर इसका इकरार नामा फरमाया। आपने यह सेवा हज़रत बिलाल के जिम्मे की हज़रत बिलाल को रसूलुल्लाह के मुअज्जिन होने का लकब (उपाधि) मिला। वह क़्यामत तक के लिए मुअज्जिनों के इमाम घोषित हुए।

मदीने में मुनाफेकीन खुलकर सामने आ गये

मदीने में इस्लाम ने फैलना आरम्भ किया और यहूद के कुछ विद्वान और पादरी मुसलमान हो गये जैसे अब्दुल्लाह बिन सलाम, और हसद पैदा हुआ यहूद में और उनमें जो रियासत का सपना देख रहे थे। और यह समझ रहे थे कि उनको ताज पहनाया जायेगा तथा हर एक उनकी बात मानेगा जिसका वह आदेश देंगे। लोग उसी को स्वीकार करेंगे और जिस बात को वह रोकेंगे लोग वह न करेंगे। इससे किसी प्रकार का मतभेद न होगा। जैसे अब्दुल्लाह बिन उबई बिन सलोल जब इस्लाम फैलने लगा और अधिक संख्या में लोग मुसलमान होने लगे तो उनके सपने टूट गये। लेकिन यह देखकर कि कौम इस्लाम में दाखिल होने से रूकने वाली नहीं तो वह भी ऊपर के मन से इस्लाम में आ गया परन्तु उसका भीतर भीतर बाकी रहा इसी तरह दूसरे लोग भी जिनके मन में इस्लाम के विरोध का रोग रहा निफाक के साथ इस्लाम में दाखिल हो गये।

किबले की तबदीली (परिवर्तन)

16 वर्ष तक मुसलमानों ने और आपने बैतुल मक़दिस की तरफ मुंह करके नमाज पढ़ी। रसूलुल्लाह (सल्ललाहु अलैहि व सल्लम) की

www.abulhasanalinadwi.org

इच्छा थी कि मुसलमान काबा की तरफ मुँह करके नमाज पढ़े। उस समय जो मुसलमान हो रहे थे वह अरब थे और अरबों को काबा से बेपनाह महब्बत थी। काबा की इज्जत उसका मान उनके खून में बसा था। वह बिल्कुल नहीं चाहते थे कि कोई और घर (स्थान) इब्राहिम व इस्माईल के काबा की जगह किबला हो उन्होने बैतुल मकदिस को किबला इसलिए माना कि उन्होंने कहा था कि हमने सुना और इताअत (आज्ञा पालन) की वह कहते थे हम हर उस चीज़ पर ईमान लाये जिस पर हमारे रब की तरफ से आदेश है। वह अल्लाह और उसके रसूल के आदेश का पालन करना जानते थे वह अपनी ख़्वाहिशों (इच्छाओं) को अल्लाह और उसके रसूल के आदेश के ताबे रखते थे उल्लंघन व नाफरमानी नहीं। जब अल्लाह ने उनके दिलों की परीक्षा ली और देखा कि उनके दिल अल्लाह और उसके रसूल के आदेशों का पालन करते हैं। और वह अपनी परीक्षा में पूरे उतरे और सफल हुए तो अल्लाह ने काबा को किबला बना दिया। कुरान कहता है-

इस प्रकार हमने तुमको मोतदिल (संतुलित) उम्मत (कौम) बनाया ताकि तुम लोगों पर गवाह बनो और रसूल तुम पर गवाह हो। जिस किबले पर पहले तुम थे उसको हमने इसलिए निश्चित किया था कि हम यह जान लें कि कौन नबी की बात मानता और स्वीकार करता है और उसके आदेश का पालन करता है। और कौन उसका उल्लंघन करता है। यह बात लोगों पर गरां (भारी) मालूम हुई। परन्तु अल्लाह ने जिनको हिदायत दी

(सुरह बकरा 43)

मुसलमानों ने अल्लाह के आदेश का पालन करते हुए अपना किबला बदल दिया फिर वह किबला क्यामत तक के लिए मुसलमानों का हो गया जहाँ कही भी होंगे काबा की तरफ रूख़ करके नमाज पढ़ना पड़ेगी।

www.abulhasanalinadwi.org

मदीने के मुसलमानों से कुरैश की छेड़ छाड़

जब कुरैश ने यह जान लिया कि इस्लाम ने मदीने में अपने कदम पूरी तरह जमा लिये हैं और दिन प्रतिदिन उन्नति के मार्ग पर हैं। उसकी ताकत शक्ति में हर रोज बढ़ोत्तरी हो रही है तो उनकी दुश्मनी मुसलमानों के खिलाफ़ और बढ़ गई। उन्होंने अपनी चौधराहट व नेतागीरी हाथ से जाते देखी तो बहुत शोर मचाया और वावेला किया। अल्लाह ने उस समय सब्र (सहन) करने क्षमा और शांत रहने की शिक्षा दी और मुसलमानों से अल्लाह ने फरमाया कि-

"अपने हाथ रोको नमाज से गफ़लत न करना"- (नमाज बराबर पढ़ते रहो)

जंग की अनुमति

जब मुसलमानों की ताकत और शक्ति बढ़ गयी और उनके हाथ मजबूत हुए तो अल्लाह ने उनको जंग करने की अनुमति प्रदान की। लेकिन उसको अनिवार्य नहीं किया। आपने फरमाया कि "अल्लाह ने उनको जंग करने की आज्ञा दे दी है (जिनमें बेमतलब) लड़ाई की जाती है। ताकि जो अत्याचार उन पर हो रहा है वह बंद हो। बेशक अल्लाह उनकी मदद और सहायता पर कुदरत रखता है।

सराया और गजव-ए-अबवा

हुजूर ने भिन्न भिन्न कबीलों और इलाकों (क्षेत्रों) में सराया भेजना प्रारम्भ किया। इसकी रूप रेखा वास्तव में जंग की नहीं होती थी। इसको बल प्रदर्शन या छोटो मोटी छेड़ छाड़ कह सकते हैं। इसका अर्थ केवल यह था कि मुशरिकीन के दिलों में डर (भय) बढ़ जाये

www.abulhasanalinadwi.org

और मुसलमानों की शान शौकत का सिक्का उन पर जम जाये। रसूलुल्लाह व्यक्तिगत रूप से गजवा अबवा में शरीक हुए यह पहला गजवा था जिसमें आप शरीक हुए।

रमजान के रोजों की अनिवार्यता (फरजीयत)

वर्ष 2 हिज़री में मुसलमानों पर रोजे फर्ज (अनिवार्य) हुए। और अल्लाह ने फरमाया कि-

अनुवाद- ऐ ईमान वालो अल्लाह ने तुम पर रोजे फर्ज किये। जिस तरह तुमसे पूर्व लोगों पर फर्ज (अनिवार्य) किये गये थे। ताकि तुम परहेजगार (बचने वाले) बनो"। (सूरह बकरह 183) दूसरे स्थान पर फरमाया।

अनुवाद- "रमजान का महीना जिसमें कुरान नाजिल (उतरा) हुआ जो लोगों का रहनुमा (मार्ग प्रदर्शक) है जिसमें हिदायत की खुली निशानियां (लक्षण) है और हक बालित को अलग अलग करने वाला है। तुम में से जो भी इस महींने में मौजूद हो उसको चाहिए कि वह पूरे माह के रोजे रखे"।

(सूरह बकरह 185)

बद्र की फैसलाकुन जंग (निर्णायक युद्ध)

हिजरी के दूसरे वर्ष रमजान के महीने में बद्र की जंग (युद्ध) हुई। इसको अल्लाह ने यौमुल फुरकान (निर्णायक दिन) कहा। अल्लाह फरमाता है।

www.abulhasanalinadwi.org

"यदि तुम अल्लाह पर और उस पर (जो मदद के तौर पर) हमने हक व बातिल के फैसले और दो फरीको के मुठभेड़ के दिन बद्र की जंग के दिन अपने बन्दे (मुहम्मद) पर उतारा, ईमान रखते हो"।

(अनाफाल : 41)

जब रसूलुल्लाह को यह सूचना प्राप्त हुई कि अबू सुफियान एक बड़े तिजारती काफिले (व्यापार मण्डलों) को शाम से मक्का ले जा रहे हैं। जिसमें बड़ा माल व असबाब (सामान) है। यह वह समय था जब मुसलमान और मुशरिकीन के बीच लड़ाई आरम्भ हो चुकी थी। मुशरेकीन ने सारा जोर (शक्ति) मुसलमानों से लड़ने पर लगा रखा था और उनके दस्ते (टुकड़ियाँ) मदीनें की सीमा पर चरागाह तक पहुँचने लगे। उस समय तक अबू सुफियान मुसलमानों का सख्त मुखालिफ और दुश्मन था। आपको यह सूचना मिलने पर कि अबू सुफियान काफिले के साथ है। आपने उस काफिले को आगे बढ़कर रोकने के आदेश दिये किन्तु उसके लिए आपने कोई विशेष प्रबन्ध नहीं किया केवल इस कारण कि यह एक व्यापारिक काफ़िला है। उधर अबू सुफियान को यह सूचना मिली कि रसूलुल्लाह उससे लड़ने के लिए मदीने से रवाना हो चुके हैं उसने तुरन्त अपना एक आदमी मक्का भेजा कि वह मुसलमानों के खिलाफ उसकी सहायता करें। जब यह सूचना मक्का पहुँची तो वह शीघ्र जंग के लिए तैयार हो गये। इस जंग में अबु लहब के अलावा (अतिरिक्त) सभी सरदार शरीक हुए। उसने भी अपना बदल भेजा कोई व्यक्ति इस जंग में शरीक होने से नहीं बचा जब रसूलुल्लाह को यह जानकारी हो गयी कि कुरैश का एक लशकर मक्का से रवाना हुआ तो आपने अपने असहाब (साथियों) से परामर्श किया। जिसमें अंसार की ओर से संकेत था इसलिए उन्होंने आपसे इस बात पर बैअत की थी कि वह मदीने में आपका हर प्रकार का सहयोग तथा सहायता करेंगे और आपकी रक्षा करेंगे। जब आपने मदीने से

www.abulhasanalinadwi.org

निकलने का इरादा फरमा लिया तो आपने यह जानना चाहा कि अंसार अब क्या सोच विचार कर रहे हैं। सबसे पहले मुहाजिरीन ने अपनी बात रखी तथा अपनी शिरकत अपना सहयोग तथा मदद का आपको विश्वास दिलाया। फिर आपने दोबारा परामर्श किया तो अंसार को यह एहसास हुआ कि हुजूर उनकी राय (परामर्श) जानना चाहते हैं। तो सअद बिनमआज ने तुरन्त उत्तर दिया कि ए अल्लाह के रसूल आप हमसे हमारी राय जानना चाहते हैं कि अंसार ने आपकी मदद (सहायता) का वादा आपसे वतन तथा भूमि पर किया है। मैं अंसार की ओर से आपको विश्वास दिलाता हूँ और निवेदन करता हूँ कि आप जहाँ चाहें प्रस्थान करें। जिससे चाहे सम्पर्क स्थापित करें या तोड़े, हमारा धन व दौलत में से जितना आप धन लेना चाहें आप ले लें। जो आप हमें देना चाहे दे दें। आप हमसे जो लेंगे वह हमें अधिक पसन्दीदा होगा। उसके मुकाबले जो आप हमारे लिये छोड़ेंगे। आप जो आदेश देंगे उनका पालन हमारा कर्तव्य होगा। खुदा की कसम आप यदि हमें गमदान से बरक तक पहुँचने के लिए कहेंगे तो हम आपके साथ होंगे। खुदा की कसम यदि आप समुद्र में दाखिल होंगे तो हम आपके साथ समुद्र में कूद पड़ेंगे। मिकदाद ने आपसे कहा कि हम आपसे वह न कहेंगे जो मूसा अलैहिस्सलाम से उनकी कौम ने कहा था कि तुम और तुम्हारे खुदा जाकर लड़ो हम तो यहाँ बैठे हैं। लेकिन हम आपके साथ आपके शाना बशाना, आपके आगे और आपके पीछे, आपके दाये और बाये जंग करेंगे। जब आपने यह बात सुनी तो आपका चेहरा हर्ष (खुशी) से दमक उठा और आपकी अपने साथियों की राय जानने से बड़ी प्रसन्नता हुई और फरमाया चलो और खुशखबरी प्राप्त करो।

लड़कों में जिहाद का शौक

जब मुसलमानों ने बद्र का रूख किया (बद्र की ओर प्रस्थान किया) एक लड़का निकला। जिसका नाम उमैर बिन अबी वक्कास

www.abulhasanalinadwi.org

था। उसकी आयु 16 वर्ष थी। उनको यह भय था कि अपनी कम आयु के कारण कहीं रसूलुल्लाह उनको अस्वीकार न कर दें। यह इस प्रयास में रहे कि उनको कोई देख न सके। इस कारण वह छिपते फिर रहे थे। उनके बड़े भाई सअद बिन अबी वक्कास ने इसका कारण जानना चाहा तो उनको बताया कि मेरी इच्छा इस जंग में निकलने की है। लेकिन डरता हूँ कि कहीं रसूलुल्लाह मुझे लौटा न दें। शायद अल्लाह ने मेरे नाम शहादत लिख दी हो। वही हुआ जिसका डर (भय) था। रसूलुल्लाह ने इरादा फरमाया कि उनको लश्कर में शरीक होने से रोक दें क्योंकि वह अभी पूरे जवान नहीं थे। उमैर रोने लगे तो आप को दया आ गयी और आपने उनको अनुमति प्रदान कर दी वह जंग में लड़े और शहीद हुए।

काफिरो और मुसलमानों की संख्या का अन्तर

आप तेजी से मैदाने जंग की तरफ बढ़े। मुसलमानों की तादात (संख्या) 313 थी। आपके पास केवल दो घोड़े, 60 ऊँट थे। एक एक पर दो दो तीन तीन आदमी सवार होते थे। एक साधारण सिपाही तथा अधिकारी में कोई अन्तर नहीं था। उनमें आप हज़रत अबू बक्र व उमर और दूसरे सहाबा भी शामिल थे।

आपने झण्डा मुसअब बिन उमैर तथा मुहजिरीन का झण्डा हज़रत अली को दिया और अंसार का झण्डा सअद बिन मुआज के हाथ में दिया। जिहाद में मुसलमानों के निकलने की जब अबू सुफियान को सूचना मिली तो वह साहिल समुन्द्र के नीचे की ओर आ गया और वह संतुष्ट था कि वह अब ख़तरे से बाहर है। और काफिला भी सुरक्षित है। उसने कुरैश को लिखा कि तुम काफ़िले की रक्षा के लिए निकले थे अब उसकी आवश्यकता नहीं है। इसलिए तुम अब वापस

www.abulhasanalinadwi.org

लौट जाओ अबू जहल ने वापस जाने से इनकार किया और जंग करने पर इसरार किया। कुरैश की संख्या हजार से ऊपर थी। उसमें कौम के बड़े बड़े सरदार, जंगजू, युवक और माने हुए (अनुभवी) घुड़सवार तथा सिपाही शामिल थे। उनको देखकर हुजूर ने फरमाया कि आज मक्का ने अपने जिगर के टुकड़ों को तुम्हारे सामने डाल दिया।

रात तक आप और आपके साथी पानी तक पहुँच गये। पहुँचने के बाद वहां पानी का जखीरा करने के लिए हौज बनाये और उनसे पानी पीने से आपने कुफ़्फार को भी नहीं रोका। अल्लाह ने उस रात वर्षा की। यह वर्षा मुशरिकीन के लिए कठिनाई का सामना बन गई। उनका आगे बढ़ना रूक गया। वह वर्षा मुसलमानों के लिए रहमत थी। वर्षा से रेत जम गयी और मौसम सुहाना हो गया। अल्लाह ने मुसलमानों के दिलों को इतमीनान बख्शा (संतुष्ट किया) अल्लाह ने फरमाया-

"अल्लाह ने वर्षा की ताकि तुम उस पानी से नहाकर पवित्र हो जाओ और तुमसे शैतानी गंदगी दूर कर दे। तुम्हारे दिलों को मजबूत कर दे और तुम्हारे पैरों को जमा दे।

(सूरह- अनफाल 11)

जंग की तैयारी

रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के लिए मैदाने जंग के सामने एक स्थान पर एक छप्पर डाल दिया गया। उसके पश्चात आप मैदान में तशरीफ़ लाये और इशारे से बताया कि फुला आदमी यहाँ और फुला आदमी वहाँ इन्शअल्लाह मारा जायेगा। कोई बात इसके विपरीत (खिलाफ) नहीं हुई सुबह दोनों लश्कर आमने सामने आ गये तो आपने इरशाद फरमाया कि-

"ऐ अल्लाह आज कुरैश के लोग बड़े गर्व और घमन्ड के साथ आए कि तुझसे लड़ें और तेरे रसूल को झुठलाएं।

www.abulhasanalinadwi.org

वह रात जुमा (शुक्रवार) की रात और रमजान की 17 तारीख थी। सुबह हुई तो दोनों फौज आमने सामने थी।

अल्लाह के हुजूर आपकी दुआ (प्रार्थना)

रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने सफ़ो को ठीक किया और आप अपने छप्पर में आ गये। आपके साथ हज़रत अबूबक्र ने भी प्रवेश किया। आपने दुआ (प्रार्थना) में किसी प्रकार की कमी नहीं की। आप जानते थे कि सहायता में मदद अल्लाह की तरफ से आयेगी। आपने फरमाया कि ऐ अल्लाह यदि आज यह जमाअत हलाक हो गयी तो फिर इसके बाद तेरी पूजा करने वाला कोई नहीं होगा। आप अपने पैदा करने वाले से कह रहे थे कि ऐ अल्लाह जिस चीज़ का तूने मुझसे वादा किया है। वह तो आज पूरा कर दे। ऐ अल्लाह आपकी मदद और सहायता की अधिक आवश्यकता है। आप अपने हाथ आसमान की ओर उठाते थे और दुआ करते थे। इस हालत में आपकी चादर आपके कंधों से गिर गयी। हज़रत अबू बक्र आपको तसल्ली देते। और आपको संतोष दिलाते। हजरत अबू बक्र से आपकी गिरया वजारी देखी नहीं जाती थी। इसके पश्चात आप लश्कर (सेना) के सामने आये। उनमें जिहाद और शहादत का शौक पैदा किया। सबसे पहले उतबा बिन रबीआ़, उसका भाई शेबा और उसका पुत्र वलीद निकले। उनके मुकाबले के लिए अंसार के तीन युवक निकले। तो वे बोले कि तुम कौन हो। उन्होंने उत्तर दिया कि हम अंसार में से हैं। फिर वे बोले शरीफ लोग हो- जाओ, तुम हमारे जोड़ के नहीं हो। तब आपने फरमाया कि खड़े हो जाओ उबैदा बिन हारिस बिन मुत्तलिबबिन अब्दे मनाफ खड़े हो जाओ ए हमजा और ए अली वह लोग बोले हाँ अब यह हमारे जोड़ के हैं। हजरत उबैदा ने उतबा, हजरत हमजा ने शैबा को तथा हजरत अली ने वलीद को मुकाबले की दावत (निमंत्रण) दी।

www.abulhasanalinadwi.org

हजरत हमजा और अली ने अपने दोनों दुश्मनों को क़त्ल कर दिया। लेकिन हजरत उबैदा और उतबा का सख्त मुकाबला हुआ। निर्णय नहीं हो पा रहा था कि हजरत हमजा और अली ने उतबा को मार डाला। हजरत उबैदा को जख्मी हालत में उठा ले गये। बाद में वह शहीद हुए।

जंग की शुरूआत और सेनाओं का आमना सामना

उस समय दोनों लश्कर जंग कर रहे थे और एक दूसरे के करीब हो गये थे तो रसूलुल्लाह ने फरमाया कि बढ़ो जन्नत (स्वर्ग) की तरफ की चौड़ाई आसमान और जमीन के बराबर है।

प्रथम शहीद

उमैर बिन हम्माम खड़े हुए और कहा कि या रसूलल्लाह जन्नत जिसकी चौड़ाई आसमान जमीन के बराबर है। आपने फरमाया वह कहने लगे वाह वाह आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने पूछा कि इसका क्या अर्थ है उन्होंने कहा कुछ नहीं। बस या रसूलल्लाह मुझे ख्याल आया कि जन्नत शायद मेरी किस्मत (भाग) में है। आपने फरमाया हां तुम्हारे भाग में वह जन्नत है। फिर उन्होंने अपने थैले से कुछ खजुरें निकालीं। और उसमें से खाने लगे। फिर स्वयं बोले कि यदि मैंने अपना समय खजूर खाने में बिता दिया तो बहुत देर हो जाएगी। बची हुई खजुरों को फैका और मैदाने जंग में कूद पड़े और (शहीद) हुए यह प्रथम शहीद थे। दूसरी ओर मुसलमान सफ बांधे सब्र शुक्र के साथ अल्लाह के ध्यान के साथ तैयार पक्तिबद्ध खड़े थे। आपने पूरी तरह जंग में भाग लिया आप दुश्मन के अधिक करीब थे। आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) दुश्मन के मुकाबले में सबसे जियादा सख़्त लड़ने वाले थे। अल्लाह ने मुसलमानों की मदद (सहायता) के

www.abulhasanalinadwi.org

लिए फरिश्ते भेजे उन्हींने मुशरिकीन से जंग की।

जिहाद व शहादत के शौक में 2 युवकों की प्रतियोगिता

युवकों में शहादत (कल्याण) को प्राप्त करने की प्रतियोगिता थी। अल्लाह के दीन को ऊँचा दिखाने के लिए उनमें जिहाद व शहादत की उमंग व शौक (इच्छा) पैदा हुई और एक भाई दूसरे भाई के मुकाबले एक मित्र दूसरे मित्र तथा परिवार के अन्य सदस्यों से इस कार्य में बढ़ जाना चाहता था। हजरत अब्दुल्लाह बिन औफ कहते हैं कि मैं बद्र के मैदान में अपनी सफ में था कि मेरी नजर 2 युवकों पर पड़ी जो मेरे दाहिने और बाँए तरफ थे। मैं अभी सोच ही रहा था कि जैसे उनके बीच में महफूज नहीं हूँ कि उनमें से एक ने आकर चुपके से मेरे कान में कहा कि ऐ चचाजान मुझे जरा अबू जहल को दिखा दीजिये मैंने उस बच्चे से पूछा कि ऐ भतीजे उससे तुम्हें क्या काम? वह बोला कि मैंने अल्लाह से अहद (प्रतिज्ञा) किया है कि मैं जहाँ कही अबू जहल को देखूँगा उसको अवश्य मारूँगा। या अपनी जान दे दूंगा। दूसरे बच्चे युवक ने भी मुझसे यही बात की। मैंने अबु जहल की ओर इशारा (संकेत) किया ही था कि वह उकाब की तरह उस पर टूट पड़े और मार डाला। जब उन्होंने अबु जहल को कत्ल कर दिया तो हुजूर ने फरमाया कि यह अबु जहल है जो इस उम्मत का फ़िरऔन था।

स्पष्ट विजय

जब बद्र की जंग मुसलमानों की सफलता तथा विजय और मुशरिकीन की पराजय पर समाप्त हुई तो आप(सल्ललाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया कि अल्लाह बड़ा है अल्लाह ही के लिए प्रशंसा है जिसने अपने वादे वचन को सत्य कर दिखाया और जिसने अपने

www.abulhasanalinadwi.org

बन्दों की सहायता की और जिसने तनहा दुश्मन को पराजित किया और अल्लाह तआला ने सच फरमाया-

अल्लाह ने तुम्हारी बद्र की जंग में उस समय सहायता की जब तुम बड़ी बेसरो सामानी में थे। अल्लाह से डरो ताकि तुम शुक्र गुज़ार (कृतज्ञ) हो।

(सूरह आल इमरान 123)

आपने आदेश दिया कि कुफ़्फार के सब मारे जाने वाले (शव) एक कुएं में डाल दिये जायें। उनको कुंए में डाल दिया गया। आपने खड़े होकर फरमाया कि ऐ कुलैब वालो तुमने वह पाया जिसका अल्लाह ने तुमसे वादा (वचन) किया था और हमने वह पा लिया जिसका उसने हमसे वादा किया था।

इस जंग में कुफ़्फार (मुशरेकीन) के 70 नामी गिरामी सरदार मारे गये और 70 ही बन्दी बनाये गये। कुरैश के 6 और अंसार के 8 व्यक्ति शहीद हुए। बंदियों को आपने अपने असहाबा (साथियों) में बांट दिया कि वह उनके साथ अच्छा (मुआमला) मामला करें।

जंगे बद्र के पश्चात लोगों पर उसका प्रभाव

रसूलुल्लाह बद्र की जंग में सफल तथा विजय होकर मदीने लौटे। मदीना और उसके आस पास के इस्लाम दुश्मन खौफज़दा हो गये उस समय मदीने तथा उसके आस पास के क्षेत्रों के बहुत से लोग मुसलमान हो गये। और मक्का के मुशरिकीन के घरों में शोक मनाया गया। सरदारों के कत्ल होने पर रोना पीटना मच गया और अल्लाह ने मुशरिकीन के दिलों में रोब, डर (भय) डाल दिया।

www.abulhasanalinadwi.org

मुसलमान बच्चों की शिक्षा के बदले बन्दियों की रिहाई

रसूलुल्लाह (सल्ललाहु अलैहि व सल्लम) ने बन्दियों के साथ नम्रता व क्षमा का मामला फरमाया। उनका फिदया स्वीकार किया और जो फिदया देने के योग्य नहीं थे उनको आपने बिना फिदया लिए आजाद कर दिया। कुछ ऐसे भी बंदी थे जिनका फिदया कुरैश ने भेजकर उनको आज़ाद कर लिया।

कुछ ऐसे भी थे जिनका फिदया यह था कि वह अनसार के बच्चों को शिक्षा दे। हर आदमी 10 मुसलमानों को लिखना पढ़ना सिखलायेगा। उन्हीं में जैद बिन साबित हैं। जिन्होंने इस प्रकार शिक्षा प्राप्त की।

बनू कैन काअ़ वह पहले यहूदी हैं जिन्होंने समझौते को तोड़ा और मुसलमानों को कष्ट और तकलीफ पहुँचाई। रसूलुल्लाह (सल्ललाहु अलैहि व सल्लम) ने उनका 15 दिन तक मुहासरा (नाकाबंदी) किया यहाँ तक कि उन्होंने आत्मसमर्पण कर दिया। अब्दुल्लाह बिन उबई (मुनाफिको का सरदार) ने उनकी सिफारिश (प्रार्थना, अनुशंसा) की। उसका लेहाज करते हुए आपने नाकाबंदी समाप्त कर दी। सात सौ लड़ने वाले जवान थे जो सुनारी का काम करने वाले तथा व्यापारी थे।

मूर्खता का स्वाभिमान तथा प्रतिकार की भावना

उहुद की जंग

जाहिली हमिय्यत और बदले की भावना

जब कुरैश के बड़े बड़े सरदार बद्र में कत्ल हो गये और कुछ

www.abulhasanalinadwi.org

आजाद होकर मक्का में पहुँचे तो उन पर कठिनाइयों और कष्टों के पहाड़ टूट पड़े। वह सब जिनके बाप, भाई, बेटे तथा परिवार लोग बद्र में मारे गये, उन्होंने अबू सुफियान से बात की और उस तिजारती माल में जिनका हिस्सा था उन सभी से बात की कि वह अपना माल तिजारती मुसलमानों के विरूद्ध जंग के लिए सहायता में दें और उन्होंने ऐसा ही किया। कुरैश आपके विरूद्ध लड़ने के लिए जमा हुए। कवियों ने अपनी कविताओं से उनको लड़ने पर उकसाया और उनको लज्जा और गैरत दिलाई।

हिजरत के तीसरे वर्ष शव्वाल के माह में कुरैश अपने सपूतों और सहयोगी कबीलों के साथ आपसे जंग करने के लिए निकल पड़े। सरदारों ने अपने साथ अपनी पत्नियों को भी लिया और मदीने के सामने पड़ाव डाल दिया।

हुजूर की राय थी कि मुसलमान मदीने में ही रहें और मुशरिकीन से किसी प्रकार की छेड़-छाड़ न करें। लेकिन यदि वह स्वयं हमला करें तो फिर उनसे बाकाएदा जंग की जाये। हुजूर को यह बात पसन्द नहीं थी कि मुसलमान मदीना छोड़कर, बाहर निकल कर उनसे जंग करें। अब्दुल्लाह बिन उबई की भी यही राय थी जो आप की थी। लेकिन मुसलमानों में से कुछ लोग जो बद्र में शरीक नहीं हुए थे वह कहते थे कि अल्लाह के नबी आप मदीने से बाहर निकल कर उनसे लड़िये ताकि वह यह न समझें कि मुसलमान बुज़दिल और कायर हो गये हैं। वह लोग इस पर इसरार करने लगे तो आप घर तशरीफ़ ले गये और ज़िरह पहन कर बाहर तशरीफ़ लाये। आपको ज़िरह पहने देख कर उन लोगों को बड़ी लज्जा आयी और शरमिन्दा हुए जो मदीने से बाहर लड़ने का मशवरा (परामर्श) दे रहे थे। उन्होंने आपसे कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल हमने आपकी (मर्जी) इच्छा के विरूद्ध बात की। हमें ऐसी बात नहीं करनी चाहिए थी। आप तशरीफ़ रखें। आपने उनसे

www.abulhasanalinadwi.org

फ़रमाया कि नबी की यह शान नहीं कि वह जब ज़िरह पहन ले तो उसको बिना जंग किये उतार दे। हुज़ूर अपने एक हज़ार साथियों के साथ जंग के लिए मदीने से बाहर तशरीफ लाये। आप मदीने और उहुद के बीच में थे कि अब्दुल्लाह बिन उबई अपने एक तिहाई आदमियों के साथ वापस लौट गया। और कहने लगा कि हुज़ूर ने मेरी बात ठुकरा दी और नव युवकों की बात स्वीकार कर ली।

उहुद के मैदान में

मदीने से तीन किलो मीटर दूर पहाड़ों के दामन में पहुँच कर आपने पड़ाव डाला। आपने अपनी पीठ उहुद की ओर की और उसी शक्ल (सूरत) में लशकर को भी तैयार किया फिर आपने फरमाया कि मैं जब तक जंग के लिए न कहूं कोई जंग न छेड़े। फिर आपने जंग की तैयारी की। आपके साथ 700 (सात सौ) लोग थे। आपने अब्दुल्लाह बिन जुबैर को तीरंदाजी के लिए आदेश दिये। वह सब 50 आदमी थे। आपने उनसे फरमाया कि तीरंदाजी से घोड़ों को आगे बढ़ना रोकें। पीछे से कोई भी किसी प्रकार न आने पाये चाहे जंग हमारे हक में हो या हमारे खिलाफ़ जिसको जिस कार्य के लिए नियुक्त किया है वह उस पर जमा रहे चाहे वह अपनी आँखों से देख रहा हो कि लश्कर को चिड़िया उठाये लिये जा रही हैं। आपने इस जंग में दोहरी जिरह पहनी और परचम (झण्डा) मुसअब बिन उमैर को दिया।

हम उम्र (युवकों) में प्रतियोगिता

नव युवकों की एक जमाअत उहुद की जंग में उपस्थित हुई उनमें समुरा बिन जुनदुब, राफे बिन खुदैज (यह दोनों 15 वर्ष के थे) अबू राफ़े ने अपने पुत्र की हुज़ूर से सिफ़ारिश की उनका पुत्र बड़ा तीरंदाज है। आपने उनको अनुमति प्रदान की। फिर समुरा बिन जुनदुब आपकी

www.abulhasanalinadwi.org

सेवा में उपस्थित हुए यह राफ़े के आयु (उम्र) के थे। आपने उनको कम आयु होने के कारण वापस कर दिया। समुरा ने आपसे अनुरोध किया कि आपने राफ़े को अनुमति प्रदान की है और मुझे आपने वापस कर दिया। हम दोनों में यदि कुश्ती हो तो मैं जीत जाऊंगा। दोनों के बीच कुश्ती हुई समुरा ने राफ़े को हरा दिया। फिर आपने समुरा को भी आज्ञा प्रदान कर दी वह निकले और जंग में शरीक हुए।

जंग (लड़ाई) युद्ध

जंग प्रारम्भ हुई। एक दूसरे से गुतथम गुतथा हो गये। महिलाओं में हिन्दा बिंत उतबा खड़ी दफ़ बजा रही थी और जंग के लिए लोगों को तैयार कर रही थी। जब घमासान की लड़ाई लड़ी जाने लगी तो अबू दुजाना ने आपसे तलवार ली और मैदाने जंग में कूद पड़े और आपसे कहा कि मैं इस तलवार का हक अदा करूंगा। उनकी तलवार के सामने जो कोई आता वह जिन्दा बचकर नहीं जा पाता।

हज़रत हमजा ने अपनी बहादुरी (वीरता) का जबरदस्त प्रदर्शन किया और कितने सुरमाओं को उन्होंने मौत के घाट उतार दिया। उनके सामने कोई टिक न सका। लेकिन जुबैर बिन मतअम का वहशी गुलाम उनकी ताक में था वह भाला चलाने का माहिर (विशेषज्ञ) था। जुबैर ने उसको विश्वास दिलाया था कि यदि वह हमजा को शहीद कर देगा तो वह उसे आज़ाद कर देंगे। वह बदला लेना चाहता था। बद्र में हजरत हमज़ा ने जुबैर के चाचा को कत्ल किया था। इसी प्रकार हिन्दा अबू सुफयान की पत्नी जो हजरत हमजा के कत्ल पर उकसा रही थी उनकी शहादत से अपना कलेजा ठन्डा करना चाहती थी। वहशी ने हजरत हमजा पर भाले से हमला किया वह उनकी नाफ से बाहर निकल गया और हजरत हमजा शहीद हो गये। मुसअब बिन उमैर रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के बचाव में जम कर लड़ते रहे और

www.abulhasanalinadwi.org

आप पर कुरबान हो गये। मुसलमान हर आज़माइश (परीक्षा) में पूरे उतरे। और अल्लाह ने उन पर मदद उतारी और अपना वचन पूरा किया। मुशरिकीन को सख्त हानि हुई। वह महिलायें जो मर्दों को गैरत दिलाने (उत्तेजित करने) आई थी मैदान से भाग खड़ी हुईं।

मुसलमानों के खिलाफ जंग का पांसा कैसे पलटा

मुशरिकीन पराजय के बाद भागने लगे, महिलाओं ने भी भागना शुरू किया तो तीरंदाजों ने अपना स्थान छोड़ दिया और लशकर से आकर मिल गये। उनको अपनी (मुसलमानों की) सफलता का पूर्ण विश्वास था और वह कहते थे ऐ कौम माले गनीमत! माले गनीमत! उनके सरदार ने उनको रसूलुल्लाह से किया वादा याद दिलाया पर उस पर उन्होंने कोई ध्यान नहीं दिया और वह यह समझते रहे कि मुशरिकीन अब वापस नहीं लौट सकते। इसलिए उन्होंने महाज (युद्ध स्थल मोर्चा) खाली छोड़ दिया। मुशरिकीन के झण्डे को जो लिये थे वह मारे गये थे। झण्डे के करीब आने का साहस नहीं था। उसी समय मुशरिकीन ने पीछे से आकर आवाज लगाई कि मुहम्मद सल्लाहु अलैहि वसल्लम शहीद कर दिये गये। यह सुनकर मुसलमानों का लशकर पीछे मुड़ा। इस मौके से उन्होंने पूर्ण लाभ उठाया यह मुसलमानों के लिए बड़ी आजमाइश व परीक्षा थी। इस बीच दुश्मन हुजूर के करीब पहुँच गये। एक पत्थर आपके लगा आप दाये पहलू एक गार में गिर पड़े सामने का एक दांत जख्मी हो गया सरे मुबारक पर जख्म आया। लबे मुबारक खून आलूद हो गया और खून चेहरे मुबारक पर बह रहा था। उसको पोछते थे और फरमाते थे कि वह कौम कैसे सफल हो सकती है। जो अपने नबी के चेहरे को केवल इसलिए खून से तर कर दे कि वह उनको अल्लाह की तरफ बुलाता है। मुसलमानों को

www.abulhasanalinadwi.org

आपके बारे में जानकारी नहीं थी कि आप कहां हैं। हज़रत अ़ली ने आपको सहारा दिया और हज़रत तलहा ने आपको उठाया। आप खड़े हो गये। मालिक बिन सिनान ने आपके चेहरे अक़दस से खून साफ किया और उसको नोश कर लिया। वास्तव में यह फ़रार (भागना) ना था बल्कि यह जंगी हिकमते अ़मली (रणनीति) थी जो आवश्यकतानुसार सेना प्रयोग करती है। और संभलकर दोबारा हमला (आक्रमण करती है।) मुसलमानों को आजमाईश की जिस तलखी का मजा चखना पड़ा, और जिसमें इन्सानी मूल्यवान जानों की हानि हुई और जो शहीद हुए वह इस्लाम और मुसलमानों की ताकत थे। अल्लाह उनके रसूल और उसके दीन की मदद करने वाले थे। यह केवल तीरंदाजों का रसूल (सल्ललाहु अलैहि व सल्लम) के आदेश का उल्लंघन का परिणाम था कि उन्होंने वह स्थान छोड़ दिया जिसको न छोड़ने का हुजूर ने आदेश दिया था। अल्लाह फरमाता है: और खुदा ने अपना वअ़दा सच्चा कर दिया यअ़नी उस वक्त जब कि तुम काफिरों को उस हुक्म से क़त्ल कर रहे थे, यहाँ तक कि जो तुम चाहते थे खुदा ने तुमको दिखा दिया उसके बअ़द तुमने हिम्मत हार दी और (पैगम्बर के) हुक्म में झगड़ा करने लगे और उसकी नाफरमानी की, कुछ तो तुममे दुनिया चाहते थे कुछ आख़िरत चाहते थे। उस वक्त खुदा ने तुमको उनके मुक़ाबले से फेर दिया ताकि तुम्हारी जाँच करे और उसने तुम्हारा कुसूर मुआफ कर दिया और खुदा मोमिनों पर बड़ा फज्ल करने वाला है।

(आलि इम्रान : 152)

महब्बत (प्रेम और जान निसारी का नया नमूना

अबू उबेदा बिन जरोह ने खौद (फ़ौलादी टोपी) की एक कड़ी को अपने दांत से पकड़ कर निकाला तो उसी के साथ उनका दांत भी

www.abulhasanalinadwi.org

गिर गया। इसी तरह दूसरी कड़ी निकालने में दूसरा दांत गिर गया अबू दुजाना आप पर ढाल बनकर खड़े हो गये। और आप पर झुके रहे यहाँ तक कि उनकी पीठ तीरों से छलनी हो गयी। सऊद बिन वक्कास हुजूर के दिफा (रक्षा) में तीर चला रहे थे। आप अपने दस्ते मुबारक के तीर देते और फरमाते कि मेरे मां बाप तुझ पर फिदा तीर चलाते रहो कतादा बिन नोमान की आंखों पर ऐसी चोट लगी कि आंख निकल कर उनके गाल पर आ गई। आपने उनकी आंख को उसी जगह (स्थान) रख दिया तो वह आँख पहली आँख से भी अधिक तेज हो गयी।

मुशरेकीन आपकी तलाश में थे और अल्लाह का बुरा इरादा था कि दस आदमी आपके सामने आ गये और सब एक एक कर कुरबान हो गये। आखिर में हजरत तलहा ने अपना हाथ सामने कर दिया और तीरों को रोकना आरम्भ कर दिया। आपकी अंगुलियां जख्मी हो गई और हाथ बेकार हो गया। वहीं आप एक चट्टान पर चढ़ना चाहते थे। लेकिन आप उस पर कादिर (समर्थ) नहीं थे। हजरत तलहा नीचे बैठ गये आप उनके सहारे चट्टान पर चढ़ गये। नमाज का समय हो गया आपने बैठ कर नमाज पढ़ी। उस समय लोग हार थक कर बिखर रहे थे। लेकिन अनस बिन मालिक जो आपके ख़ादिम थे, आगे बढ़ते रहे। सअ़द बिन मआज़ उनसे रास्ते में मिले तो पूछा कि किधर का इरादा है। अनस ने उत्तर दिया कि सअ़द मुझे तो जन्नत की खुशबू आ रही है। अनस मुहाजिरीन व अंसार के पास से गुजरे और देखा कि वह हाथ पर हाथ रखे बैठे थे। अनस ने उनसे कहा कि तुम लोग यहाँ बैठे क्या कर रहे हो उन लोगों ने उत्तर दिया कि रसूलुल्लाह शहीद कर दिये गये। अब आपके बाद जीवन में रखा ही क्या है। उठो और जान दे दो जिस पर आपने जान दे दी। यह कहकर आगे बढ़े और जान दे दी। अनस कहते हैं कि हमने उनके जिस्म (शव) पर 70 जख्म देखे। उनका पहचानना असम्भव था यदि उनकी बहन ने उनकी अंगुलियों के पोरों

www.abulhasanalinadwi.org

से उनको पहचान न लिया होता।

जियाद बिन सकन 5 अंसारियों के साथ आपकी रक्षा के लिए लड़ रहे थे और एक एक कर शहीद हो रहे थे। जियाद जखमों से चूर हो गये थे। तो आपने फरमाया कि इनको मेरे करीब ले आओ उनको आपके करीब लाया गया तो आपने उनके सर को कदम मुबारक पर रख लिया इस हालत में उनका इनतिकाल हुआ। उनके गाल आपके कदमों पर थे।

अम्र बिन जमूह जिनके पैर में लंग था (लंगड़े थे)। उनके चार जवान पुत्र थे और आपके साथ जंग में शरीक रहते थे। जब आपने उहुद के लिए इरादा फरमाया तो अम्र बिन जमूह ने भी आपके साथ चलने का इरादा किया उनके बेटों ने अपने बाप से कहा कि अल्लाह ने आपको इज्जत (आदर) दी है। आप शरीक न हों। आप आराम (विश्राम) करें। हम लोग जिहाद में शरीक होने जाते हैं। अल्लाह ने आप पर जिहाद फर्ज (अनिवार्य) नहीं किया। अम्र आपकी सेवा में उपस्थित हुए और कहा मेरे बेटे आपके साथ जिहाद में शरीक होने से रोकते हैं। और बाखुदा मुझे शहादत की आरजू (मनोकामना) है। मेरी इच्छा है कि मैं जन्नत में लंगड़े पैर चलूं। आपने उनसे फरमाया कि जहाँ तक तुम्हारा प्रश्न है अल्लाह ने तुमको जिहाद से मुआफ कर दिया है। फिर आपने उनके बेटों से फरमाया हरज ही क्या है। इनको जिहाद में जाने दो हो सकता है अल्लाह शहादत नसीब करे वह आपके साथ जिहाद उहुद में शरीक हुए और शहीद हो गये।

जैद बिन साबित ब्यान करते हैं कि मुझे रसूलुल्लाह (सल्ललाहु अलैहि व सल्लम) ने सऊद बिन रबीअ की खोज में भेजा और मुझसे फरमाया कि जब तुम उनको देखो तो मेरा सलाम कहना और उनसे कहना कि रसूलुल्लाह ने पूछा है कि इस समय तुम्हें क्या महसूस हो रहा है। वह कहते हैं कि मैंने उनको पहले मरने वालों में तलाश किया।

www.abulhasanalinadwi.org

जब मैं उनके पास पहुँचा तो उनका अंतिम समय था उन पर नेजे और तलवार के 70 जख्म थे। मैंने कहा कि सअद रसूलुल्लाह ने तुमको सलाम कहा है और कहा कि मुझे बतलाओ कि इस समय तुम क्या महसूस कर रहे हो वह बोले कि रसूलुल्लाह को मेरा सलाम कहना और कहना कि मैं जन्नत की खुशबू पा रहा हूँ। और मेरी कौम अंसार से कहना कि यदि दुश्मन रसूलुल्लाह तक पहुँच गये और तुममें दम रहा तो अल्लाह के पास कोई उज्र न होगा। उसके बाद आपका इन्तिकाल हो गया।

अब्दुल्लाह बिन जहश ने दुआ की कि ऐ अल्लाह कल मैं दुश्मन का मुकाबला करूं वह मुझे कत्ल कर दे फिर मेरा पेट चाक करें और मेरे नाक कान काट डालें फिर आप मुझसे पूछें कि यह सब किसके लिए है। और मैं उत्तर दूँ कि केवल तेरे लिये है।

मुसलमानों का दोबारा जमाव

जब मुसलमानों ने आपको देख लिया और पहचान लिया तो मुसलमानों को नया जीवन मिला एक बार फिर सब खड़े हो गये। आप उनको लेकर वादी की तरफ बढ़े रास्ते में उबई बिन ख़लफ मिला तो कहने लगा कि ऐ मुहम्मद यदि तुम बच गये तो मेरी खैर नहीं। आपने फरमाया कि इसको जाने दो लेकिन जब वह करीब आया तो आपने एक सहाबी से उसका नेजा लेकर उसकी गरदन पर मारा। वह घोड़े से गिरा और कई कलाबाजियां खाई।

उस समय हजरत अली अपनी मशक से आपके चेहरे मुबारक से खून साफ कर रहे थे हजरत फातमा भी उनके साथ धो रही थीं हजरत अली ढाल में पानी लेकर डालते थे। हजरत फातिमा ने देखा कि पानी से खून बन्द नहीं हो रहा है। तो उन्होंने चटाई का एक टुकड़ा जलाकर जख्म पर भर दिया था तो खून रूक गया।

www.abulhasanalinadwi.org

आयशा बिन्त अबूबक्र व उम्मे सुलैम इस गजवे में अपने मशकीजों में पानी लाद कर लातीं और ज़खमियों को पिलातीं। जब मशकीजे में पानी समाप्त हो जाता तो फिर जातीं और भरकर लातीं और जखमियों को पानी पिलातीं। उम्मे सुलैम उनके मशकीजे में भरतीं।

बिन्ते उतबा ने कुछ महिलाओं के साथ शहीदों के जिस्म (शव) की बेहुरमती करना उनकी नाक, कान काटना आरम्भ कर दिया। हजरत हमजा का जिगर निकाल कर चबाने लगी लेकिन वह उसे निगल न सकी इसलिए उसको उगल दिया।

जब अबू सुफियान वापस होने लगे तो पहाड़ पर चढ़कर जोर से चिल्लाये (चीखे) जंग का मामला डांवा डोल है। आज इसकी जीत है तो कल उसकी, हबुल का नाम ऊँचा रहे। रसूलुल्लाह ने फरमाया उमर खड़े हो जवाब (उत्तर) में कहा कि अल्लाह सबसे बड़ा और सबसे बुलन्द है हमारे मकतूलीन (शहीद) जन्नत में हैं। और तुम्हारे मुर्दे दोज़ख में है। अबू सुफियान ने कहा कि हमारे पास उज़्जा है। तुम्हारे पास उज्जा नहीं। नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया इनको जवाब दो सहाबा ने कहा कि रसूलुल्लाह क्या कहें। आपने फरमाया कहो कि अल्लाह हमारा सरपरस्त (संरक्षक) है तुम्हारा कोई संरक्षक नहीं है।

जब दोनों अलग अलग हुए तो बोले कि अगले वर्ष तुम्हारा मुकाबला फिर बद्र में होगा आपने अपने एक सहाबी से फरमाया कि कहो ठीक है यह हमारे तुम्हारे बीच तय (निश्चित) है।

लोगों को अपने मक़तूलीन का गम था वह उनको कफनाने दफनाने में व्यस्त रहे। हुजूर सलल्लाह अलैहि व सल्लम पर हजरते हम्ज़ा की शहादत का बड़ा असर था जो आपके चचा और रजाअ़ी भाई थे और हमेशा आप पर कुर्बान होने को तैयार रहे।

www.abulhasanalinadwi.org

एक मोमिना का सब्र

हजरत सफ़या बिन्त अब्दुल मुत्तलिब हजरते हमजा की हकीक बहन थीं जब आप उनको देखने आयीं तो उनके बेटे जुबैर बिन अव्वाम से हुजूर (सल्ललाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया कि उनको वापस लौटाओ। उनके भाई की लाश की जो बेहुरमती हुई वह उनको न देख सकेंगी, जो उन्होंने जाकर कहा कि ऐ माँ हुजूर का आदेश है कि आप लौट जायें। वह बोलीं क्यों मुझे पता है। कि मेरे आई की लाश के साथ बेहुरमती की गई है। यह सब अल्लाह की राह में है। सब्र करूंगी फिर वह भाई उनको देखा, उनके लिए दुआए मग़फिरत पढ़ी और लौट गई।

हजरत मुसअब के हाथ में अलमे रसूल (परचम) था। यह युवक इस्लाम लाने के पूर्व बड़े लाड प्यार से पला और बढ़ा था, एक चादर में दफ़नाया गया। उस चादर में जब पैर ढक जाते तो सर खुल जाता, सर ढाका जाता तो पैर खुल जाते रसुलुल्लाह (सल्ललाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया कि सर ढक दो और पैरों पर घास डाल दो।

रसुलुल्लाह(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने उहुद के मौके पर दो दो शहीदों को एक चादर में कफनाने का आदेश दिया और हाफिजे कुरान को कब्र में उतारने में तरजीह (प्राथमिकता) दी जाती और आप फरमाते इन सब के लिए मैं गवाह हूँ।

शुहदा को उनके जख़्मों के साथ ही दफ़नाया गया। न तो उनको नहलाया गया और न उनकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ी गई।

आप पर सहाबियात महिलाओं की जानिसारी (निछावर होना)

मुसलमान मदीने लौटे तो रास्ते में बनी दीनार की एक महिला

www.abulhasanalinadwi.org

मिली उस ख़ातून महिला के पति, भाई और बाप सब जंग के काम आ गये थे जब मुसलमानों ने उसको समाचार दिया तो उसने पूछा कि रसुलुल्लाह का क्या हाल है। उसको बताया गया कि आप खैरियत कुशल से है। उसने कहा कि मुझे दिखलाओ मैं स्वयं देखना चाहती हूँ। लोगों ने आपकी ओर इशारा (संकेत) किया। जब उसने आकर आपको देख लिया तो कहा कि बस आप सलामत (कुशल) हैं तो हर मुसीबत हेच है अर्थात हर कष्ट छुद्र है।

जांनिसारी, फरमांबरदारी का एक उदाहरण

उधर इस्लाम के दुश्मनों ने एक दूसरे को बुरा भला कहना शुरूअ़ किया और कहते कि तुमने कुछ करके नहीं दिखाया। तुमने उनकी ताकत तो तोड़ दी परन्तु उनको पूरी तरह नहीं तोड़ा। इधर रसूलुल्लाह ने इनका पीछा करने का आदेश दिया। यह वह समय था जब मुसलमान जखमों से चूर थे। दूसरे दिन आपने एलान फरमाया कि दुश्मनों का पीछा करने के लिए निकल पड़ो। इसमें वही लोग शामिल होंगे जो कल उहुद में शरीक थे। मुसलमान उस समय जखमी थे फिर भी आपके साथ निकले कोई आदमी ऐसा नहीं था जिसने आपकी आज्ञा का उल्लंघन किया हो, आपकी बात न मानी हो, जब यह लोग हुमरा असद जगह तक पहुँचे यह स्थान मदीने से 8 मील दूर है। रसुलुल्लाह वहाँ तीन दिन पीर मंगल तथा बुध तक रहे फिर मदीने लौटे।

इस लड़ाई में सत्तर सहाबा शहीद हुए उनमें अक्सरीयत अंसार की थी और बाइस मुशरिकीन मारे गये।

जान से अधिक प्रिय

हिजरत के तीसरे वर्ष बनी अज़ल और क़ारा कबीले ने आपसे

www.abulhasanalinadwi.org

ऐसे शिक्षित मुसलमानों की मांग की ताकि वह कबीले के लोगों को इस्लाम की शिक्षा दें। रसुलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने उनके साथ 6 सहाबा को भेजा जिनमें आसिम बिन साबित, खुबेब बिन अदी व ज़ैद बिन दसना शामिल थे इनमें से अधिकतर को उन्होंने शहीद कर दिया।

जैद को हरम से बाहर शहीद करने के लिए कुरैश के सभी आदमी इकट्ठा (जमा) थे। उनमें अबू सुफियान भी थे। उन्हीं ने हजरत जैद से पूछा मैं तुमसे कसम लेकर पूछता हूँ कि क्या तुम यह चाहोगे कि तुम्हारी जगह मुहम्मद हों और तुम अपने परिवार में हो। उन्होंने उत्तर दिया कि मैं तो यह भी नहीं चाहूँगा कि आप घर पर हों और आपके पैर मुबारक में कांटा चुभे और मैं घर पर अपने परिवार सहित सुखी हूँ तो-अबू सुफियान बोले कि मैंने किसी को किसी से इतनी मुहब्बत करते नहीं देखा जितनी मुहम्मद से उनके मानने वाले करते है। फिर उसके बाद उनको शहीद कर दिया गया।

जब हज़रत खुबैब को फांसी पर लटकाने लाये तो उनसे कहा कि तुम मुझे इतनी देर से छूट दे दो कि मैं दो रकअत नमाज पढ़ लूँ उन्होंने इसकी इजाजत दे दी। हज़रत खुबैब ने बड़े खुशुअ़ खुजुअ़ (लगन तथा ध्यान) से नमाज़ पढ़ी फिर लोगों से कहा कि मुझे ख्याल न होता कि तुम मेरी नमाज़ को डर समझोगे तो मैं अभी और नमाज़ पढ़ता। उसके बाद उन्होंने यह शेर पढ़े-

1. कि जब मैं इस्लाम के लिए कत्ल किया जा रहा हूँ तो मुझको इसकी चिन्ता नहीं कि अल्लाह की राह में किस पहलू पर गिर कर जान दूँगा।

2. यह जो कुछ है केवल अल्लाह के लिए है यदि वह चाहेगा तो इस पारा पारा (टुकड़े-टुकड़े) जिस्म पर बरकत नाजिल फरमायेगा।

www.abulhasanalinadwi.org

यह अशआर पढ़ते हुए शहीद हो गये।

बिअरे मऊना

आमिर बिन मालिक की प्रार्थना पर दीन की शिक्षा और तबलीग़ का कार्य करने कुछ असहाब को (साथियों को) आपने भेजा। यह 70 चुने हुए लोग थे यह लोग रवाना हुए और जब बिअरे मऊना पहुँचे तो कबीले बनी सुलैम उसय्या रअल और ज़कवान ने मुसलमानों को घेर लिया। जब उन्होंने यह स्थिति देखी तो अपनी तलवारें निकाल लीं और लड़कर शहीद हो गये। उनमें केवल क़ाब बिन ज़ैद बच रहे जो खनदक़ में शहीद हुए।

मकतूल का अंतिम शब्द कातिल के इस्लाम का कारण बना

इसी सरिय्या बिअरे मऊना में हराम बिन मलहान शहीद हुए उनको जब्बार बिन सलमा ने शहीद किया इसके इस्लाम का कारण वह शब्द था जो हराम ने शहीद होते समय कहा। यह बात जब्बार स्वयं बताते हैं कि मुझको इस्लाम की तरफ जिस चीज़ ने उभारा वह यह है कि मैंने एक आदमी के दाहिने शाने के बीच नेज़ा (भाला) मारा। मैंने देखा कि वह सीने के पार हो गया। उस समय उसके मुँह से यह शब्द निकले कि काबा के रब की कसम मैं सफल हो गया, मैंने अपने दिल में कहा कि इसमें क्या सफलता है। मैंने तो उसको कत्ल कर दिया। मैंने इस शब्द की तहकीक व जानकारी चाही तो पता चला कि सफलता का अर्थ शहादत है। खुदा की कसम वह सफल रहे। यही बात मेरे मुसलमान होने का कारण बनी।

www.abulhasanalinadwi.org

बनी नजीर की जिला वतनी

बनी नजीर की तरफ आप तशरीफ ले गये। यह यहूद का सबसे बड़ा कबीला था। वहाँ आकर आपने बनी आमिर की दियत चाही। बनू नजीर और बनू आमिर के बीच एक समझौता था। उस समय तो उन्होंने आपसे ठीक से बात की और भलाई का वादा किया लेकिन भीतर भीतर आपके खिलाफ़ साज़िश करते रहे। रसूलुल्लाह उनके घर की दीवार के नीचे तशरीफ फरमा थे। उनमें से कुछने एक दूसरे से कहा कि इससे अच्छी पोजीशन (मौका) नहीं मिलेगी। तुममें से कौन है जो इस घर पर चढ़ जाये और एक बड़ा पत्थर गिरा दे। फिर हम सब चैन की बंसी बजायेंगे। रसूलुल्लाह के साथ कुछ सहाबा भी थे जिनमें हज़रत अबू बक्र, हज़रत उमर और हज़रत अली भी थे। जब उन्होंने यह साज़िश (षड़यंत्र) की। अल्लाह ने इसकी सूचना आपको दे दी। आप शीघ्र उठ खड़े हुए और वापस मदीने लौट आये। यहां आकर आपने उनके खिलाफ जंग की तैयारी आरम्भ कर दी। यह घटना हिजरत के चौथे वर्ष रबीउल अव्वल के महीने में हुई। आपने उनका मोहासिरा (घेराबन्दी) सात दिनों तक किया फिर अल्लाह ने उनके दिलों में डर व भय डाल दिया उन्होंने रसूलुल्लाह से स्वयं कहा कि आप हमें यहाँ से जिला वतन कर दें और हमारी जान बखशी करें और ऊँट, जितना माल ले जा सकें जाने दें अल्बत्ता हथियार न ले जायेंगे। आपने उनकी यह प्रार्थना स्वीकार कर ली और वह सारा सामान ऊँटों पर ले गये जो ले जा सके। रसूलुल्लाह ने उनका माल मुहाजिरीन अव्वलीन में वितरित कर (बांट) दिया।

गज़वा जात अर रिकाअ

हिजरत के चौथे वर्ष आपने जंग फरमाई। आपने मुकामे नख़्ल पर पड़ाव फरमाया। 6 आदमियों के बीच एक ऊंट था चलते चलते पैर

www.abulhasanalinadwi.org

घिस गये नाखून उखड़ गये। इससे बचने के लिए उन्होंने अपने पैरों पर चिथड़े और पट्टियां लपेट लीं। इसलिए इस ग़जवे का नाम गजवा जात अर रिकाअ यानि पट्टियों वाला गजवा पड़ा। एक दूसरे के मुकाबले आये लेकिन जंग नहीं हुई। लोग एक दूसरे से डर रहे थे। आपने इस मौके पर डर वाली नमाज भी पढ़ी (सलातुल ख़ौफ) हिजरत के पांचवे वर्ष ग़जवे खनदक़ ग़जवे अहज़ाब हुआ। यह जंग भी बड़ी जबरदस्त तथा फैसला कुन (निर्णायक) हुई इसमें मुसलमानों की बड़ी परीक्षा हुई। इसके पूर्व ऐसी परीक्षा से मुसलमान नहीं गुजरे। अल्लाह फरमाता है।

"जिस समय दुश्मन तुम पर तुम्हारे ऊपर से और नीचे से आये थे और डर के मारे तुम्हारी आखें पथरा गई थी और दिल मुंहतक आ रहे थे और तुम अल्लाह की बाबत तरह-तरह के ख्याल करने लगे थे। वहाँ ईमान वालों (सब्र) की जाँच की गई और खूब हिलाये गये।

(सूरह अहजाब - 11)

इस गजवे का कारण यहूद थे। वास्तविकता यह है कि कुछ लोग बनी नजीर व बनी वायल के कुरैशे मक्का से मिलने आये और कुरैश से मिलकर उनको सुलह के खिलाफ जंग करने को तैयार किया उनका ऐसी जंग लड़ने का अभ्यास था लेकिन उनकी हिम्मत नहीं पड़ती थी। यहूदियों ने कुरैश के सामने मामले को बड़े अच्छे ढ़ंग से रखा और उनको समझाया कि वह उनके साथ उस समय तक रहेंगे जब तक इस्लाम की जड़ें खोखली न हो जायें। इस पर कुरैश बड़े प्रसन्न हुए और उनकी दावत स्वीकार कर ली और सब इस पर सहमत हो गये और एक स्थान पर इकट्ठा हुए। फिर यह लोग वहाँ से बनी गतफान के पास आये और उनको भी मुसलमानों के खिलाफ भड़काया और उनके सामने एक योजना रखी जो मदीने पर चढ़ाई के लिए रचाई गयी थी और जिस पर कुरैश सहमत थे।

www.abulhasanalinadwi.org

गज़व-ए-ख़ंदक या गज़व-ए-अहज़ाब

कुछ शर्तों पर आपस में सहमति हुई और कुरैश 4000 और गतफान 6000 जवानों के साथ शरीक हुए। दोनों की संख्या 10000 थी इस लशकर की कियादत अबू सुफियान बिन हरब कर रहे थे।

हिकमत मोमिन का खोया हुआ माल

मुसलमानों को इस योजना की सूचना मिली तो उन्होंने मदीने में किला बन्द होकर दिफाई जंग लड़ने की योजना बनाई और उसकी तैयारी की। इस जंग में मुसलमानों की संख्या तीन हजार थी। सलमान फ़ारसी ने ख़ंदक खोदने की राय दी और कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल जब हमको घुड़सवारों का डर होता तो हम ख़ंदक खोदते थे। आप सलमान की राय से सहमत हुए और मदीने के शिमाल मगरिब (उत्तर पश्चिम) खुली जगह ख़ंदक खोदने के आदेश दिये। यहां से दुश्मन को हमला करने का अवसर मिल सकता था। रसूलुल्लाह (सल्ललाहु अलैहि व सल्लम) ने ख़ंदक खोदने का कार्य वितरित कर दिया (बांट) दिया। 100 व्यक्तियों के बीच 40 हाथ ख़ंदक खोदने का कार्य आया।

मुसलमानों में हमदर्दी मसावात और समानता का जज़्बा था। रसूलुल्लाह (सल्ललाहु अलैहि व सल्लम) ने स्वयं ख़ंदक खोदने में मुसलमानों का साथ दिया और हाथ बटाया ताकि उनमें सवाब (पुण्य) प्राप्त करने की ख्वाहिश (इच्छा) हो। सबने मिलकर यह कार्य किया हालांकि उस समय ठन्ड (सर्दी) बहुत थी खाने के लिए भी इतनी खुराक नहीं थी जिससे यह गाड़ी चलती। कभी तो फाकों की नौबत आती। अबू तलहा कहते हैं कि हमने रसूलुल्लाह (सल्ललाहु अलैहि व सल्लम) से भूख की शिकायत की और अपने पेट पर पत्थर बंधा दिखलाया तो हुजूर ने अपना बतने मुबारक (पेट) दिखलाया तो उस

www.abulhasanalinadwi.org

र दो पत्थर बंधे थे। इसके बाद भी सब प्रसन्न थे अल्लाह का शुक्र अदा कर रहे थे उसकी तारीफ कर रहे थे न किसी बात की शिकायत और न अपने थकने का कोई जिक्र।

हजरत अनस कहते हैं कि हुजूर खन्दक के पास आये तो आपने मुहाजिरीन व अनसार को ठन्ड में खन्दक खोदने में व्यस्त देखा। उनके पास कोई गुलाम या सेवक भी नहीं था जो उनकी जगह कार्य करता रसूलुल्लाह ने अब उनके परिश्रम व भूख को देखा तो फरमाया कि–

ऐ अल्लाह असल जिन्दगी (वास्तविक जीवन) तो आखिरत का है। ऐ अल्लाह मुहाजिरीन व अंसार की बखशीश फरमा। हम उसके उत्तर में कहते कि–

हम वह हैं। जिन्होंने अपनी जिन्दगी तक मुहम्मद के साथ जिहाद करने पर उनसे बेअत की है।

खन्दक की खुदाई के दौरान एक बड़ी भारी चट्टान आ गयी जिस पर कुदाल काम नहीं कर रही थी। सबने मिलकर रसूलुल्लाह से शिकायत की। जब आपने स्वयं उसको देखा तो कुदाल ली और बिसमिल्लाह कह कर उस पर चोट दी। उसका एक तिहाई भाग टूट गया और फरमाया कि अल्लाह बड़ा है। (अल्लाहु अकबर) मुझे मुल्के शाम की चाबियां दी गयी हैं। खुदा की कसम मैं उनके महल देख रहा हूँ फिर आपने विसमिल्लाह कही और चोट दी। उसका फिर एक तिहाई भाग टूट गया फिर आपने फरमाया अल्लाहु अकबर मुझे फारस की चाबियां दी गयी हैं। और मैं मदायन का सफेद महल देख रहा हूँ। फिर आपने तीसरी बार बिसमिल्लाह पढ़कर चोट दी तो पत्थर का शेष भाग टूट गया और आपने फरमाया कि मुझे यमन की कुंजियां दी गयी हैं खुदा की कसम सनआ के दरवाजे देख रहा हूँ।

www.abulhasanalinadwi.org

मुअजिज़ात का जहूर (प्रकट होना) गजवा के समय

ग़जव-ए-ख़न्दक के मोके पर आपके मुअ़जिज़ात का ज़ुहूर जब मुसलमानों को खन्दक खोदने में परेशानी (कठिनाई) होती तो आप किसी बर्तन में पानी तलब फरमाते। उसमें आप अपना लोआबे दहन डालते और फिर अल्लाह जो उनसे कहलवाता कहते फिर वह पानी उस पत्थर पर छिड़का जाता तो वह रेत के ढेर की तरह नरम पड़ जाता। खाने में ऐसी बरकत होती कि थोड़ा खाना बहुत से लोगों के लिए काफ़ी होता बल्कि पूरा लशकर पेट भर कर खाता।

कुरैश ने आगे बढ़कर पड़ाव डाला। बनी गतफान अपने जेरे असर (प्रभावाधीन) कबीलों को साथ लेकर वहाँ पहुँच गये लशकर की तादात (संख्या) 10000 हजार थी। मुसलमान भी निकल पड़े और मुसलमानों की तादाद तीन हजार थी दोनों के बीच खनदक थी।

बनी कुरैजा और मुसलमानों के बीच एक समझौता हुआ था। हई बिन अख़तब जो बनी नजीर कबीले के सरदार थे, इन्होंने समझौता तोड़ने को उकसाया उन लोगों ने कुछ शशो पंज के बाद उस समझौते को तोड़ दिया। मुनफिकीन ने हाथ पैर मारे तो आपको ख्याल हुआ कि बनी गतफान से समझौता करके उनसे सुलह कर ली जाये और इसके बदले उनको फलों का एक तिहाई हिस्से के तौर पर दिया जायेगा। यह ख़याल आया कि दिल में अंसार की दिल जूई(सान्तवना) के खातिर आया जिन पर जंग का सबसे अधिक बोझ पड़ता था।

लेकिन औस व खजरज के दोनों सरदार सअ़द बिन उबादा और सअ़द बिन मुआज का इरादा और उनकी साबित कदमी देखकर आपने अपनी राय बदल दी उन्होंने कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल जब हम शिर्क में पडे थे बुतों (मूर्तियों) की पूजा करते थे हम अल्लाह की पूजा

www.abulhasanalinadwi.org

नहीं करते थे और उसको पहचानते नहीं थे। उस समय हम किसी की मेहमानदारी के अतिरिक्त एक दाना भी किसी को देने को तैयार नहीं थे। अब जब कि हमको अल्लाह ने इस्लाम की दौलत दी (हम मुसलमान हो गये) अल्लाह ने हमें सहीह मार्ग दर्शाया हमको इज्जत दी आदर दिया क्या हम अपना माल उनको दे दें। खुदा की कसम हमको इसकी कोई आवश्यकता नहीं। हमारे पास केवल देने को तलवार है। अल्लाह हमारे और उनके बीच फैसला (निर्णय) फरमायेगा। फिर आपने फरमाया जैसी तुम्हारी इच्छा।

इस्लामी शहसवार और (जाहिलियत के शहसवार के बीच मुकाबला)

गजव-ए-खन्दक में रसूलुल्लाह और मुसलमानों ने क्याम फरमाया और दुश्मनों ने उनका मुहासिरा कर रखा था लेकिन उनके बीच जंग की नौबत नहीं आयी कुरैश के कुछ सवारों ने अपने घोड़े आगे बढ़ाए खन्दक देख कर वह रूक गये और कहने लगे खुदा की कसम इन्होनें तो बिलकुल एक नई तदबीर सोची है। इसके पूर्व ऐसी कोई योजना उन्होंने कभी नहीं बनाई। बड़ी खोज और तलाश के बाद उनको खन्दक का वह स्थान नजर आया जहाँ खन्दक तंग थी (चौड़ाई कम थी) उन्होंने उस जगह घोड़े दौड़ाये और खन्दक पार कर गये और मदीने की जमीन (भूमि) पर उनके घोड़े दौड़ने लगे उन्हीं में अरब का एक शह सवार अम्र बिन अबदे वुद्द था जिसका मुकाबला एक हजार शह सवारों से किया जाता। जब वह खड़ा हुआ तो बोला कि मेरे मुकाबले को कौन आता है। हज़रत अली इसके लिए तैयार हुए और कहा कि ऐ अम्र तुमने तो अल्लाह से अहद किया था कि कुरैश का कोई व्यक्ति तुम्हें यदि दो बातों की दावत देगा तो उसमें से एक तुम अवश्य स्वीकार कर लोगे। उन्होंने कहा कि हां यह बात सत्य है। तो फिर मैं तुमको

www.abulhasanalinadwi.org

अल्लाह और अल्लाह के रसूल और इस्लाम की दावत देता हूँ। अम्र बोला मुझे इसकी आवश्यकता नहीं है। तब हज़रत अली ने उससे कहा कि मैं तुम्हें मुकाबले की दावत देता हूँ, वह बोला ऐसा क्यों? ऐ मेरे भतीजे मैं तुम्हें कत्ल करना नहीं चाहता। इसके उत्तर में हजरत अली ने कहा लेकिन खुदा की कसम मैं तुम्हें कत्ल करना चाहता हूँ अम्र की ग़ैरत जोश में आयी और वह घोड़े से उतर गया और घोड़े की कूचे काट ड़ाली और गुस्से में उसके चेहरे पर थप्पड़ मारा और हज़रत अली के मुकाबले पर आ गया। दोनों अपनी वीरता के प्रदर्शन करने लगे अन्त में हज़रत अली ने उसको ठिकाने लगा दिया।

माँ अपने बेटे को जिहाद के लिए उभारती है

हजरत आएशा फरमाती है कि व बनी हारिसा के किले में मुसलमान औरतों के साथ थी उस समय तक परदे के आदेश नहीं हुए थे फरमाती हैं कि सअद बिन मआज़ उधर से गुजरते नजर आये वह छोटी सी जिरह पहने थे। उनका हाथ उससे बाहर था और वह रज्ज़ (वीरता का गीत) पढ़ रहे थे। उनकी माता ने उनसे कहा कि मेरे बेटे तुमने बड़ी देर कर दी। जल्दी करो। हज़रत आयशा फरमाती है कि मैंने कहा कि उम्मे सअद मेरी इच्छा है कि सअद की जिरह बड़ी होती। और फिर वह हुआ जिसका मुझे डर था। उस खुले हाथ पर एक ऐसा तीर आकर लगा कि उसने एक विशेष रग काट दी और वह ग़जवा बिनी कुरैजा में शहीद हो गये।

अल्लाह के लिए हैं आकाश और धरती के लशकर

मुशरेकीन ने मुसलमानों को तकरीबन एक माह तक महसूर

www.abulhasanalinadwi.org

(घेर) रखा इस बीच मुसलमानों को बड़ा कष्ट व कठिनाई का सामना करना पड़ा मुशरिकीन का निफ़ाक खुलकर सामने आ गया। उनमें से कुछ ने आपसे मदीने लौट जाने की इजाजत (आज्ञा) चाही और यह बहाना किया कि हमारे घर खुले रह गये जब कि हकीकत (वास्तविकता) यह थी कि वह भागना चाहते थे।

हुजूर के साथी (असहाब) इस कठिनाई व परेशानी में थे कि आपकी सेवा में नईम बिन मसऊद अलगतफ़ानी उपस्थित हुए और कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल मैं तो इस्लाम ले आया लेकिन मेरी कौम को मेरे मुसलमान होने की जानकारी नहीं। आप जैसा आदेश दें मैं वही करू हुजूर (सल्ललाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया कि तुम उनमें बिल्कुल अकेले हो तुम उन्ही में रहकर हमारी सहायता कर सकते हो।

जंग बहाने व तदबीर का नाम है। नईम बिन मसऊद ने आपसे विदाई ली और आपने कबीला बनी कुरैजा में वापस आ गये और अपनी कौम के कुछ लोगों से बातें कीं और उनमें शंका पैदा कर दिया कि बनी ग़तफान और कुरैश से यह मेल जोल इतना क्यों? जब कि वह उनके हम वतन नहीं, फिर मुहाजिरीन व अंसार से इतनी दुश्मनी क्यों? जब कि वह उनके पड़ोसी हैं? नईम ने बनी करैजा के लोगों को यह परामर्श दिया कि लड़ने से पूर्व कुरैश के कुछ सरदारों को अपने पास रोक लें ताकि उनका भरोसा और विश्वास बना रहे। नईम के इस परामर्श पर वह सब बड़े प्रसन्न हुए और कहा कि तुमने बड़ा अच्छा परामर्श दिया। नईम कुरैश के पास आये और उनसे अपनी हमदर्दी जताने लगे उनसे उन्होंने कहा कि यहूद इस पर पछता रहे हैं। और कुरैश के कुछ सरदारों को बन्दी बनाने की योजना रच रहे हैं। ताकि वादा खिलाफी (वचन भंग) न हो वह यह भी विचार कर रहे हैं कि वे उन बन्दियों को नबी और उनके असहाब (साथियों) को सौंप दें और वह उनको कत्ल कर दें। फिर वह ग़तफ़ान में आये और उनसे वैसा ही कहा

www.abulhasanalinadwi.org

जैसा उन्होंने कुरैश से कहा था अब दोनों गिरोह सतर्क (होशियार) हो गये। दोनों को एक दूसरे से नफरत हो गयी। उनके आपस में फूट पड़ गयी और दोनों एक दूसरे से डरने लगे। जब अबूसुफियान और गतफान के सरदारों ने निर्णायक जंग मुसलमानों से करने का फैसला किया तो यहूद ने टाल मटोल करनी शुरू की और बन्दी बनाने के लिए कुछ आदमियों को चाहा तो कुरैश को पूर्ण विश्वास हो गया कि नईम जो बात कह रहे थे वह बात शत प्रतिशत सत्य है। कुरैश ने उनकी यह बात अस्वीकार कर दी। इस प्रकार यहूद को भी नईम की बात सत्य मालूम पड़ी। इस प्रकार उनके इरादों और योजनाओं में कमजोरी आ गई और वह बिखर गये। इधर अल्लाह ने ऐसी तेज और ठन्डी हवा चला दी कि रात गुजारना कठिन हो गया। आंधी से उनकी हांडिया उलट गई। उनके खेमे गिर गये अबू सुफियान खड़े हुए और कुरैश से कहा कि यह जगह अब ठहरने के लायक नहीं रही। हमारे जानवर मर गये। बनू कुरैजा ने हमें धोखा दिया। उनकी ओर से हमें बुरी खबरें सुनने को मिली। तुमने अपनी आखों से देखा कि कैसी ठन्डी हवाएं चल रही हैं। जिसमें आग जलाना असम्भव है। यह स्थान अब सुरक्षित नहीं रहा। अच्छा यही है कि हम यहाँ से लौट चलें और मैं तो चला। अबू सुफ़ियान अपने ऊँट के पास आये जो बैठा हुआ था उस पर बैठे और एड़ लगाई जब वह खड़ा हो गया तो उसकी रस्सी खोली।

कुरैश ने जो कुछ किया उसकी सूचना गतफ़ान को मिली तो उन्होंने भी वापस लौटने का फैसला किया। उस समय हुजूर नमाज़ पढ़ रहे थे। इस स्थिति में हुजेफ़ा बिन यमान ने हुजूर को अवगत कराया हुजूर ने उनको अपना जासूस बनाकर भेजा था। उन्होंने आपसे वह सब कुछ बताया जो कुछ उन्होंने अपनी आँख से देखा था। सुबह आप खन्दक़ छोड़कर मदीने तशरीफ ले आये मुसलमान भी साथ लौट आये और हथियार उतार कर रख दिये। अल्लाह ने सच कहा कि-

www.abulhasanalinadwi.org

"ऐ इमान वालो- अल्लाह की नेमतों को याद करो जब एक लशकर ने तुम पर हमले की ठान ली तो हमने उन पर हवा और लश्कर भेजा जिसको तुम देख नहीं रहे थे। तुम जो कर रहे थे अल्लाह उसको देख रहा था।

(सूरह अहजाब-6)

दूसरी जगह अल्लाह फरमाता है-

"और जो काफिर थे अल्लाह ने उनको लौटा दिया वह अपने गुस्से के कारण कुछ भलाई न हासिल कर सके और खुदा मोमिनों की लड़ाई में काफी हुआ। अल्लाह जबरदस्त और ताकतवाला है।

(अहजाब-25)

रसुलुल्लाह ने फरमाया कि अब जंग समाप्त आज के बाद कुरैश तुम पर हमला न कर सकेंगे लेकिन तुम उन पर हमला करोगे। जंग खन्दक़ में मुसलमान 7 शहीद हुए और मुशरेकीन 4 मारे गये।"

गज़वा बनी कुरैजा बनी कुरैजा ने समझौता तोड़ा

जब रसूलुल्लाह (सल्ललाहु अलैहि व सल्लम) मदीने तशरीफ लाये और आपने अंसार और मुहाजेरीन के बीच एक समझौता कराया और यहूद को रक्षा दी। उनके धर्म व माल की रक्षा की जिम्मेदारी ली। कुछ शर्तें उनके हक़ में और कुछ उनके विरूद्ध थी समझौते में था एक दूसरे की मदद करना अनिवार्य होगा, बुराई को छोड़कर नेकी व भलाई का मामला रखना होगा। हम लोगों पर हमला होगा तो दोनों मिलकर उसका मुकाबला करेंगे। लेकिन हई बिन अख़तब यहूदी जो बनी नज़ीर का सरदार था बनी कुरैज़ा को समझौता तोड़ने पर राज़ी कर लिया और कुरैश से एकता पर तैयार कर लिया हालांकि उनके सरदार काब बिन असद कर्ज़ी ने बड़े साफ शब्दों में कहा था कि मैंने मुहम्मद में सच्चाई

www.abulhasanalinadwi.org

और वफ़ादारी के अतिरिक्त कुछ नहीं देखा। फिर भी कअ़ब बिन असद ने अपना समझौता तोड़ दिया। आपके और उसके बीच जो कुछ तय हुआ था वह रद कर दिया गया। समझौता तोड़ने की सूचना जब रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को पहुँची तो हुज़ूर ने सअद बिन मआ़ज जो औस के सरदार थे। औस और कुरैजा आपस में ह़लीफ (सहप्रतिज्ञ) थे। और सअद बिन उबादा खजरज के सरदार थे। अंसार के कुछ लोगों को आपने इस खबर की तसदीक के लिए भेजा। उन लोगों ने उससे अधिक बुरा पाया जो कुछ सुना था, उन लोगों ने आपके लिए अच्छे शब्दों का प्रयोग न करते हुए पारस्परिक समझौते से इनकार किया और कहने लगे कि हमारे और मुहम्मद (सल्लाहो अलैहे व सल्लम) के बीच कोई मुआहदा या समझौता नहीं हुआ। और उन्होंने मुसलमानों से जंग करने की तैयारी शुरूअ़ कर दी। यह सूरत मैदाने जंग में जंग करने से अधिक खतरनाक थी। उसको अल्लाह ने यूँ फरमाया कि-

"जब वह तुम्हारे ऊपर से आये और तुम्हारे नीचे से आये।"
(सूरह अहजाब - 10)

यह बात मुसलमानों के लिए बड़ी सख़्त थी।

जब मुसलमान खन्दक से लौटे और अपने हथियार रख दिये तो उस समय हज़रत जिबरईल आये और कहा कि क्या आपने हथियार रख दिये। आपने जवाब दिया कि हाँ हज़रत जिबरईल ने कहा कि फरिश्तों ने अभी अपने हथियार नहीं रखे। अल्लाह का आदेश है कि आप बनी कुरैजा की ओर यात्रा करें। मैं भी उसी तरफ जा रहा हूँ ताकि उनके दिलों में डर पैदा कर दूं। आपने एलान कर दिया कि लोग अस्र की नमाज़ बनी कुरैज़ा में पढ़ें। आपने बनी कुरैज़ा पहुँचकर उनका मुहासरा (घेराव) कर लिया। यह घेराव 25 दिन तक रहा। वह इस मुहासरे से थक गये। और अल्लाह ने उनके दिलों में डर व रोब डाल

www.abulhasanalinadwi.org

दिया। बनी कुरैज़ा ने आपको आदेश माना लेकिन औस ने उनके लिए आप (सल्ललाहु अलैहि व सल्लम) से सिफ़ारिश की कि खजरज के मुकाबले में हमारा इनसे समझौता है। रसूलुल्लाह (सल्ललाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया कि औस के लोगो- क्या तुम यह नहीं चाहते कि तुम ही में से, कोई हकम (निर्णायक) हो, उन्होंने कहा हम तो यह चाहते हैं। आपने फरमाया कि मैं यह काम सअद बिन मआज़ के जिम्मे करता हूँ। सअ़द को बुलवाया गया। जब वह आये तो उनके कबीले के लोगों ने उनसे कहा कि अबू अम्र अपने हलीफ़ (सहयोगी) के साथ अच्छा मआमला करना इसलिए कि यह कार्य रसूल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने सौंपा है। जब उनसे बहुत इसरार किया तो वह बोले कि भाग्य (किसमत) से सअद को यह अवसर मिला है। आज खुदा के आदेश के आगे किसी बात की चिन्ता नहीं। हज़रत सअद ने कहा कि मैं फैसला करता हूँ कि मरदों को कत्ल कर दिया जाये और उनका माल (धन) बांट दिया जाये। उनकी औरतें (महिलायें) और बच्चे गुलाम बना लिए जायें (रसूलुल्लाह (सल्ललाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया कि) ऐ सअद तुमने खुदा के आदेश के मुताबिक फैसला किया है। यह फैसला तो बनी इसराईल के जंगी कानून के मुताबिक था जो तौरात में आया था उसी के अनुसार है।

सअद का फैसला बनी कुरैजा पर लागू किया गया। इस प्रकार मुसलमान सुरक्षित हो गये पीछे के हमलों से भी और दाखिली साजिशों झगड़ों से भी।

खजरज ने सलाम बिन अबी अल हकीक़ को कत्ल कर दिया यह वह थे जिन्होंने मुसलमानों के खिलाफ पार्टी बन्दी की थी। औस ने इनके पूर्व कअ़ब बिन अशरफ़ को कत्ल कर दिया था। वह रसूलुल्लाह (सल्ललाहु अलैहि व सल्लम) की दुश्मनी और फसाद पैदा करने में बहुत आगे था। इन सरदारों से अल्लाह ने छुटकारा

www.abulhasanalinadwi.org

दिलाया। यह मुसलमान और इस्लाम के खिलाफ साजिश और षड़यंत्र रचा करते थे। अब मुसलमानों को सुकून मिला।

मुआफी और सखावत (क्षमा और दान)

आपने कुछ लोगों को नज्द की तरफ़ रवाना फरमाया वह समामा बिन आसाल (बनू हनीफ़ा के सरदार) को कैदी बनाकर लाये। उनको मस्जिद के एक सतून से बांध दिया। जब हुजूर उनके पास से गुजरे तो आपने फरमाया कि ऐ समामा तुम कुछ कहना चाहते हो तो कहो। उन्होंने कहा ऐ मुहम्मद (सल्ललाहो अलैहे वसल्लम) आप कत्ल कर दें तो ऐसे को कत्ल करेंगे जिसकी गर्दन पर खून है और यदि आप एहसान करेंगे तो एहसान शिनास, शुक्रगुज़ार एहसान करेंगे। यदि आप धन दौलत चाहते हैं तो वह आपको मिलेगा। आप उनकी बात सुनकर आगे बढ़ गये। दोबारा फिर आप उनके पास आये समामा ने वही बात फिर दोहराई जो पहले कही थी। आप जब उनके पास तीसरी बार तशरीफ लाये तो आपने उनकी आजादी के निर्देश दिये और वह आजाद कर दिये गये। समामा खजूर का बाग जो मस्जिद के करीब था वहाँ गये नहाये, धोए और आपकी सेवा में हाज़िर हुए और मुसलमान हो गये। और कहने लगे कि खुदा की कसम मुझे आपकी सूरत से बहुत ज़ियादा नफ़रत थी परन्तु आज मुझे आपकी सूरत सबसे अधिक महबूब (प्रिय) है। बखुदा इस धरती पर आपके दीन से अधिक मुझे किसी दीन धर्म से नफ़रत न थी। परन्तु आज आपका दीन मुझे सबसे अधिक अज़ीज़ है। सच्चाई यह है कि मैं उमरे के लिए जा रहा था। आपके लोगों ने मुझे पकड़ लिया। आपने उनको बशारत (शुभ संदेश) दी और उमरे की इजाजत दी। जब समामा कुरैश के पास आये तो उनसे कुरैश ने कहा कि समामा तुम बेदीन (अधर्मी) हो गये। उन्होंने जवाब दिया मैं तो मुहम्मद पर इस्लाम ले आया। बखुदा अब समामा से गेहूँ का एक दाना भी तुम तक नहीं पहुँच सकता जब तक रसूलुल्लाह

www.abulhasanalinadwi.org

(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की इजाजत न हो। समामा के पास यमामा में मक्का की ग़ल्ला मण्डी थी।

समामा अपने शहर लौट आये और जो गल्ला मक्का मण्डी जाता था उस पर रोक लगा दी। कुरैश को फ़ाके की नौबत आ गई तो उन्होंने रसूलुल्लाह (सल्ललाहु अलैहि व सल्लम) से रहम (दया) की प्रार्थना की कि आप समामा को लिखें कि वह गल्ला मण्डी में आने दें। रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने ऐसा ही किया।

सुलहे हुदेबिया।

रसूलुल्लाह का ख़्वाब (स्वप्न) और (मक्के में मुसलमानों का प्रवेश)

रसूलुल्लाह ने मक्के में दाखिल होने तथा कअ़बे का तवाफ़ करते (स्वप्न में देखा) इसकी सूचना अपने साथियों को मदीने में दी। इससे सबसे बड़ी खुशी मुहाजिरीन को हुई। कअ़बा को और मक्का छोड़े बहुत दिन हो गये थे। मक्का के तवाफ़ करने का शौक स्वभाविक था। वह वहाँ पैदा हुए और बढ़े उससे उनको बेहद मुहब्बत थी। जब हुजूर ने मक्का जाने की सूचना दी तो सहाबा की आपके साथ मक्का जाने की इच्छा और बढ़ गयी। सब आपके साथ चलने को तैयार हो गये। और किसी ने इसकी मुखालफ़त नहीं की।

एक लम्बे जमाने के बाद मक्का में प्रवेश उमरे की नियत से एहराम बांधकर आप हिजरी के सातवे वर्ष ज़ीकादा के महीने मदीने से निकले ताकि यह लोग जान लें कि आप केवल उमरे के लिए निकले हैं। जंग के लिए नहीं। केवल काबा की जियारत के लिए निकले हैं। आपके साथ 1500 आदमी थे। आपने एक जासूस कुरैश को हालात का

www.abulhasanalinadwi.org

पता लगाने के लिए भेजा। जब आप असफ़ान के क़रीब पहुँचे तो वह जासूस आया और बताया कि मैंने देखा कि काब बिन लुवई आपसे जंग करने तथा काबा की जियारत से रोकने के लिए लोगों को इकट्ठा (जमा) कर रहा था हुदैबिया के मुकाम (स्थान) पर आपने पड़ाव डाला वहाँ पानी थोड़ा था। लोगों ने प्यास की शिकायत की। आपने अपने तरकश से एक तीर निकाला फिर आपने फरमाया कि यह तीर उस गढ़े में डाल दें। तत्पश्चात पानी जोश मारने लगा और सबने जी भर कर पिया।

अब कुरैश को आपके आने तथा पड़ाव की सूचना मिली तो उनमें घबराहट पैदा हुई। आपने यह उचित समझा कि अपने असहाब में किसी को अपने पास भेज कर उनको इतमीनान दिलाएं। आपने हज़रत उसमान को बुलाया और फरमाया कि कुरैश के पास जाकर उनको समझाओ कि हम केवल उमरा और काबा की जियारत तथा तवाफ की नियत से आये हैं। हमारा जंग का कोई इरादा नहीं है। उनको इस्लाम की दावत भी देना और आपने उनको यह भी कहा कि जो मुसलमान मर्द और महिलायें हैं उनके पास जाना और कामयाबी (सफलता) की मुबारकबाद देना और खुश खबरी सुनाना और उनको बताना कि अल्लाह अपने दीन को मक्का में अवश्य ग़ालिब करेगा। अब किसी को अपने ईमान को छुपाने की आवश्यकता न रहेगी।

हजरत उसमान मक्का तशरीफ़ लाये और अबू सुफियान के पास गये और कुरैश के माननीय व्यक्तियों और सरदारों से भेंट की और उनको रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का संदेश पहुँचाया। हज़रत उसमान जब इस कार्य से फ़ारिग हुए तो उन्होंने हज़रत उसमान से कहा कि यदि तुम काबा का तवाफ़ करना चाहते हो तो तुमको इजाज़त है। हजरत उसमान ने उनको उत्तर दिया कि मैं तो रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के साथ ही तवाफ़ करूंगा।

www.abulhasanalinadwi.org

बेअते रिजवान

रसूलुल्लाह को यह सूचना मिली कि हज़रत उसमान कत्ल कर दिये गये तो आपने सबको बेअत के लिए बुलाया। सब आपके इर्द गिर्द एक पेड़ के नीचे इकट्ठा हो गये। आप (सल्ललाहु अलैहि व सल्लम) सबसे इस बात की बैअ़त (प्रण) लिया कि कोई साथ छोड़कर भागेगा नहीं। सबने आपको यह विश्वास दिलाया कि वह आपको छोड़कर नहीं जायेंगे। फिर आपने अपना दूसरा दस्ते मुबारक बैअ़त वाले हाथ पर रख कर फरमाया कि यह उसमान की तरफ से है। यह बैअत बेअते रिजवान थी जो हुदैबिया में एक पेड़ के नीचे हुई। इसको अल्लाह ने यूं फरमाया-

"अल्लाह उन ईमान वालों से राज़ी हुआ जिन्होंने पेड़ के नीचे आपसे बेअत की"

(सूरह फतह्-18)

कुरैश के चार आदमी आपके पास आये और चारों ने आपसे आने का कारण जानना चाहा हर एक को आप यही उत्तर देते कि हम केवल उमरा करने आये हैं। जंग करने नहीं आये हैं। लेकिन कुरैश के वह आदमी इस जवाब से संतुष्ट नहीं हुए, उन चारों में से एक उरवा बिन मसऊद सकफ़ी थे। वह जब अपने साथियों से लौट कर मिले और कहने लगे कि ऐ मेरी क़ौम-बखुदा मैंने बड़े बड़े बादशाहों की ज़ियारत की है। मैं कैसर किसरा तथा नजाशी से भी मिला लेकिन बखुदा जो मान, इज्जत, आदर मुहम्मद के असहाब उनकी करते हैं उतनी इज़्जत किसी बादशाह की उसके मुसाहबीन को करते नहीं देखा और जो कुछ उन्होंने देखा वह उनको बतला दिया।

www.abulhasanalinadwi.org

सुल्हे हुदैबीया (समझौता)

कुरैशने सुहैल बिन अम्र को भेजा।जब आपने उनको आते देखा तो आपने फरमाया कि कौम ने सुलह का फैसला कर लिया है। तभी उन्होंने इनको भेजा है। आपने समझौता लिखने को फरमाया। लिखने वाला बुलाया गया वह हज़रत अली थे। आपने फरमाया लिखो बिसमिल्लाह हिर्ररहमानीर्रहीम। सहैल बोले हम रहमान को जानते नहीं। लिखो (बिस्मिकल्लाहुम्मा) जैसे पहले लिखा करते थे। इस पर मुसलमानों ने आपत्ति उठाई और कहने लगे हम इसको नहीं लिखेंगे हम तो बिसमिल्लाह हिर्ररहमानिर्रहीम ही लिखेंगे आपने फ़रमाया अच्छा बिस्मिकल्लाहुमा ही लिखो। फिर आपने फ़रमाश लिखों कि यह है वह (सन्धि) जिसका अल्लाह के रसूल मुहम्मद ने फ़ैसला फरमाया। इस पर सुहैल ने आपत्ति (एतिराज़) उठाई कि हम यदि यह स्वीकार करलें कि आप अल्लाह के रसूल हैं तो कोई झगड़ा ही नहीं फिर हम आपको उमरा करने और बैतुल्लाह की जियारत से नहीं रोकेंगे। आपने फ़रमाया कि यह तो सत्य है। कि मैं अल्लाह का भेजा हुआ नबी हूँ। यह अलग बात है कि तुम इससे इनकार करो। चलो यही लिख लो मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह हज़रत अली से आपने फरमाया जो पहले लिखा था। उसको मिटा दो हज़रत अली ने उसको मिटाने से इनकार किया और कहा कि यह मुझसे न हो सकेगा आपने हज़रत अली से फरमाया अच्छा वह जगह मुझे दिखाओ जहाँ यह जुम्ला लिखा है हज़रत अली ने यह स्थान दिखलाया और आपने वह लिखा मिटा दिया और आपने उनसे फरमाया कि इस समझौते के कारण अब तुम हमें उमरा और तवाफ़ से नहीं रोक सकते। सुहैल कहने लगे कि मुझे डर है कि कहीं अरब यह न समझ बैठें कि मैंने यह समझौता किसी डर या दबाव में आकर किया है। आप अगले वर्ष तवाफ कर सकते हैं फिर यह लिख दिया गया सुहैल ने कहा कि अगर हमारा आदमी आपके यहाँ आ जाये तो

www.abulhasanalinadwi.org

आप हमारे आदमी को हमें लौटा देंगे। चाहे वह मुसलमान हो गया हो। मुसलमान बोले वाह क्या बात कही है। कैसे हम एक मुसलमान को मुशरिकीन के पास लौटा दें। यह बातें हो रही थी कि इसी बीच अबू जुंदल सुहैल बिन कैद से भाग कर बाहर आये। उनके पैरों में बेड़ी पड़ी थी। वह मक्का के नशेब से आये थे और अपने को मुसलमानों के हवाले कर दिया। सुहैल बोले कि- ऐ मुहम्मद समझौते के हिसाब से यह पहला मामला है इसलिए अबू जुनदल को हमें लौटा दें। आपने उत्तर दिया कि अभी तो समझौता मुकम्मल (पूर्ण) नहीं हुआ। सुहैल बोला कि यदि ऐसा है तो हमें आपसे समझौता नहीं करना है। आपने फ़रमाया कि इसको मेरे लिए इजाज़त दे दें। सुहैल बोले कि मैं आपके लिए इसको इजाज़त नहीं दे सकता। तो आपने फरमाया क्यों नहीं कर दो। सुहैल ने कहा कि यही करूंगा अबू जन्दल बोले मुसलमानो क्या तुम मुझे मुश्किरीन के पास लौटा दोगे, जबकि मैं तुम्हारे पास मुसलमान होकर आया हूँ। जो कुछ कष्ट तकलीफ पहुँची उसको क्या तुम नहीं देख रहे हो उन्होंने अल्लाह के रास्ते में बड़ी तकलीफ उठाई है। आपने उनको मुशरिकीन के हवाले कर दिया। दोनों इस पर सहमत हुए कि इस वर्ष आपस में जंग नहीं करेंगे। लोग शांति रहेंगे। कोई किसी के मामले में हस्तक्षेप (मुदाखलत) नहीं करेगा। कुरैश का कोई आदमी बिना इजाजत मुहम्मद के पास आ जाता है तो वह उसको लौटा देंगे लेकिन कोई मुसलमान कुरैश के पास आ जाता है तो वह उसको नहीं लौटायेंगे। मआहदे में मुहम्मद की तरफ जो दाखिल होना चाहे हो सकता है इसी प्रकार कुरैश के मुआहदे में जो आना चाहे आ सकता है।

मुसलमानों की परीक्षा (इम्तिहान)

अब मुसलमानों ने सुलह और वापसी से सम्बन्धित जो समझौता देखा और आपने जो कुछ भी सहन किया उससे मुसलमानों को कष्ट हुआ कि जान पर बन आई इसका प्रभाव उनके दिल व दिमाग़ पर

www.abulhasanalinadwi.org

बहुत पड़ा। हज़रत उमर हज़रत अबूबकर के पास आये और कहा कि क्या रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने हमसे मक्का चलने तथा काबा का तवाफ करने को नहीं कहा था। हज़रत अबूबक्र ने कहा कि हाँ फ़रमाया तो था। तुम मुझे बताओ कि आपने तुमसे इसी वर्ष चलने और बैतुल्लाह की जियारत तथाउसके तवाफ़ के लिए कहा था। हज़रत उमर ने कहा कि नहीं जब रसूलुल्लाह (सल्ललाहु अलैहि व सल्लम) समझौते से फ़ारिग हुए तो आप कुरबानी के जानवरों के पास आये और उनकी कुरबानी की उसके बाद सर मुण्डवाया। यह बात मुसलमानों के लिए किसी हादसे से कम नहीं थी। मदीने से निकलते समय उनको यह ख्याल भी नहीं आया था कि हम मक्का न जायेंगे और तवाफ़ न कर सकेंगे लेकिन उन सबने जब रसूलुल्लाह (सल्ललाहु अलैहि व सल्लम) को कुरबानी करते और सर मुण्डवाते देखा तो उन सबने भी कुरबानी की और अपने सरों को मुण्डवाया फिर आप मदीने की तरफ लौटे तो रास्ते ही में यह आयत नाजिल हुई।

"ऐ मुहम्मद हमने तुमको सफलता दी खुली और साफ ताकि खुदा तुम्हारे अगले और पिछले गुनाह (पाप) माँफ कर दे और तुम पर अपनी नेमतें (निअ़मत) पूरी कर दे और तुम्हें सीधे रास्ते पर चलाये और खुदा तुम्हारी जबरदस्त मदद (सहायता) करे

(फतेह-9)

हज़रत उमर ने आपसे पूछा कि या रसूलुल्लाह क्या यह फत्ह (सफलता) है। आपने फरमाया कि हाँ।

हो सकता है कोई बात देखने में तुमको अच्छी न लगे मगर वह तुम्हारे हक में भली हो।

जब आप मदीना तशरीफ़ ले आये तो कुरैश का एक आदमी मुसलमान होकर आया जिसका नाम अबू बसीर उर्बा बिन उसैद था, कुरैश ने दो आदमियों को अबू बसीर को वापस लाने के लिए भेजा

www.abulhasanalinadwi.org

और समझौते का हवाल दिया। आपने उस आदमी को उनके हवाले कर दिया वह दोनों उसको लेकर चले वह उन दोनों की कैद से भाग गया और समुद्र के किनारे आ गया दूसरी तरफ अबू जुन्दल उनके कैद से भाग गये और वह अबू बसीर से आकर मिल गये अब जो भी मुसलमान कुरैश से भाग कर जाता वह इनसे आकर मिल जाता। इसी प्रकार यह एक गिरोह बन गया। और कुरैश का जो भी काफ़ला रात में गुजरता उसको यह लोग रोक लेते और उसका सामान छीन लेते और उन सबको मार डालते। कुरैश ने आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से प्रार्थना की और रिश्तेदारी व अल्लाह का वास्ता दिया कि आप इन लोगों को वापस बुला लें अब आपके पास जो भी आयेगा वह सुरक्षित होगा। बाद के हालात ने यह साबित (प्रमाणित) कर दिया कि सुल्हेहुदैबीयासे जिनको रसूलुल्लाह ने कुरैश को अधिक छूट देकर स्वीकार किया था और कुरैश उसको लाभदायक समझ रहे थे मुसलमानों ने अपनी ईमानी कुव्वत और रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की पूर्ण इताअत (आज्ञा कारिता) की भावना से सहन कर लिया था। वास्तव में जज़ीरतुल अरब में इस्लाम के प्रचार के लिए एक दरवाजा खुल गया। इसने मक्का की फत्ह का भी दरवाजा खोल दिया। इस सुलह से बादशाहों, सम्राटों, सरदारों को हक की दावत देने का मार्ग खुल गया। अल्लाह ने सच कहा कि-

"बहुत सी बातें ऐसी हैं जो तुमको बुरी मालुम पड़ती हैं। वास्तव में वह तुम्हारे हक में लाभदायक होती है। और ऐसा भी होता है कि कोई बात तुम चाहते हो लेकिन वह तुम्हारे लिए हानिकारक हो सकती है। उसमें भलाई न हो। अल्लाह सब जानता है। तुम्हें इसकी खबर नहीं।

(सूरह बक़रह 216)

www.abulhasanalinadwi.org

ख़ालिद बिन वलीद व अम्र बिन आस का इस्लाम लाना

सुल्हे हुदैबीया ने दिलों को फत्ह कर लिया। ख़ालिद बिन वलीद जो कुरैश की घुड़सवार के कप्तान और फ़ौज के सेनापति थे। इन्होंने बड़ी-बड़ी जंगे जीती हैं। इसीलिए रसूलुल्लाह ने उनका नाम सैफुल्लाह रखा वह हर तरह सफल व बामुराद रहे। अल्लाह ने इनके हाथ पर शाम की फत्ह लिख दी।

अम्र बिन आस भी हुदैबिया के बाद इस्लाम लाये। यह भी बड़े जनरल (सेनापति) तथा अपनी कौम के सरदार थे। अल्लाह ने इनके जरिये मिस्र फत्ह करवाया। दोनों हुदैबिया के बाद मदीने आये और मुसलमान हुए। इस सुल्ह ने मुसलमानों और मुशरिकीने मक्का को करीब आने का मौका दिया। मुशरिकीन मुसलमानों की भलाइयों व व्यवहार से बेहद प्रभावित हुए और उसी वर्ष अधिक संख्या में मुसलमान हुए।

बादशाहों और सरदारों को इस्लाम की दावत

सुलहे हुदैबिया समाप्त हुई और वातावरण शान्त हुआ तब रसुलुल्लाह (सल्ललाहु अलैहि व सल्लम) ने संसार के बादशाहों, सम्राटों तथा अरब के सरदारों को पत्र लिखे जिनमें इस्लाम की दावत दी। अल्लाह के रास्ते पर चलने के लिए बड़े भले अन्दाज से अल्लाह की तरफ बुलाया गया। हर एक के पास उसकी हैसियत के मुताबिक राजदूत भेजे। सभी असहाब ने आपसे अर्ज किया कि ऐ अल्लाह के रसूल वह आपके पत्र को उस समय तक स्वीकार नहीं करेंगे जब तक आपके पत्र में आपकी मुहर न हो। रसूलुल्लाह (सल्ललाहु अलैहि व

www.abulhasanalinadwi.org

सल्लम) ने इसके लिए एक विशेष मुहर बनवाई जिसका हलका चाँदी का था तथा जिस पर मुहम्मद रसूल अल्लाह लिखा था। आपने जिन बादशाहों को पत्र भेजे उनमें रूम के बादशाह, हिरकल फारस के किसरा, हबश के नजाशी और मिस्र के मकूकश के नाम सर्वश्रेष्ठ (सरफेहरिस्त) हैं। हिरकल मकूकश तथा नजाशी ने आपके पत्र को आदर दिया तथा उसका उत्तर बड़े अदब व एहतराम से दिया। हिरक़ल ने आपके बारे में सही हाल जानना चाहा इस कारण उसने ऐसे आदमी की खोज की जो आपके जीवन के बारे में पूर्ण सूचना रखता हो ताकि वह सही व सत्य सूचना उपलब्ध करा सके। उस समय ग़ज़्ज़ा में अबू सुफ़यान थे वह उस समय तिजारत की गरज़ से आये हुए थे। उसने इनको बुलवाया। बादशाह के सवाल (प्रश्न) समझदारी जानकारी तजर्बाकारी तथा अनुभवी के सवाल थे। जिसको मजाहिब के इतिहास, नबियों की विशेषताओं, उनकी जीवनी, उनके कामों का उनसे मुआमला और अल्ला की सुन्नत से भली भांति अवगत है। अबू सुफ़यान ने उनके प्रश्नों का सही व सत्य उत्तर दिया और सब कुछ सही सही बता दिया केवल इसलिए कि लोग यह न कहें कि अरब झूठ बोलता है। जब हिरकल ने पूरी बात सुन ली जो उसने पूछी थी तो उसको शत प्रतिशत विश्वास हो गया कि आप नबी हैं। उसने कहा कि जहाँ मेरा कदम है। वहाँ तक उसका कब्जा होगा। मुझे मालूम था कि एक नबी आने वाला है। यह यकीन नहीं था कि वह तुम्हारे में से होगा। यदि मैं उनके पास जा सकता तो अवश्य उनसे भेंट करता और वहां होता तो उनके पैर धोता। रूम के माननीय और बड़े व्यक्तियों को उसने बुलवाया और दरवाजे को बन्द करने को कहा। फिर उन सब को मुखातब (सम्बोधित) करते हुए उनसे कहा कि ऐ देश वासियो यदि तुम भलाई चाहते हो और यह चाहते हो कि तुम्हारा देश सुरक्षित रहे तो तुम इस नबी पर ईमान ले आओ वह सुनकर तेजी से भागे तो दरवाजे को बन्द पाया। हिरकल ने जब उनकी यह नफ़रत क्रोध देखी

www.abulhasanalinadwi.org

तो इनके ईमान से मायूस हो गया और उनसे वापस आ जाने को कहा और उनसे बोला कि अभी जो बात मैंने तुमसे कही थी वह तुम्हारी परीक्षा थी। मैंने तो यह बात तुमको तुम्हारे दीन पर कायम रहने के लिए कही थी। सो मैंने देख लिया। सब प्रसन्न हुए और उनको सजदा किया। उसने उन सबको तोहफ़े (उपहार) देकर विदा किया हज़रत अबू बक्र व उमर के जमाने में उसका देश उसके हाथ से जाता रहा।

नज्जाशी और मक़ूकश ने आपके राजदूतों को आदर दिया और सम्मान दिया। और दोनों ने उत्तर बड़ी नम्रता से दिया। मक़ूक़श ने तोहफ़े व उपहार भेजे उनमें लड़कियां भी थीं। इन्हीं में एक हज़रत मारया थीं जो रसूलुल्लाह के बेटे इब्राहीम की माता थीं।

जब आप का पत्र किसरा के सामने पढ़ा गया तो उसने आपके पत्र को फाड़ दिया और बोला कि मेरा गुलाम होकर मुझे ऐसा पत्र लिखता है। जब इस बात की सूचना रसूलुल्लाह को मिली तो आपने फरमाया कि अल्लाह ने उसके देश के टुकड़े टुकड़े कर डाले। किसरा ने बाजान को आपको लाने के लिए निर्देशित किया। बाज़ान उस समय यमन का गवर्नर था। यह सूचना जब आपको मिली तो आपने फ़रमाया कि अल्लाह ने उसके बेटे शेरवैहि को उस पर मुसल्लत कर दिया। इस तरह अल्लाह ने उसकी सल्तनत (देश) को बरबाद कर दिया और मुसलमानों को उसका मालिक बना दिया। अल्लाह ने ईरान वालों को हिदायत दी वह मुसलमान हुए। आपने अरब सरदारों, बादशाहों को पत्र लिखे उनमें से कुछ तो मुसलमान हो गये और कुछ अपने दीन पर ही कायम रहे।

गज़व-ए-ख़ैबर

अल्लाह ने बैअते रिजवान में शरीक लोगों को हुदैबिया में सफलता, कामयाबी और निकट भविष्य में फतह और माले गनीमत

www.abulhasanalinadwi.org

की प्राप्ति की बशारत दी।

"अल्लाह उनसे राजी हो गया जिन्होंने पेड़ के नीचे आपसे बेअत की। अल्लाह ने वह सब जान लिया जो उनके दिलों में था। अल्लाह ने उन पर सकीनत उतारी और जल्दी ही उनको सफलता और बहुत से माले गनीमत को प्राप्त की सूचना दी अल्लाह गालिब और हिकमत वाला है।

(सूरह फ़त्ह- 18.19)

इन सफलताओं और माले गनीमत का पेश खेमा गज़्व-ए-खैबर था। खैबर एक यहूदी आबादी थी जिसमें बड़े और मजबूत किले थे। और यह जंगी छावनी भी थी। अल्लाह के रसूल ने चाहा कि अब मुसलमान यहूदियों की साज़िशों (षड़यंत्रों) से सुरक्षित रहें और उनकी ओर से इतमिनान हो जाये यह बस्ती मदीने के शिमाल मशरिक़ (पूरब-उत्तर) में थी।

लशकरे इस्लाम आपकी क्यादत में

जिलहिज्जा व मुहर्रम के कुछ हिस्से में हुदैबिया से लौटने के बाद आपने मदीने में कयाम फरमाया। मुहर्रम की शेष तारीखों में आप खैबर के लिए रवाना हुए। आमिर बिन उकबा इस लशकर के साथ थे और यह रजजिया अशआर (कविता) पढ़ते थे।

1. बा खुदा यदि अल्लाह ने हमें हिदायत न दी होती तो आज हम न हिदायत पाते न सदका करते और न नमाज़ पढ़ते।

2. हमतो उनमें से है जिन पर कोई क़ौम हमला करती है, फसाद फैलाती है तो हम उससे इनकार करते हैं।

3. ऐ अल्लाह हम पर सकीनत शान्ति उतार और हमको मुकाबले के लिए साबित कदम रख।

www.abulhasanalinadwi.org

अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) इस लशकर को लेकर बढे। इस लशकर में 1400 आदमी शरीक थे उनके पास 200 घोड़े थे। आपने उन लोगों को जंग में शरीक होने से रोक दिया जो हुदैबिया के मौके पर नहीं थे। इसमें महिलाओं की संख्या 20 थी जो मरीजों, जखमियों की देखभाल इलाज तथा जखमियों की पट्टी इत्यादि के लिए शामिल थी। आपने लशकर की ग़िजा (खाद्यान्न) इत्यादि को उपलब्ध कराने के निर्देश दिये केवल सत्तू उपलब्ध हो सका। उसी पर लोगों ने संतोष किया। जब खैबर के पास पहुँचे तो आपने उसके खैर की दुआ फरमाई और उसकी बुराई से पनाह माँगी। आपकी यह आदतें मुबारका थी कि आप किसी पर रात में हमला नहीं फरमाते थे। सुबह तक आप इन्तेजार (प्रतिक्षा) फरमाते जब आप सुबह की अजान सुन लेते तो रूक जाते। यदि अजान की आवाज नहीं आती तो जंग की तैयारी फरमाते। आपने जब अजान की आवाज नहीं सुनी तो जंग की तैयारी की और क़ौम भी तैयार हो गई। आपको खैबर के मजदूर अपनी कुदाल व फ़वाडे के साथ नजर आये। जब उन लोगों ने आपको तथा आपके लशकर को देखा तो चीखने लगे कि मुहम्मद और उसका लशकर आ गया है। और वह उलटे पैर भागने लगे। अल्लाह के रसूल ने फरमाया कि अल्लाह बहुत बड़ा है। खैबर बरबाद (नष्ट) हो गया। हम जब किसी कौम पर हमला करते हैं तो उसकी सुबह बुरी होती है।

कामयाब लीडर (सफ़ल सेनापति)

आपने खैबर के किलों के पास पड़ाव डाला और एक एक करके उसको फतह करना शुरू कर दिया। प्रथम किला जो फतह हुआ वह नाइम का था। इसको हज़रत अली ने फतह किया यह किला मुसलमानों के लिए बड़ा सख्त था। हज़रत अली की आँखे उठ आई थी आपने फरमाया कि झन्डा कल उसके हाथ में होगा जो अल्लाह और उसके

www.abulhasanalinadwi.org

रसूल को अधिक पसंदीदा होगा अल्लाह उसी के हाथ पर फतह देगा। हर एक की इच्छा थी कि झन्डा कल उसके हाथ में हो। रसुलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने हज़रत अली को बुलवाया। उनकी आँखे दुख रही थी। हज़रत अली आपके बुलावे पर हाजिर हुए आपने उनकी आखों पर अपना लोआबे दहन लगाया और उनके लिए दुआ फरमाई। हजरत अली की आँख ठीक हो गई जैसे उन आँखों में कोई तकलीफ़ थी नहीं। फिर आपने उनको झन्डा इनायत फरमाया। हजरत अली ने पूछा कि क्या मैं उस समय तक जंग करू जब तक वह सब मुसलमान न हो जायें। रसूलुल्लाह (सल्ललाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया कि तुम यहाँ से रवाना हो और उनके सामने पड़ाव डाल दो फिर उनको इस्लाम की दावत दो और उनको बताओ कि अल्लाह ने अपने हुकूक क्या अनिवार्य किये है (लागू किये) खुदा की कसम उनमें से एक भी तुम्हारी वजह से मुसलमान हो गया तो वह तुम्हारे लिए सुर्ख ऊँटों से बेहतर है।

हज़रत अली और यहूद का मुकाबला

हज़रत अली खैबर शहर पहुँचे तो मरहब जो मश्हूर शह सवार था रजजिया(युद्ध पर मारने वाले) अशआर (कविता) पढ़ते हुए निकला। फिर उससे लड़ाई हुई उसको हज़रत अली ने ऐसी मार मारी कि वह उसकी ख़ौद फाड़ती हुई दाढ़ तक पहुँच गयी और अल्लाह ने फत़ह (कामयाबी) दी।

कार्य (काम) थोड़ा और उसका बदला बड़ा

खैबर वालों की तरफ से हबशी गुलाम जो बकरियां चराने पर रखा गया था जब खैबर वालों को असलेहा उठाते देखा तो उनसे पूछा आखिर तुम चाहते क्या हो वह बोले हम तो उस व्यक्ति से लड़ना

www.abulhasanalinadwi.org

चाहते हैं जो अपने को नबी कहता है। नबी के जिक्र से उसके हृदय पर असर पड़ा और वह अपनी रेवड़ सहित आपकी सेवा में आ गया और कहने लगा तुम क्या कहते हो और काहे की दावत देते हो। आपने उससे फरमाया कि हम इस्लाम की दावत देते हैं। और तुम इस बात की गवाही दो कि अल्लाह के अलावा और कोई पूजा के लायक (योग्य) नहीं है। और मैं रसूल हूँ और तुमको यह विश्वास दिलाना होगा कि तुम अल्लाह को छोड़कर किसी और की पूजा नहीं करोगे। गुलाम बोला मेरे लिए क्या है? यदि मैं मुसलमान हो जाऊ तो आपने फ़रमाया कि इसका बदला जन्नत है। वह इस्लाम ले आया और कहने लगा कि ऐ अल्लाह के नबी मेरे पास यह बकरियों का रेवड़ अमानत है। आपने फ़रमाया कि तुम इसको हसबा के मैदान में छोड़ आओ। अल्लाह तुम्हारी अमानत को अदा कर देगा उस गुलाम ने ऐसा ही किया उसने रेवड़ को मालिक के पास लौटा दिया। यहूदियों को उसके मुसलमान होने की सूचना मिल गई। इस अवसर पर आपने नसीहत फरमाई और जिहाद के लिए लोगों को उभारा। जब मुसलमान और यहूद का मुकाबला हुआ शोहदा में वह गुलाम भी शामिल था। हुजूर सलल्लाहु अलेहि व सल्लम सहाबा से मुखातब हुए और फरमाया अल्लाह ने इस गुलाम को इज्जत बख्शी इसको खैर की ओर खींच लाया। मैंने देखा कि उसके सरहाने जन्नत की हूरें मौजूद हैं। हालाकि उसने अल्लाह के लिए एक दिन भी सजदा नहीं किया।

मैंने इसलिए आपकी इताअत नहीं की

एक दिहाती आपके पास आया और मुसलमान हो गया वह आपसे कहने लगा कि मैं आपके साथ हिजरत करूंगा- आपने अपने बाज असहाब (साथियों) को नसीहत फरमाई। ग़जवा खैबर के मौके पर आपने माले गनीमत का वितरण फरमाया। आपने उसका भी हिस्सा

www.abulhasanalinadwi.org

लगाया। जबकि वह उस समय अपनी चारागाह में था। जब वह आया और उसको उसका हिस्सा मिला तो वह बोला कि इसके लिए मैं आपके साथ थोड़ी हुआ था। मेरी तो इच्छा यह थी कि हलक की तरफ इशारा करके यहां नेजा लगता और मेरी मौत होती और मैं जन्नत में जाता। आपने फ़रमाया कि यदि तुम सत्य कह रहे हो तो ऐसा ही होगा। सब जंग के लिए तैयार हुए और वह गुलाम आपकी खिदमत में लाया गया वह शहीद हो गया था कि आपने फरमाया कि यह वही है। लोगों ने जवाब दिया कि जी हाँ यह वही है। आपने फ़रमाया कि अल्लाह ने इसकी बात को सच कर दिखाया। फिर आपने अपने जुब्बा मुबारक में उसे कफ़न दिया फिर उसे लाया गया और उसकी नमाज़े जनाजा पढ़ाई उसके लिए दुआ फ़रमाई कि ऐ अल्लाह यह तेरा गुलाम है। तेरे रास्ते में तेरे लिए हिजरत को निकला और शहीद हो गया इसकी मैं गवाही देता हूँ।

खैबर में क़ियाम (ठहरने की शर्त)

एक-एक कर सब किले फतह हो रहे थे और कई दिन जंग, लड़ाई, मुहासिरे में गुजर रहे थे अंत में यहूद ने आजिज आकर सुलह (समझौता) करना चाही। लेकिन आप उनका यहां से जिला वतन और बेदखल करना चाहते थे। वह कहने लगे कि ऐ अल्लाह के रसूल हमें यहीं रहने दें हम खेती बाड़ी में मशगूल (व्यस्त) रहेंगे आपने उनको इस शर्त (प्रतिबंध) के साथ इजाजत दे दी कि खेती का आधा मुसलमानों को मिलेगा। रसुलुल्लाह पैदावार की तकसीम (वितरण) के लिए हजरत अब्दुल्लाह बिन रवाहा को भेजा करते थे वह अनदाजे से उसको आधा आधा करते फिर उनसे कहते इसमें से तुम जो चाहो ले लो इस इनसाफ को देखकर वह कहते हैं कि यही कारण है। जो आकाश और धरती कायम है।

www.abulhasanalinadwi.org

यहूद की मुजरिमाना साजिश

इस ग़जवे में सलाम बिन मुशकम की पत्नी जैनब बिंत हारिस यहुदीया ने नबी सल्ललाहो अलैहे व सल्लम को एक भुनी बकरी जहर मिलाकर तुहफे में पेश की। फिर आपसे पूछा कि आपको कौन सा गोश्त पसंद है। आपने फरमाया दस्त का। उस दस्त में जहर की मात्रा अधिक कर दी। जब आपने निवाला लिया तो दस्त ने स्वयं कहा कि मुझमें जहर मिलाया गया है। आपने वह लुकमा (निवाला) उगल दिया। फिर आपने यहूद को जमा किया और उनसे फरमाया कि यदि मैं तुमसे कुछ पूछूं तो सच सच बताओगे। उन्होंने कहा हां क्यों नही आपने फरमाया कि तुमने इस बकरी में जहर मिलाया? उन्होंने कहा कि हां आपने फ़रमाया कि तुम्हें ऐसा करने के लिए किसने मजबूर (बाध्य) किया उन्होंने जवाब दिया कि हम आपकी परीक्षा लेना चाहते थे कि यदि आप झूठे होंगे तो (नाऊजो बिल्लाह) आपसे छुट्टी मिल जायेगी और यदि आप सच्चे हैं और नबी हैं तो आपको नुकसान (हानि) न होगा। फिर वह महिला आपके पास लाई गई और कहने लगी कि मैंने आपके कत्ल की साज़िश की थी। आपने फ़रमाया कि अल्लाह तुम्हे मुझ पर काबू नहीं दे सकता। सहाबा फ़रमाने लगे कि आप आदेश दें हम इसको कत्ल कर देंगे आपने मना फ़रमाया और आपने उसको कोई सजा (दण्ड) नहीं दी और नहीं आपने उसको कत्ल करने की आज्ञा दी। लेकिन जब उसके खाने से बिश़र बिन अलबराआ बिन मारूर की मौत हुई तो फिर उसको कत्ल कर दिया गया।

फुतूहात (सफलताएं) और माले ग़नीमत

जब रसूलुल्लाह (सल्ललाहु अलैहि व सल्लम) ने खैबर से फुरसत पाई तो आपने फ़िदक की तरफ रूख किया और जब आप वादिए कुरा तशरीफ़ ले गये तो आपने वहां इस्लाम की दावत दी उनको

www.abulhasanalinadwi.org

आपने बतलाया कि यदि तुम मुसलमान हो जाते हो तो तुम्हारी जान, तुम्हारा माल, सुरक्षित है और उसका हिसाब अल्लाह पर होगा। यहूद के पास जो कुछ था वह मुसलमानों को दे दिया रसूलुल्लाह ने इस माले गनीमत को मुसलमानों में तक़सीम किया। वादिये कुरा में खजूर के बाग़ात और जमीनें यहूद के कब्जे में रहने दीं। इसी पर आपने उनसे मामला फरमाया। जब इसकी सूचना तीमा के यहूदियों को मिली तो उन्होंने भी खैबर, फिदक और वादिये कुरा के यहूद के साथ आपने जो मामला फरमाया था उसी आधार पर उन्होंने भी आपसे सुलह कर ली। आपने उनका धन उन्हीं के पास रहने दिया और मदीने वापस तशरीफ़ ले आये।

उम्रे की कज़ा

आने वाली हिजरी के सातवे वर्ष आप और मुसलमान उमरतुल कज़ा की नियत से तशरीफ ले चले। कुरैश ने किसी प्रकार की मुजाहमत नहीं की और अपने घरों को ताला लगाकर पहाड़ों पर चले गये। आपने मक्का में 3 दिन क़ियाम फ़रमाया और उमरा किया। अल्लाह ताला ने फरमाया। "बेशक अल्लाह ने अपने पैगम्बर को स्वप्न की घटना सच्ची कर दिखाई कि अल्ला चाहे तो तुम अदब वाली मस्जिद (काबा) में अमन के साथ जरूर दाखिल होगे, (उमरे बाद) सर मुडाओगे, बाल कतरवाओगे, तुमको कोई खतरा नहीं होगा और वह जानता था। फिर उसके अलावा उसने एक करीब की फतह (खैबर की तुमको) खबर दी"

(सूरह फतह - 26)

लड़कियों की तरबियत में मुकाबला

इस्लाम के कारण लोगों और लोगों की सोच में जबरदस्त परिवर्तन आया। वह लड़की जो पहले रईसों और इज्जतदार लोगों में

www.abulhasanalinadwi.org

लज्जा और ज़लील समझी जाती थी अब इस्लाम के कारण उसकी तरबियत, शिक्षा में मुकाबला होने लगा और उसको चाहा जाने लगा। जब आपने मक्का से निकलने का इरादा किया तो उमामा बिन्ते हमजा चाचा चाचा कहते हुए साथ हो गई। हजरत अली ने उनको लिया और हज़रत फ़ातमा के हवाले कर दिया और उनसे कहा कि यह देखो यह चाचा हमज़ा की लड़की है। इसके लिए हज़रत अली, जैद और जाफर में कशमकश होने लगी। हजरत अली ने कहा कि यह मेरे चाचा की लड़की है। हज़रत जाफ़र ने कहा कि यह मेरी चचा जाद बहन है। और इसकी खाला मेरी पत्नी है। हज़रत जैद ने कहा कि यह मेरे भाई की लड़की है। नबी सल्ललाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि खाला का हक़ जियाद है। खाला माँ समान होती है।

हुजूर सलल्लाहु अलैही व सल्लम ने हज़रत अली से फरमाया कि तुम मुझसे और मैं तुमसे हूँ। हज़रत जाफ़र से कहा कि तुम सीरत और सूरत दोनों में मुझसे मुशाबेह हो। हज़रत जैद से फ़रमाया कि तुम मेरे भाई हो और मेरे मित्र हो।

गजवा-ए-मूता

मुसलमान सफीर का कत्ल और उसका अन्जाम (परिणाम)

रसूलुल्लाह ने एक पत्र देकर हारिस बिन उमैर अजदी को शरहबील बिन अम्र अलग़स्सानी जो उस समय बसरे का हाकिम था तथा कैसरे रूम के मातेहत था के पास भेजा। शरहबील ने उनको धोखा दिया और फिर कत्ल कर दिया। ऐसा अब तक नहीं हुआ था कि जो सुफ़रा (राजदूत) बादशांह और रईसों के पास भेजे जायें और वह कत्ल कर दिये जायें। राजदूतों के लिए खतरे की बात थी और जो पत्र लिख

www.abulhasanalinadwi.org

रहा है और जिसको लिख रहा है दोनों के लिए जिल्लत की बात थी। इसलिए इसको रोकना आवश्यक और इसकी सजा देना अनिवार्य था ताकि भविष्य में कोई फिर ऐसी हरकत न करे।

रूम की धरती पर इस्लामी लश्कर

जब रसूलुल्लाह को इसकी सूचना मिली तो आपने एक लशकर बसरे भेजने का इरादा फ़रमाया। यह बात जुमादलऊला वर्ष 8 हिजरी की है। मुसलमानों ने तैयारी कर ली उस समय उनकी संख्या 3000 तीन हज़ार थी आपने इस लश्कर की क़ियादत (नेतृत्व) हजरत जैद बिन हारिसा को सौंपी जो गुलामी से आजाद हुए थे। इस लश्कर में बड़े-बड़े महान सहाबा अंसार और मुहाजेरीन मौजूद थे। आपने फरमाया कि जैद को कुछ हो जाये तो क्यादत जाफ़र बिन अबी तालिब करेंगे और उनके बाद अब्दुल्लाह बिन रवाहा कियादत करेंगे इस लशकर के चलने का समय आया तो आपने उनको सलामती की दुआ के साथ रूखसत (विदा) किया उनके सामने एक लम्बा सफ़र था और शान शौकत रखने वाले दुश्मन से मुकाबला था। लशकर चला और मआ़न आकर उसने पड़ाव डाला। यहाँ पहुँचकर मुसलमानों को सूचना मिली कि हिरक़ल रूम से एक लाख के लशकर के साथ आ रहा है और अरब कबीला के लोग भी उसके साथ साथ शरीक हो रहे हैं। मुसलमानों ने मआन में आकर 2 रातें गुजारी स्थिति जानने के लिए उन्होंने वहाँ का मुआयना (निरीक्षण) किया फिर यह फैसला किया कि रसूलुल्लाह (सल्ललाहु अलैहि व सल्लम) को पत्र लिखकर स्थिति से अवगत करायें और उनकी तादाद की जानकारी आपको दे दें। फिर आप जो निर्णय लें उसके अनुसार हम अगला कदम उठायें। मजीद कुमक भेजें या इसी हाल में लड़ने का आदेश दें।

www.abulhasanalinadwi.org

हम जंग बल और संख्या के बलबूते नहीं करते

उस समय हजरत अब्दुल्लाह बिन रवाहा ने हिम्मत (साहस) बटोरा और लोगों से कहा कि ऐ कौम आज तुम उस चीज को बुरा समझ रहे हो जिसके लिए यह तुमने घर छोड़ा यानी शहादत। उन्होंने कहा कि हम दुशमन की तादाद और उसकी ताकत पर जंग नहीं करते। हम तो केवल उस दीन धर्म के लिए जंग करते हैं। जिसमें हमें मान दिया और इज्जत दी। बस खड़े हो जाओ। इसी में हमारा लाभ है। हम या तो सफलता पायेंगे या फिर शहादत फिर लोग चल पड़े।

जब मुसलमानों का लशकर बलका पहुँचा तो रूमी और अरबी लशकर को सामने पाया। मुसलमानों ने मूता नामी गाँव में पड़ाव डाला और हज़रत जैद के नेतृत्व (क़ियादत) में जंग शुरू (प्रारम्भ) हुई। हज़रत ज़ैद शहीद हुए उनका जिस्म (शव) तीरों से छलनी हो गया था उसके बाद क़ियादत हजरत जाफर ने संभाली और बराबर लड़ते रहे जब जंग का दबाव अधिक बढ़ा तो वह घोड़े से उतर पड़े और अपने घोड़े की टांग काट दी। लड़ते लड़ते आपका सीधा हाथ कट गया तो झण्डा बायें हाथ में ले लिया। बायाँ हाथ कटने पर झण्डे को दोनों बाजुओं से पकड़ लिया यहाँ तक कि शहीद हो गये। उनकी आयु उस समय 33 वर्ष की थी। उनके सीने और बाजुओं के बीच 90 ज़ख्म आये थे। और कोई ज़ख्म पीछे नहीं था जब हजरत जाफ़र शहीद हो गये तो झण्डा अब्दुल्लाह बिन रवाहा ने संभाल लिया। और आगे बढ़े। वह भी घोड़े से उतर आये। उनके चचाजाद भाई एक हड्डी जिस पर गोश्त लगा था लेकर आये उनको वह हड्डी देते हुए बोले कि इसको मुँह में डाल लो। तुमने कई दिन से कुछ नहीं खाया। उन्होंने उसमें से थोड़ा खाया। और शेष फेंक दिया और आगे बढ़े लड़े और शहीद हो गये।

www.abulhasanalinadwi.org

हज़रत खालिद की हिकमते अमली (रणनीति)

सब लोग हजरत खालिद की क़ियादत पर राजी हो गये। और झण्डा उनको दे दिया गया। वह बलवान थे, बहादुर (वीर) थे, और जंग की सियासत का भली प्रकार से ज्ञान रखते थे। उन्होंने इस्लामी लशकर का रूख जुनुब (दखिन) की ओर ढकेल दिया। रात हुई दोनों तरफ के लोगों ने जंग बंदी स्वीकार कर ली इसी में दोनों का लाभ था।

आँखों देखा हाल

इधर मुसलमान अपनी बहादुरी वीरता के जौहर दिखा रहे थे उधर रसूलुल्लाह (सल्ललाहु अलैहि व सल्लम) मदीने में इस जंग का आखों देखा हाल सुना रहे थे। अनस बिन मालिक कहते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्ललाहु अलैहि व सल्लम) ने हजरत जैद, जाफर और अब्दुल्लाह बिन रवाहा की शहादत की सूचना लशकर के मदीना पहुँचने से पहले ही दे दी थी। आपने फरमाया कि– जैद ने झण्डा लिया और वह शहीद हो गये फिर जाफर ने झण्डा लिया और वह शहीद हो गये। फिर झण्डा अब्दुल्लाह बिन रवाहा ने लिया और वह भी शहीद हो गये। इसके बाद आपकी आँखों में आसूं आ गये यहां तक कि हजरत खालिद ने झण्डा लिया और उनके हाथ पर अल्लाह ने सफ़लता दी।

जाफर तय्यार 2 पंख वाले

आपने फरमाया कि अल्लाह ने जाफर के दोनों हाथों को दो परों में तबदील फरमा दिया। वह उनके ज़रीये जन्नत में जहां भी चाहें उड़ कर जा सकते हैं। इसी लिए उनको जुल जनाहैन का लकब अता हुआ।

www.abulhasanalinadwi.org

हमला करने वाले न कि भागने वाले

लशकर वापसी में जब मदीने पहुंचा तो रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) और मुसलमानों ने आगे बढ़कर उनका स्वागत किया और लोग कहने लगे ए भगोड़ो अल्लाह के रास्ते में भी तुमने राहे फरार इखतियार की। तो आपने फरमाया कि यह भगोडे नहीं यह तो इन्शाअल्लाह हमला करने वाले हैं।

फ़तहे मक्का

जब अल्लाह का दीन मुकम्मल (पूरा) हो गया तो अल्लाह ने मुसलमानों को मक्का में दाखिल (प्रवेश) होने की इजाजत दी ताकि वह काबा को बुतों (मूर्तियों) से पाक व साफ़ कर दें और उसको संसार के लिए बाबरकत तथा मार्ग दर्शक बनाए और मक्का अपनी पहली हालत में लौट आये वह लोगों के लिए शान्ति का स्थान था।

बनी बक्र और कुरैश की अहद शिकनी (वचन भंगता)

अल्लाह ने फतह (सफलता) के लिए असबाब पैदा फरमाये और स्वयं कुरैश को इसका सबब बनाया। सुलह हुदैबिया की एक शर्त यह भी थी कि जो भी रसूलुल्लाह की पनाह में आना चाहे वह आ सकता है और जो कुरैश की पनाह में जाना चाहे वह आजाद होगा। इसीलिए बनूबकर ने कुरैश को तरजीह दी। उनकी हिमायत और उनका सहयोग स्वीकार किया और खुजाआ आप (सल्ललाहु अलैहि व सल्लम) की पनाह में आ गये।

बनू बकर और खुजाआ में बहुत दुशमनी थी। इस्लाम ने आकर उनके बीच एक दीवार खड़ी कर दी। अब दोनों कबीले शांति से अपने

www.abulhasanalinadwi.org

कैम्प में चले गये। बनू बकर ने इस मौके (अवसर) को गनीमत जाना और अपना पुराना हिसाब बेबाक करना चाहा। बनू बकर के कुछ लोगों ने मनसूबा (योजना) बनाकर बनी खुजाआ पर रात में हमला कर दिया। बनू खजाआ पानी के एक चशमे के पास पड़ाव डाले हुए थे। लड़ाई हुई और खुजाआ के कुछ आदमी मारे गये। कुरैश ने बनू बकर की असलहे से सहायता की कुरैश के इज्जतदार आदमियों ने इस जंग में रात के अंधेरे से लाभ उठाकर उनकी मदद की और उनको ढकेलते हुए हरम तक पहुंच गये। हरम पहुंच कर बनू बकर ने अपने कुछ साथियों से कहा कि अब तो हम हरम आ गये अपने उपास्यों का ध्यान रहे। इसका उत्तर उनको यह मिला कि आज के दिन कोई देवता नहीं। आज तो बदला ले लो आज के बाद फिर यह मौका (अवसर) नहीं मिलेगा।

रसूलुल्लाह से फरयाद

अमर बिन सालिम अल खुजाई आपसे आकर मिले और खड़े होकर कुछ अशआर (कविता) पढ़े। आपके और बनी खुजाआ के साथ जो मुआहदा (समझौता) हुआ था उसको याद दिलाया और मदद व सहायता के लिए अनुरोध किया और आपको बतलाया कि कुरैश ने माआहदा के खिलाफ किया है और अहद तोड़ा है। जब वह चश्मे पर थे तो उन्होंने रात में उन पर हमला कर रूकू सुजुद की हालत में उनको कत्ल कर दिया। आपने फरमाया "ऐ उमर बिन सालिम तुम्हारी सहायता जरूर (अवश्य) की जायेगी।"

अहद के नवीनीकरण की कुरैश की कोशिश (प्रयत्न)

जब रसूलुल्लाह (सल्ललाहु अलैहि व सल्लम) को यह सूचना

www.abulhasanalinadwi.org

मिली तो आपने फरमाया कि मैं देख रहा हूँ कि अबू सुफयान मुआहदा (समझौता) की तजदीद (नवीनीकरण) तथा समय बढ़ाने के लिए आये हैं और ऐसा ही हुआ। कुरैश ने जो कुछ किया था उस पर भयभीत थे।

अपने माता पिता तथा औलाद पर नबी को तरजीह

अबू सूफयान आपकी सेवा में मदीने आये तो अपनी बेटी (उम्मे हबीबा) रसूलुल्लाह की पवित्र पत्नी के घर गये। अबू सुफयान ने आपके बिस्तर पर बैठना चाहा तो उम्मे हबीबा ने बिस्तर लपेट दिया। उन्होंने कहा कि! ऐ बेटी मैं यह नहीं समझ पा रहा हूँ कि तुमने इस बिस्तर को मेरे लायक (योग्य) नहीं समझा या मुझको इस बिस्तर के लायक नहीं समझा। उन्होंने उनको उत्तर दिया कि यह बिस्तरा रसूलुल्लाह का है। आप मुशरिक और नापाक हैं। मैं यह नहीं चाहती कि आप हुजूर के बिस्तरे पर बैठें। उन्होने कहा तुम हमसे अलग होने के बाद बहुत बदल गयी हो। तुममें बड़ा परिवर्तन आ गया है।

अबू सूफयान की हैरत (आश्चर्य) परेशानी और असफलता

अबू सूफयान आये और आपसे बात की लेकिन आपने उनको उनकी बात का कोई उत्तर नहीं दिया। फिर वह हजरत अबूबकर के पास आये और उनसे बात की कि वह उनके लिए रसूलुल्लाह से बात करें। हज़रत अबू बक्र ने स्पष्ट रूप से कहा कि मैं बात नहीं कर सकता। फिर वह बारी बारी हजरत उमर, उसमान और अली और फातिमा के पास आये। किसी ने उनकी बात का उत्तर नहीं दिया। कहा कि मामला बड़ा अहम (महत्वपूर्ण) है इसमें हम कुछ नहीं कर सकते।

www.abulhasanalinadwi.org

मक्के की तैयारी

रसूलुल्लाह ने सबको तैयारी के आदेश दिये और इसका प्रबन्ध किया कि कार्यवाही खुफया (गुप्त) रहे। किसी को इसकी सूचना न हो। फिर आपने लोगों को बता दिया कि आप (सल्ललाहु अलैहि व सल्लम) मक्का कूच करने वाले हैं। आपने तैयारी पूरी करने के आदेश दिये और फरमाया कि- " ए अल्लाह कुरैश का कोई जासूस और मुखबिर अपना कार्य न कर सके यहाँ तक कि हम मक्का पहुँच जायें। आपने रमजान में मदीने से कूच किया (चले) आपके साथ दस हजार का लशकर था। रसूलुल्लाह जहरान के स्थान पर पहुँच गये। अल्लाह ने हर चीज को कुरैश से छिपा रखा। रास्ते में आपके चचा जाद भाई अबू सुफयान मिले आपने उनकी तरफ से मुँह फेर लिया। इसलिए कि आपको उन्होंने बड़े कष्ट दिये थे और आपका मजाक उड़ाया तथा कविता द्वारा आपका अपमान किया था। उन्होंने हजरत अली से शिकायत की। हजरत अली ने उनको मशवरा दिया कि आपकी खिदमत में सामने से आओ और वह कहो जो यूसूफ के भाइयों ने यूसूफ से कहा था कि "खुदा की कसम तुमको खुदा ने हम पर फ़ज़ीलत (श्रेष्ठता) दी है और बेशक हम मुजरिम हैं।" आप यह पसंद नहीं फरमाते कि कोई भी आपसे बढ़कर और नरम बात कहे। अबू सुफयान ने यही किया और आपके सामने आये तो उनसे फरमाया कि "आज तुम पर कोई इल्जाम नहीं। अल्लाह तुम्हें माफ (क्षमा) करे वह सबसे अधिक रहम करने वाला है।" उसके बाद उनका शुमार अच्छे और पक्के मुसलमानों में इस्लाम लाने के बाद उन्होंने कभी आपसे आंखे नहीं मिलाई।

अबू सुफयान बिन हरब हुजूर की सेवा में

रसूलुल्लाह ने लशकर (सेना) को आग रौशन करने के आदेश

www.abulhasanalinadwi.org

दिये। अबू सुफयान सूचना प्राप्त करने हेतु जासूसी के लिए निकले तो उनका कहना था कि इस शान का लशकर (सेना) और रात में ऐसी रोशनी कभी देखी ही नहीं। अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब अपने परिवार सहित मुसलमान हुए और हिजरत की तथा इस लशकर से आकर मिल गये। उन्होंने अबू सुफयान की आवाज पहचान ली और उनसे कहा कि देखो रसूलुल्लाह लोगों में मौजूद है। कल कुरैश का अनजाम (परिणाम) क्या होगा। उनको अपने खच्चर पर बिठाया इस डर से कि कहीं कोई मुसलमान इनको देख ले और कत्ल न कर दे। उनको रसूलुल्लाह की खिदमत में ले आये। जब रसूलुल्लाह ने उनको देखा तो उनसे आपने फरमाया कि "ऐ अबू सुफयान तुम्हारा भला हो आज तक तुमने यह नहीं जाना कि पूजा के लायक केवल अल्लाह है। उन्होंने उत्तर दिया कि आप पर मेरे माता पिता वारी जायें। आप कितने रहीम और बुर्दबार हैं। बखुदा मैं तो यह समझता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई पूजा के लायक होता तो कुछ काम आता। आपने फरमाया कि अबू सुफयान अल्लाह तुम्हें अकल (बुद्धि) दे। तुम्हारी समझ में अब तक यह नहीं आया कि मैं अल्लाह का भेजा नबी हूँ। वह बोले मेरे माता पिता आप पर वारी हों। आप कितने महान, रहमदिल और शरीफ हैं। जहाँ तक इस मामले का सम्बन्ध है उसमें मुझे अभी शकोशुबहा है। हजरत अब्बास बोले कि अल्लाह के बन्दे इससे पहले कि तुम्हारी गरदन उड़ा दी जाये तुम मुसलमान हो जाओ और इकरार करो कि अल्लाह के सिवा कोई पूजा के लायक नहीं और मुहम्मद सल्लाहोअलेहे वसल्लम अल्लाह के रसूल हैं। फिर वह मुसलमान हो गये और हक की गवाही दे दी।

आम मुआफी (क्षमा)

आपने सबको मुआफ (क्षमा) कर दिया। आज मक्के वालों में वही हलाक हो सकता था जिसको अपना जीवन प्रिय न हो या वह

www.abulhasanalinadwi.org

शान्ति प्रिय न हो। आपने फरमाया कि जो भी अबू सुफयान के घर में पनाह लेगा (शरण लेगा) वह सुरक्षित (महफूज) है। जो अपने घर का दरवाजा बंद कर लेगा वह भी (सुरक्षित) महफूज होगा। जो मसजिदे हराम में प्रवेश करेगा वह सुरक्षित होगा। रसूलुल्लाह ने लशकर (सेना) को हिदायत (निर्देश) फरमाई कि मक्का में प्रवेश करते समय केवल उन पर हाथ उठाया जाये जो उनके लिए रूकावट बनें या उनको रोकें। आपने यह भी निर्देश दिये कि मक्का वालों की मनकूला (अचल सम्पत्ति) जायदाद के मामले में पूरी तरह एहतियात बरतें और उसमें किसी प्रकार की दस्त दराजी (हस्तक्षेप) न की जाये।

अबू सुफयान फत्ह के जूलूस का नजारा करते हुए

हुजूर ने अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब को निर्देशित किया कि वह अबू सुफयान को ऐसे स्थान पर बिठाए जहाँ से उनको इस्लामी लशकर का गुजरना नजर आये। फत्ह (सफलता) प्राप्त लशकर के दस्ते ऐसे गुजर रहे थे गोया समुद्र मौजे मार रहा हो। भिन्न भिन्न कबीले अपने अपने झण्डे उठाये गुजर रहे थे। जब कोई कबीला उनके सामने से गुजरता वह अब्बास से कबीले का नाम पूछते कहते कि इस कबीले से क्या लेना। जब हुजूर स्वयं मुसल्लह दस्ते में तशरिफ लाये जो हरा झण्डा उठाये हुए था। यह दस्ता मुहाजिरीन व अंसार का था यह लोहे के वस्त्र में थे इनकी केवल आँखें नजर आ रहीं थी जब अबू सुफयान के सामने से गुजर रहा था तो बोले सुबहानअल्लाह अब्बास यह कौन है। हजरत अब्बास ने कहा यह हुजूर हैं। मुहाजिरीन और अंसार के बीच। अबू सुफयान बोले- यह शानो शौकत इससे पूर्व किसी को नहीं मिली। बखुदा ऐ अबुल फजल तुम्हारे भतीजे का इकतिदार आज की सुबह कितना अ़ज़ीम और महान है। हज़रत अब्बास ने कहा कि यह

www.abulhasanalinadwi.org

नुब्वत का मोजेज़ा (चमत्कार) है। उसके बाद अबू सुफ़यान ने एलान किया कि ऐ कुरैश के लोगो यह मुहम्मद आज इतनी ताकत के साथ तुम्हारे पास आये हैं जिसका तुम्हें अनुभव नहीं हुआ। वह कहते हैं जो भी अबू सुफयान के घर में दाखिल (प्रवेश) होगा वह सुरक्षित होगा। लोग यह सुनकर कहने लगे कि अबू सुफयान तुमको अल्लाह हलाक करे तुम्हारे घर की हकीकत क्या है। और उन्होंने कहा कि जो अपने घर का दरवाजा बंद कर लेगा वह भी सुरक्षित होगा। लोग मुनताशिर (बिखर) हो गये और अपने अपने घरों और मस्जिद की तरफ रवाना हो गये।

नियाजमंदाना दाखला (प्रवेश)

आजिज़ी इनकी सारी और अपने सर को झुकाते हुए आप मक्के में दाखिल (प्रवेश) हुए। अल्लाह के शुक्र और इन्किसारी में अपने सर को इतना झुका रखा था कि करीब था कि आपकी ढुड़ी मुबारक ऊँटनी के कजावे से लग जाये। आप मक्का में प्रवेश के समय सूरह फतह की तिलावत फरमा रहे थे। मक्का में इस फातेहाना दाखले (प्रवेश) में इनसाफ मसावत (बराबरी) तवाजो इनकिसारी का जो इजहार आपने फरमाया उसका कोई तसव्वुर (अनुमान) नहीं कर सकता था। उसामा बिन जैद जो आपके आजाद किये हुए गुलाम थे और हजरत जैद के सुपुत्र थे उनको अपनी सवारी के पीछे स्थान दिया। बनी हाशिम और कुरैश के बहुत से सम्मानित सपूत और लोग मौजूद थे लेकिन यह इज्जत यह शरफ किसी और के भाग्य में नहीं आया। यह बात जुमे (शुक्रवार) के दिन 20 रमजान आठ हिजरी की है। फतह के दिन एक आदमी ने आपसे बात की उस पर कपकपी तारी थी। उसको यकीन दिलाया कि डरो नहीं मैं कोई बादशाह नहीं मैं तो कुरैश की एक महिला का पुत्र हूँ जो सुखाया नमकीन गोश्त खाया करती थी।

www.abulhasanalinadwi.org

मुआफी (क्षमा) रहम (दया) का दिन न कि खूंरेजी (रक्त पात) का

अनसार दस्ते के काइद (सेनापति) हजरत सअद बिन उबादा जब अबू सुफयान के पास से गुजरे तो कहने लगे कि आज खूंरेजी (बदले) का दिन है। आज हुरमत हलाल है आज कुरैश को अल्लाह ने रूसवा व जलील किया। जब रसूलुल्लाह अपने दस्ते के साथ गुजरे तो अबू सुफयान ने शिकायत की। और कहने लगे कि ऐ अल्लाह के रसूल आपने वह नहीं सुना जो सअद कह रहे थे। आपने उनसे पूछा कि क्या कह रहे थे। अबू सुफयान ने वह बताया जो उन्होंने कहा था। आपने उसको नापसन्द किया और फरमाया नहीं आज तो रहम का दिन (दया) है अल्लाह कुरैश को इज्जत देगा और कअ़बे की अज़मत बढ़ाएगा। आपने हजरत सअद को बुलाया और उनसे झण्डा ले लिया और वह झण्डा उनके बेटे (पुत्र) कैस को दे दिया। बेटे को झण्डा देने से ऐसा मालूम होता गोया उनसे झण्डा लिया ही नहीं गया।

छोटी मोटी झड़पें

सुफयान बिन उमय्या व अकरमा बिन अबू जहल और सुहैल बिन अम्र और खालिद बिन वलीद के साथियों के बीच मामूली झड़पे हुई। इसमें एक दर्जन (12) मुशरिकीन मारे गये और उनकी शिकस्त हुई। रसूलुल्लाह ने मुसलमान सरदारों से मक्के में दाखिल होते समय यह अहद लिया कि जब तक कोई उनसे न लड़े वह किसी से न लड़ें।

हरम शरीफ की बुतों व मूर्तियों से पाकी

जब रसूलुल्लाह मक्का में अपने मुकाम पहुँच गये और लोग संतुष्ट हो गये तो उस समय आप हरम तशरिफ लाये बैतुल्लाह

www.abulhasanalinadwi.org

(काबा) का तवाफ किया। आपके हाथ में एक कमान (धनुष) थी। उस समय काबा के गिर्द और उसके ऊपर 360 बुत थे। आप उस कमान से बुतो को मारते और गिराते जाते और फरमाते कि "सत्य आ गया और बातिल (झूठ) गया और बातिल तो मिटाने की चीज है ही। हक आया अब बातिल कभी नहीं पनपेगा, नहीं लौटेगा। बुत सर के बल गिर रहे थे आपने बाद में जो भी शबीह और मूर्ति देखी उसको भी तोड़ने का आदेश दिया।

आज का दिन अच्छे व्यवहारों का दिन है

जब आपने तवाफ समाप्त किया तो हजरत उसमान बिन तलहा को बुलवाया। उनसे काबा की चाबी ली फिर आपने काबे का दरवाजा खोला। मदीने हिजरत से पूर्व आपने जब उनसे काबा की चाबी मांगी तो उन्होंने गाली गलोच की थी। आपका अपमान किया था। और चाबी देने से इनकार कर दिया था। उस समय आपने उनसे बड़ी नम्रता और सब्र से फरमाया था कि ऐ उसमान तुम देखना एक दिन इसकी चाबी मेरे हाथ में होगी। उस समय मैं जिसको चाहूँगा उसको दूँगा। उन्होंने इसके उत्तर में कहा था कि वह दिन कुरैश की जिल्लत (अपमान) और तबाही का दिन होगा। आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया नहीं उस दिन वह जिन्दगी और इज्जत पायेंगे। यह शब्द उस्मान बिन तलहा को ज़िहन नशीन हो गये थे और उन्होंने महसूस किया कि शायद आज वही होगा जो हुजूर ने फरमाया था। जब आप काबा से निकले हजरत अली आपके साथ थे और काबे की चाबी आपके हाथ में थी। हजरत अली ने फरमाया कि आप पानी पिलाने और काबा की देख भाल (दरबानी) का कार्य हमें दीजिए। आपने फरमाया कि उसमान बिन तलहा कहाँ हैं। उनको बुलवाया और चाबी उनको दे दी और फरमाया कि आज नेकी अच्छे व्यवहार और वफ़ा का

www.abulhasanalinadwi.org

दिन है। लो यह चाबी अब यह हमेशा (सदैव) तुम्हारे पास रहेगी। इसको अब तुमसे कोई दूसरा अत्याचार करके ही ले सकता है।

इस्लाम दीने तौहीद

रसूलुल्लाह ने काबा का दरवाजा खोला तो कुरैश मस्जिद में सफबसता (पंक्तिबद्ध) लाइन में खड़े हो गये और यह इन्तजार (प्रतिक्षा) कर रहे थे कि अब आप क्या करते हैं। आपने दरवाजे के बाजू थाम लिये। सब उसके नीचे थे। आपने उनसे फरमाया कि अल्लाह के सिवा कोई भी पूजा के योग्य नहीं है। वह अकेला है। उसका कोई शरीक व साझेदार नहीं। उसने अपना वादा (वचन) पूरा किया। उसने अपने बन्दे की सहायता की। उसने तन्हा सबको शिकस्त (पराजय) दी तमाम गर्व, धन, दौलत, खून बहा आज मेरे पैरों के नीचे हैं। काबे की तवलियत और हाजियों को पानी पिलाना शामिल नहीं है।

ऐ कुरैश अल्लाह ने जिहालत का गुरू और नसब पर गुरूर खानदानी असबीयत घमण्ड खत्म कर दिया सब इन्सान (मनुष्य) आदम की औलाद हैं और आदम का जन्म मिट्टी से हुआ है। फिर आपने यह आयत पढ़ी-

"ऐ इन्सानो हमने तुम्हे एक मर्द और एक औरत से पैदा किया। हमने तुम में कबीले और कौम बनाये ताकि तुम एक दूसरे को पहचान सको। तुममे सबसे अधिक सम्मानित, आदर और इज्जत वाला अल्लाह के यहाँ वह है जो अल्लाह से सबसे अधिक डरने वाला तथा परहेजगार हो। बेशक अल्लाह को हर चीज की जानकारी और खबर है।"

www.abulhasanalinadwi.org

प्रेम करने वाले नबी और दया करने वाले रसूल

ऐ कुरैश! तुम्हारा क्या खयाल है कि मैं तुम्हारे साथ कैसा मामला करूंगा? सबने कहा कि आप हमारे साथ अच्छा ही मामला करेंगे। आप करम करने वाले भाई और नेकी करने वाले भाई के लड़के हैं। आपने फरमाया कि आज मैं तुमसे वही कहूंगा जो यूसुफ ने अपने भाइयों से कहा था। "आज तुम पर कोई इल्जाम नहीं। जाओ तुम सब आजाद हो।" आपने हजरत बिलाल से फरमाया कि काबे पर चढ़कर अजान दो सब कुरैश के सरदारों और सम्मानित लोगों ने अजान सुनी। अल्लाह की बड़ाई के कल्मे सुने और मक्का अजान से गूंज उठा। रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) उम्मे हानी बिन्ते अबी तालिब के घर तशरीफ ले गये, नहाये और आठ रकआत विजय की नमाज़ पढ़ी और अल्लाह का शुक्र अदा किया।

अल्लाह की शरीअत और हुदुद को लागू करने में किसी प्रकार का भेद भाव नहीं

बनी मख्जूम की फातमा नामी एक महिला ने इस गजवे में चोरी की। उसके कबीले के लोग उसको उसामा बिन जैद के पास लाये कि वह आपसे उसकी सिफारिश कर दें। जब उन्होंने बात की तो आपके चेहरे मुबारक का रंग बदल गया और फरमाया कि तुम अल्लाह की हुदुद के बारे में बात करते हो। उसामा ने कहा कि या रसूलुल्लाह मुझे माफ कर दें जब रात हुई तो आपने खिताब फरमाया। प्रारम्भ में अल्लाह की तारीफ की फिर फरमाया कि तुमसे पहले के लोग इसलिए हलाक व बर्बाद हुए कि जब उनका कोई शरीफ चोरी करता तो उसको छोड़ देते थे। और जब कोई कमजोर चोरी करता तो फिर उसको सजा

www.abulhasanalinadwi.org

देते थे। बखुदा (यदि) अगर फातमा बिन्ते मुहम्मद चोरी करेगी तो उसका भी हाथ काटा जायेगा। फिर आपने हुक्म दिया और उसका हाथ काट दिया गया। इसके बाद इस सजा व तौबा से उसकी जिन्दगी संवर गयी।

इस्लाम पर बैअत

लोग मक्का में आपसे इस्लाम पर बैअत के लिए जमा हुए। आप सफा पर तशरीफ लाए और अल्लाह और उसके रसूल की मक़दूर भर फरमाबारदारी करेंगे की बैअ़त ली जब आप मरदों की बैअत से फारिग हुए तो आपने महिलाओं से बैअत ली इनमें हिन्द बिन उतबा जो अबू सुफयान की पत्नी थी और नकाब डाले थी। उन्होंने जो हजरत हमजा के साथ किया उसको छिपाना नहीं चाहती थीं। आपने उसकी बातों से पहचान लिया। वह मुसलमान हो गई और उन्होंने बैअत की।

तुम्हारे ही साथ मरना और तुम्हारे ही साथ जीना

अल्लाह ने आपके हाथ पर मक्का फत़ह किया। यह मक्का आपका शहर, आपका वतन और आपकी जन्म भूमि थी। अल्लाह ने आपके देश और आपके वतन की आजादी (स्वतंत्रता) दिलाई। यह बात अंसार आपस में कर रहे थे कि आप अब यही रहेंगे मदीने नहीं जायेंगे। रसूलुल्लाह ने अंसार से पूछा कि क्या बातें कर रहे हो। यह बात अंसार के अलावा कोई नहीं जानता था। आपके पूछने पर सब बड़े शरमिन्दा हुए और जो कहा उसको स्वीकार किया। आपने फरमाया कि भला ऐसा कहीं हो सकता है। अब तो मेरी जिन्दगी और मौत तुम्हारे ही साथ है।

www.abulhasanalinadwi.org

जाहिलियत के निशानों का मिटना

आपने सराया भेज कर काबा के इर्द गिर्द और उसके अतराफ में उन सारे बुतों को तोड़ने के आदेश दिये जो बाकी थे। उन्हीं में लात व मनात और उज्जा शामिल थे। फिर आपने एलान (घोषणा) फरमाया कि सुन लो जो अल्लाह और आखिरत, पर ईमान रखता है वह अपने घर के बुत अगर हैं तो उनको तोड़ डाले। और इस कार्य के लिए अपने सहाबा को कबीलों में भेजा। उन्होंने उन बुतों को तोड़ डाला। उसके बाद आपने क्यामत तक के लिए मक्का की हुरमत का एलान फरमाया। आपने फरमाया कि किसी मोमिन को इसकी इजाजत नहीं कि वह यहाँ खूंरेजी (खून बहाये) करे और और दरख्त को (वृक्ष) काटे। आपने यह भी फरमाया कि मुझसे पहले भी किसी को ऐसा करने की इजाजत नहीं थी और न मेरे बाद किसी को होगी। फिर आप मदीने तशरिफ ले गये।

फ़त्हे मक्का के असरात (मक्का की विजय के प्रभाव)

अरबों के दिलों पर मक्का की फतह (विजय) का बड़ा गहरा असर (प्रभाव) पड़ा। अल्लाह ने मुसलमान होने के लिए बहुत सों के दिलों को खोल दिया कि वह झुन्ड के झुन्ड मुसलमान होने लगे। अल्लाह ने सच फरमाया।

जब अल्लाह की मदद (सहायता) और फतह (विजय) आई तो तुमने अपनी आंखों से देख लिया कि लोग झुन्ड के झुन्ड इस्लाम में दाखिल हो रहे हैं।

गजव-ए-हुनैन

मक्का फत्ह (विजय) हो गया। लोग झुण्ड के झुण्ड मुसलमान

www.abulhasanalinadwi.org

होने लगे तो अरबों ने अपने तरकश का एक तीर और मारा। कुरैश के बाद यदि कोई दूसरा बलवान (ताकतवर) कबीला था तो वह हवाजिन का था। कुरैश से इनका बराबर मुकाबला रहता था।

मालिक बिन औफ अन्नसरी सरदारे हवाजिन खडे हुए और जंग का एलान कर दिया। इसका साथ सक़ीफ इतियादि कबीलों ने दिया और सब मिलकर इस्लाम के खिलाफ जंग के लिए तैयार हो गये। साथ में औरतें, बच्चें तथा धन-दौलत भी लाए ताकि इनकी वजह से उनमें हिम्मत और साहस बना रहे। इनसे लड़ने के लिए आप निकले। आपके साथ दो हजार 2000 मक्का के ऐसे लोग थे जो अभी नये मुसलमान थे। उनमें कुछ वह भी थे जो इस्लाम नहीं लाये थे। दस हजार वह थे जो आपका साथ देने के लिए मदीने से निकले। यह तादाद (संख्या) इसके पूर्व किसी गजवे में मुसलमानों की नहीं रही। बाज मुसलमानों ने यह कहा कि आज कम होने के सबब शिकस्त (पराजित) न खाएंगे। और मुसलमानों को अपनी तादाद के जियादा होने पर नाज़ (गर्व) हुआ।

हुनैन की वादी में

वादी हुनैन जब मुसलमान पहुँचे तो वर्ष आठ हिजरी और शाबान की 10 तारीख थी। उन्होंने सुबह तड़के वादी के नशेब में उतरना शुरू कर दिया। हवाजिन पहले ही इस वादी में पहुँच चुके थे उन्होंने तंग रास्ते तथा खाइयों में मोर्चा संभाल लिये थे। मुसलमानों ने जब यह देखा कि वह उनके तीरों की जद में और तलवार की नोक पर हैं फिर वह बड़ी तीरंदाज क़ौम थी। उन्होंने एक साथ और एक ही वक्त हमला कर दिया। मुसलमान इस अचानक हमले पर परेशान हुए उनको एक दूसरे की खबर भी न रही। यह एक फैसलाकुन हमले से परेशान हुए करीब था कि यह हमला मुसलमानों के खिलाफ हो जाये

www.abulhasanalinadwi.org

और उनको संभलने का मौका (अवसर) भी न मिले। इसका हाल भी गज़वा उहद की तरह था। जब यह मशहूर करा दिया गया कि रसूलुल्लाह शहीद कर दिये गये। तो मुसलमानों के पैर उखड गये।

कामयाबी (सफलता) और स्थिरता

मुसलमानों को जो तम्बीह (चेतावनी) अल्लाह को करनी थी वह अब पूरी हो गयी। तादाद कसरत (अधिकतर) पर उनको जो घमण्ड हो गया था अल्लाह ने उसका मज़ा शिकस्त के रूप में दिखला दिया। लेकिन अल्लाह ने फिर उनके पैर जमा दिये और उनको हमले की हालत में कर दिया। अल्लाह ने अपने रसूल पर सकीनत (संतोष) को उतारा। फिर आप अपने खच्चर पर बिना किसी डर व भय के तशरीफ रखते थे। आपके साथ अंसार मुहाजेरीन में से कुछ रह गये थे। हज़रत अब्बास उस खच्चरर की नकेल थामे हुए थे। और आप फरमाते जाते थे मैं नबीए सादिक हूँ, मैं इब्ने मुत्तलिब हूँ। जब मुशरेकीन के जतथे मुकाबले पर आये तो आपने एक मुट्ठी मिट्टी लेकर मुशरेकीन की आँखों में दूर तक फैंक दी। वह उनकी आंखों में पड़ गयी। जब आपने देखा कि नफ़सी नफ़सी की हालत है तो आपने फ़रमाया कि ऐ अब्बास चीख कर कहो कि ए अंसार ऐ बबूल के दरख्त वालो। उनका जवाब मिला कि हाजिर (मौजूद) हैं। जो भी उनकी आवाज सुनता वह अपने घोड़े से उतर आता और अपनी तलवार और ढाल लेकर हुजूर के इर्द गिर्द जमा हो जाता आप को घेरे में ले लेता जब एक जमाअत (टुकड़ी) तैयार हो गयी तो उन्होंने मुशरेकीन से मुकाबला शुरू (आरम्भ) कर दिया। आप अपने दस्ते के साथ तशरीफ़ लाये। दोनों फरीक (दोनों पक्ष) अच्छी तरह लड़े। अभी शिकस्त खाकर लोग वापस भी नहीं हुए थे कि उनके कैदी जिनके हाथ बंधे थे हुजूर की सेवा में आये अल्लाह ने सफलता और सहायता के लिए आसमान से

www.abulhasanalinadwi.org

फिरश्ते भेजे पूरी वादी उनसे भर गई। इस प्रकार हवाजन की शिकस्त हुई।

अल्लाह ने फरमाया कि :-

खुदा ने बहुत से मौको (अवसरों) पर तुम्हारी सहायता की है। और जंगे हुनैन के दिन जबकि तुमको अपनी कसरत (अधिकता) पर गर्व था, वह तुम्हारे काम नहीं आया और जमीन अपनी कुशादगी (फैलाव) के बावुजूद तुम पर तंग हो गई और तुम पीठ फेर कर फिर गये तब खुदा ने अपने रसूल पर मोमिनों पर अपनी तरफ से सकीनत (स्थिरता) उतारी और तुम्हारी मदद व सहायता आसमान से फरिश्ते भेज कर की जो तुम्हें नजर नहीं आ रहे थे और काफ़िरों को अजाब दिया और कुफ्र करने वालों की यही सजा है।

(सूरह तोबा 25.26)

गजव-ए-वाइफ

सकीफ़ के बचे खुचे लोग तायफ़ चले गये। यहाँ आकर उन्होंने शहर के दरवाजे बन्द कर लिये। उन्होंने उसके अन्दर साल भर का गल्ला बगैरा जमा कर दिया और लड़ाई के लिए बिल्कुल तैयार हो गये। आप उनकी सरकूबी सजा के लिए निकले और तायफ़ के करीब आपने पड़ाव डाल दिया। लशकर तायफ़ के करीब था। लेकिन तायफ में दाखिल (प्रवेश) नहीं हो सकता था। क्योंकि उन्होंने किलों के दरवाजे बंद कर रखे थे और तीरों की बारिश मुसलमानों पर बराबर कर रहे थे। ऐसा जान पड़ता था कि चिड़ियों का दल आ गया हो। सकीफ़ के लोग बड़े तीरंदाज थे।

तायफ़ का मुहासिरा (घेराव)

इस्लामी लशकर दूसरी जगह मुनतकिल हो गया और वहाँ उन्होंने

www.abulhasanalinadwi.org

उनका 20 दिन मुहासिरा किया। इस बीच उनसे लड़ाई भी होती रही और दोनों तरफ़ से तीरों की बारिश भी होती रही। रसूलुल्लाह ने पहली बार इस जंग में तोप का इस्तेमाल (प्रयोग) किया और मुहासिरा और सख्त कर दिया। कई मुसलमान शहीद हो गये।

अब मुहासिरा (घेरा) और सख्त कर दिया गया। और जंग जियादा लम्बी हो गई तो आपने उनके अंगूर के बाग़ात काटने का हुक्म (आदेश) दिया इन्हीं बागात पर उनकी जिन्दगी का इनहिसार (निर्भर) था। मुसलमानों ने उनके बागात काटने शुरू कर दिये तो उन्होंने आपसे प्रार्थना की कि अल्लाह के लिए पेड़ काटना छोड़ दें। और हम पर दया करें। आपने फरमाया कि मैं केवल अल्लाह के लिए छोड़ता हूँ फिर आपने एलान फरमाया जो कोई किले से बाहर आकर हमसे मिलेगा वह आजाद (स्वतंत्र) है। यह पुकार सुनकर दस आदमी किले के बाहर आ गये। आपको तायफ़ फतेह होने की सूचना नहीं मिली थी। आपने हज़रत उमर से फरमाया कि वापसी का एलान कर दें जब वापसी का एलान हुआ तो लोग शोर मचाने लगे कि हम तायफ़ फतेह किये बगैर कैसे चले जाये फिर रसुलुल्लाह ने फरमाया अच्छा तो चलो जंग करो। जंग में मुसलमान जख्मी हुए। आपने फरमाया इन्शाअल्लाह कल वापस लौटेंगे। सब यह सुनकर बहुत खुश हुए।

हिसार खतम (घेरा समाप्त)

तायफ़ की फतह (सफलता) की इज़ाजत आपको अब तक नहीं मिली थी लोगों ने इस्लाम लाना शुरू कर दिया और आपने चलने की इजाजत दे दी।

रसूलुल्लाह अपने साथियों के साथ जअ़राना पहुँचे और हवाजिन को इसका मौका (अवसर) दिया कि वह दस दिन के अन्दर इस्लाम ले आयें और आपकी सेवा में आये फिर आपने माले गनीमत को बाटना

www.abulhasanalinadwi.org

शुरू किया (वितरण आरम्भ किया) सबसे पहले मुअल्लफ़तिल कुलूब का हिस्सा निकाला। हवाजिन का वफ़द (प्रतिनिधि मण्डल) जिसमें 10 लोग शामिल थे। आपकी खिदमत में आये और कहा कि आप कृपया हमारे माल और कैदियों को लौटा दें। आपने फरमाया कि तुम्हें पता है और देख रहे हो कि मेरे साथ कौन लोग हैं। मुझे सबसे अधिक सच बात पसंद है। अब तुम बताओ कि तुम्हें तुम्हारी औरतें (महिलायें) औलादें अधिक अज़ीज हैं या दौलत। उन्होंने जवाब दिया कि हम अपनी महिलाओं और औलादों को अधिक मान देते हैं। आपने फरमाया कि कल नमाज़ के समय तुम खड़े होकर कहना कि हम मुसलमानों के लिए रसूलुल्लाह की और रसूलुल्लाह के लिए मुसलमानों की सिफ़ारिश करते है कि हमारे गुलाम और कैदी वापस कर दें। जब आपने नमाज़ खत्म की तो उन्होंने खड़े होकर वैसा ही कहा जैसा कि आपने उनको बताया था। उस पर आपने फरमाया कि मेरे और बनी मुत्तलीब के हिस्से में जो कुछ है वह तुम्हारे हवाले। और लोगों से मैं सिफ़ारिश करता हूँ। अंसार और मुहाजेरीन ने कहा जो कुछ हमारा है वह हकीकत (वास्तव) में रसूलुल्लाह का है। बनी तमीम, बनी फजारा और बनी सलीम के लोग अपना हक़ छोड़ना नहीं चाहते थे। आपने फ़रमाया कि यह लोग अभी मुसलमान होकर आये हैं। मैंने इनका इन्तेजार भी किया और मैंने इनको इखतियार भी दिया लेकिन लोग अपनी महिलाओं और औलाद को अधिक चाहते हैं। इसलिए यदि किसी के पास ऐसे कैदी हों और उनको अपनी इच्छानुसार देना चाहें तो वह दे सकता है। और यदि वह अपना हक छोड़ना न चाहे तो उनको पहले माले गनीमत से (6) गुना दिया जायेगा। अल्लाह हमें देगा। लोगों ने जवाब दिया या रसूलुल्लाह आपकी खातिर हम अपनी इच्छा से पेश करते हैं। आपने फ़रमाया कि इससे यह स्पष्ट नहीं होता है कि तुममें कौन इस पर राजी है और कौन नहीं। इस समय तुम सब वापस जाओ जब तक तुम्हारे सरदार हकीकत (वास्तविकता) न बता दे। सबने उनकी औरतों और

www.abulhasanalinadwi.org

बच्चों को वापस कर दिया एक ने भी इसकी मुखालफ़त नहीं की साथ में आपने हर कैदी को पोशाक भी अता फरमाई।

रहम व करम (दया दृष्टि)

मुसलमानों के पास जो कैदी आये। उनमें हुजूर की दूध शरीक़ बहन शीमा बिन्ते हलीमा सादिया भी थी। लोगों ने लाइलमी अनजाने में उनको पकड़ लिया। उन्होंने मुसलमानों से कहा कि तुम्हें मालूम होना चाहिए कि मैं हुजूर की दूध शरीक बहन हूँ। उन लोगों ने उनकी बात पर यकीन नहीं किया और उनको आपकी सेवा में पेश किया।

जब वह रसूलुल्लाह की खिदमत में आई तो कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल मैं आपकी दूध शरीक बहन हूँ। आपने फ़रमाया कि इसका क्या सुबूत (प्रमाण) तुम्हारे पास है कहने लगीं कि आपने मेरी पीठ पर काट खाया था जब मैं आपको उठाए हुई थी यह निशान अभी पीठ पर है। आपने उस निशान को पहचाना फिर आपने उनके लिए चादर बिछाई और उस पर उनको बिठाला और उनके साथ अच्छा व्यवहार किया और फ़रमाया कि तुम मेरे पास रहना पसंद करो तो आदर और मान के साथ रह सकती हो और यदि तुम अपने घर जाना पसंद करो तो मैं तुम्हें सामान देकर तुमको तुम्हारी क़ौम में भेज दूँ। उन्होंने जवाब दिया कि आप सामान देकर मुझे मेरी क़ौम में भिजवा दें। आपने सामान देकर उनको उनकी क़ौम में भिजवा दिया फिर वह मुसलमान हो गई। आपने उनको तीन ग़ुलाम, एक लोंडी और बकरीयों का एक रेवड़ दिया।

खुशी से मजबूरी से नहीं

जब मुसलमान तायफ से वापस हुए तो आपने कहा कि हम लौटने वाले हैं, तौबा करने वाले हैं, अपने पैदा करने वाले की इबादत

www.abulhasanalinadwi.org

करने वाले हैं और उसी की तारीफ (प्रसंशा) है। लोगों ने कहा कि या रसूलुल्लाह बनी सकीफ के लिए बद दुआ करें। आपने फरमाया कि अल्लाह हिदायत दे और उनको यहाँ लाये। उरवा बिन मसऊद सक़फी मदीने में दाख़िल होने से पहले आपसे रास्ते में मिले और मुसलमान हो गये फिर वह अपने कबीले लौटे और इस्लाम की दावत देने लगे वह अपनी कौम में महबूब (प्रिय) थे। अपनी कौम में उनका मान था इज्जत थी। जब कबीले वालों को उन्होंने इसलाम की दावत दी तो उन्होंने उन पर तीरों की बारिश कर उनको शहीद कर दिया। उनको शहीद करने के बाद सकीफ वहां एक माह रूके रहे। फिर आपस में मशवरा, किया और यह फैसला (निर्णय) किया कि अब अरबों से लड़ने की ताक़त नहीं है। लेहाज़ा सबने बैअत की और मुसलमान हो गये। और एक वफ़द मंडल आपकी खिदमत (सेवा) में भेजा।

बुत परस्ती के साथ कोई नरमी नहीं (कोई समझौता नहीं)

जब वह लोग आपकी खिदमत में आये तो आपने मस्जिद के करीब एक शामियाना लगवा दिया वह सब मुसलमान हो गये तो आपसे कहने लगे कि आप लात को (बुत का नाम) तीन वर्ष के लिए छोड़ दें उसको न तोड़ें आपने उनकी बात नहीं मानी, वह लोग सब एक एक साल (वर्ष) कम करते गये और आप बराबर इनकार फरमाते रहे आखिर में वह एक माह पर उतर आये आपने इससे भी इनकार किया। आपने अबू सुफयान बिन हर्ब और मुगीरा बिन शोबा जो उन्ही की कौम के थे, को बुलाया और बुतों को तोड़ने को कहा। उन्होंने उसके बाद नमाज माफ करने को कहा तो आपने इसको कुबूल करने से साफ इनकार कर दिया और फरमाया कि उस दीन धर्म की कोई हैसियत नहीं जिसमें नमाज न हो।

www.abulhasanalinadwi.org

जब वह अपने काम से फ़ारिग हुए (फुरसत मिली) तो अपने घर जाने का इरादा किया तो आपने उनके साथ अबू सुफयान बिन हर्ब और मुगीरा बिन शोबा को भेजा मुगीरा बिन शोबा ने उसको गिरा दिया। इस प्रकार बनू सकीफ का हर व्यक्ति मुसलमान हो गया।

तबूक की जंग (गजव-ए-तबूक)

अरबों में रूमियों से लड़ने की अब सकत नहीं थी। वह अपने को उनके मुकाबले कमजोर समझने लगे थे रूमी हर समय गजवा मोता का जिक्र करते रहते उससे उनको तसल्ली नहीं हुई थी। ऐसी सूरत में आपने यह अच्छा समझा कि आप खुद (स्वयं) आगे बढ़कर लड़ें। उनके अरब में दाखिल होने से पहले रूम की हुदुद में इसलामी फौजें (लशकर) दाखिल हो जाये ताकि वह इस्लामी मरकज को चुनौति न दे सकें।

गजवे का समय

यह गजवा वर्ष 9 हिजरी के रजब महीने में हुआ। इस मौसम में सख्त गर्मी पड़ रही थी। खजूर पकने लगी थी, उसके साये घने हो गये थे। आपने बहुत दूर का सफर सहराई इलाकों में जाने तथा एक ताकतवर, बलवान दुश्मन से लड़ने का फैसला फरमाया। इसलिये यह बात मुसलमानों को स्पष्ट रूप से बतला दी कि इस गजवे में उनको हर तरह का कष्ट मिल सकता है। लेहाजा इसको ध्यान में रखकर तैयारी करें। वह जमाना बड़ी तंगी और खुश्कसाली (कहत) का था। मुनाफिकों ने इस जंग में शरीक न होने के बहुत से बहाने बनाये थे ताकतवर, बलवान दुश्मन से लड़ने, सख्त गर्मी में निकलने जेहाद में दिलचस्पी न लेने और हक में शक महसूस करने की वजह से उनमें साहस नहीं था। इसलिये आपके साथ गजवे पर जाना नापसंद किया इसको अल्लाह

www.abulhasanalinadwi.org

ने कुर्आन में कहा कि-

"पीछे रह जाने वाले खुश हुए रसूलुल्लाह के जाने के बाद अपने बैठे रहने पर उनको अल्लाह की राह में अपने माल (धन) व जान के साथ जिहाद करना अच्छा नहीं लगा और (दूसरों को भी) कहते हैं कि तुम गर्मी में मत निकलो आप कह दीजिये कि जहन्नम की आग इससे भी अधिक सख्त और गरम है कितना अच्छा होता यदि वह यह बात समझते।"

सहाब-ए-किराम का सफर और जिहाद का शौक

रसूलुल्लाह ने इस सफर में खास तौर पर तैयारी की और सहाबा किराम को तैयारी के आदेश दिये और धन वालों को अल्लाह के रास्ते खर्च करने को उभारा अल्लाह के बहुत से मुसलमान बन्दे अल्लाह के रास्ते में खर्च करने के लिए आगे बढ़े। हजरत उसमान ने पूरे लशकर के सफर का सामान फराहम (उपलब्ध) कराया। और 1000 एक हजार दीनार खर्च किये। आपने उनके लिए दुआ फरमाई।

तबूक को लशकरे इस्लाम की रवानगी

रसूलुल्लाह 30000 हजार मुजाहिदीन का लशकर लेकर मदीने से रवाना हुए। अब तक के गजवात (जंगों) के मुकाबला इस गजवे में मुसलमानों की सबसे बड़ी संख्या (तादाद) थी। आपने अलहिज्र में जो कौमे समुद का इलाका था। पड़ाव किया और सहाबा को बतलाया कि यह बस्ती अजाब पाने वाली कौम की है जब तुम उनके घरों में दाखिल (प्रवेश) हो तो इस डर से रोते हुए दाखिल हो कि अल्लाह तुमको उससे बचाये जो उनको पहुँचा। सुबह जब लोगों को पानी नहीं

www.abulhasanalinadwi.org

मिला तो आपसे लोगों ने इसकी शिकायत की। रसूलुल्लाह ने पानी के लिए दुआ फरमाई। अल्लाह ने बादल भेज दिये बरसात हुई उससे सहाबा सैराब हुए और अपनी जरूरतें पूरी कीं।

रसूलुल्लाह का मदीने लौटना

आपके तबूक पहुँचने पर अरब के बड़े लोग आये जो उसकी सरहदों पर आबाद थे उन्होंने आपसे सुलह की और जिजया देना स्वीकार किया। आपने कुछ को ऐसी दस्तावेज लिखकर दी जिसमें खुशकी और समंदरी रास्तों की हिफाजत तथा दोनों फरीको (पक्षों) का सलामती की जमानत थी।

तबूक पहुचने पर आपको उनके बिखर जाने और अरब पर हमला न करने की सूचना मिली फिर भी आपने उनके शहरों में घुसकर उनसे लड़ना पसंद नहीं फरमाया और आपका यहाँ आने का मकसद भी पूरा हो गया। तबूक में आपने 10 राते क्यिाम फरमाया और फिर आप मदीने लौट आये।

काब बिन मालिक की आजमाइश और उसमें उनकी सफलता

जो लोग इस गजवे में शरीक न हो सके थे उनमें काब बिन मालिक, मरारा बिन रबिआ और हिलाल बिन उमय्या थे। इन तीनों का शुमार साबेकिन अव्वलीन में था। (पहले इस्लाम लाने वालों में) इस्लाम में उन्होंने बड़ी तकलीफे उठाई थीं। और वे आजमाइशों से गुजरे। हेलाल बिन उमय्या और मरारा बिन रबी जंगे बद्र में शरीक थे। गजवात से भाग जाना और उनमें शिरकत न करना उनकी फितरत के खिलाफ था। उनकी शिरकत न करने को अल्लाह की मरजी कहा जा सकता है या उनकी आत्मा का सुधार और मुसलमानों की तरबियत

www.abulhasanalinadwi.org

(प्रशिक्षण) अल्लाह को मंजूर था या इसमें कमजोर इरादे को दखल था या उनको उस समय वसायल पर अधिक भरोसा था।

हुजूर ने सबको इन तीनों से बात करने को मना फरमा दिया। मुसलमानों को आपके आदेश को मानने, आपकी बात को स्वीकार करने के अलावा कोई चारा (रास्ता) नहीं था। लोग उनसे बचने लगे। इस तरह उन्होंने पचास रातें बिता दीं। कअ़ब बिन मालिक निकलते लोगों के साथ नमाज पढ़ते, बाजारों में घूमते, लेकिन उनसे कोई भी बात नहीं करता लेकिन इस सजा से आपसे उनकी महब्बत और बढ़ी।

यह सजा लोगों से केवल बात न करने तक नहीं रही बल्कि उन लोगों को हुक्म हुआ कि तीनों अपनी बीबियों (पत्नियों) से अलग हो जायें। तीनों ने इस आदेश को भी स्वीकार किया और पत्नियों से अलग हो गये।

जब गस्सान के बादशाह को इसकी खबर हुई तो उसने काब बिन मालिक को अपने यहाँ आने की दावत दी ताकि वह उन पर नम्रता की बारिश कर दे उनका आदर करे। उनका कासिद (राजदूत) पत्र लेकर काब बिन मालिक के पास आया और काब बिन मालिक को बादशाह का पत्र दिया। हजरत काब ने उस पत्र को तंदूर में डाल दिया। उन पर यह दिन पहाड़ बन गये गोया जमीन उन पर तंग हो गई तो अल्लाह ने उनकी तौबा कुबूल की। अल्लाह ने फरमाया कि:-

"बेशक़ अल्लाह ने रसूल के हाल पर तवज्जोह फरमाई अंसार व मुहाजिरीन के हाल पर जिन्होंने इस तंगी के समय नबी का साथ दिया बाद इसके कि एक गिरोह के दिल फिर जाने को थे। अल्लाह ने उनके हाल पर तवज्जोह फरमाई। अल्लाह बड़ा शफ़ीक और रहीम है। और उन तीनों के हाल पर भी तवज्जोह फरमाई जिनका मामला मुलतवी (स्थगित) छोड़ दिया गया। यहाँ तक कि अब उनकी परेशानी

www.abulhasanalinadwi.org

यहाँ तक बढ़ गई कि जब जमीन अपनी कुशादगी के बावजूद उन पर तंग हो गई और वह स्वयं अपनी जान से तंग हो गई और वह स्वयं अपनी जान से तंग आ गये और उन्होंने समझ लिया कि खुदा की पकड़ से कहीं पनाह नहीं मिल सकती सिवाए इसके कि उसी की तरफ रूजु किया जाये और फिर उनके हाल पर भी अल्लाह ने मेहरबानी फरमाई ताकि आइन्दा भी तौबा करें। अल्लाह तौबा कुबूल करने वाला बड़ा रहीम है।

गजवा तबूक आखरी (अंतिम) गजवा

गजवा तबूक के बाद गजवात (जंगो) का सिलसिला खत्म (समाप्त) हो गया। वह गजवात जिनमें आप स्वयं शरीक हुए 26 थे और दूसरे सराया और छापे की तादाद 60 है। इसमें से कुछ तो ऐसे हैं जिनमें लड़ने की नोबत नहीं आई। तमाम गज़वात व सराया में दोनों तरफ़ के 1018 कत्ल हुए। लेकिन इस कम तादाद ने कितने खून खराबे से रोका इसको अल्लाह ही जानता है। इससे जो अमन व शान्ति इस क्षेत्र में हुई उसकी कोई मिसाल (उदाहरण) नहीं कि एक (महिला) हीरा से चलती और काबा का तवाफ करके लौटती है। उसको अल्लाह के अलावा किसी का डर (भय) नहीं।

इस्लाम में पहला (प्रथम) हज और सूरह बराअत का उतरना

9 हिजरी को हज फर्ज (अनिवार्य) हुआ। उस वर्ष हजरत अबू बक्र को अमीरे हज बनाकर भेजा गया ताकि वह सबको हज करा सकें। हज के लिए जो लोग हजरत अबू बक्र के साथ गये उनकी तादाद (300) तीन सौ थी। रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने हजरत अली को बुलाया और फरमाया कि जाओ और कुरबानी के दिन

www.abulhasanalinadwi.org

एलान कर दो कि कोई काफिर जन्नत में दाखिल न होगा। आज के बाद कोई मुशरिक हज नहीं करेगा और आज के बाद कोई नंगेपन की हालत में तवाफ़ नहीं करेगा।

वुफूद का वर्ष, मदीने में वुफूद का आना

मक्का की फतह के बाद जब आप सही सालिम (सुरक्षित) मदीने तशरिफ़ लाये तो मरकजे इस्लाम मदीने में वुफूद के आने का सिलसिला शुरू हो गया। इससे पहले आपने इस्लाम की दावत के लिए वुफूद भेजे जिन्होंने इस्लाम की दावत दी और बुतों की पूजा और जाहिलियत की रस्मों की बुराई की तबलिग की।

बनी सअद बिन बकर की तरफ से ज़माम बिन सालबा नुमाइन्दा (प्रतिनिधि) बनकर आये और फिर लौटकर अपनी कौम में दाअी बनकर गये। उन्होंने अपनी कौम से जो पहली बात की वह यह कि बुरा हो लात व उज़्ज़ा का। वह बोले ऐ ज़माम बर्स (बीमारी) कोढ़ और पागलपन से डरो। ज़माम ने कहा कि तुम्हारी खराबी हो। बखुदा ये दोनों बुत न नुकसान पहुँचा सकते हैं और न ही फायदा (लाभ) पहुंचा सकते हैं। अल्लाह ने तुममें एक नबी भेजा और उस पर किताब उतारी जिसके द्वारा तुम्हें उन बातों और कर्मों से जिनमें तुम पड़े हो छुटकारा दिलाया। मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई और पूजा और इबादत के लायक (योग्य) नहीं और मुहम्मद उसके बंदे और नबी हैं। मैं तुम्हारे पास वही लेकर आया हूँ जिसके करने का उन्होंने हुक्म (आदेश) दिया है। और जिन कामों को करने से मना किया है। शाम तक उनके कबीले के सब मर्द और औरतें मुसलमान हो गये।

अदी बिन हातिम आपके अख्लाक व्यवहार देखकर इस्लाम लाये और कहने लगे बखुदा यह किसी बादशाह का हुक्म (आदेश) नहीं हो सकता।

www.abulhasanalinadwi.org

आपने मुआज बिन जबल और अबू मुसा को यमन इस्लाम की दावत देने के लिए भेजा और उनको यह वसीयत की कि देखो नरमी से पेश आना सख्ती मत करना लोगों को खुशखबरी सुनाना। नफरत पैदा न करना। आपने मुगीरा बिन शोबा को तायफ भेजा, वहाँ उन्होंने लात को तोड़ा उसके बुतखाने की चहारदीवारी पर चढ़ गये उनके साथ और भी लोग थे उन्होंने वहां नसब बुत को तोड़ तोड़ कर जमीन बराबर कर दी उसके बाद उसी दिन यह वफ्द आप (सल्ललाहु अलैहि व सल्लम) की खिदमत में वापस आ गया। आपने इसकी तारीफ (प्रशंसा) की।

वुफूद आये इस्लाम की तालीम (शिक्षा) सीखने दीन को समझने और आपके अख्लाक व्यवहार को देखने आपके असहाब के साथ रहते थे। आपने उन लोगों के लिए मस्जिद के सहन में खेमे लगवा दिये थे। वह कुर्आन सुनते, मुसलमानों को नमाज पढ़ते देखते और जो बात समझ में न आती वह रसूलुल्लाह से पूछते। आप उनको अच्छे ढ़ंग से जवाब देते कुर्आन द्वारा समझाते पस वह लोग ईमान लाते और मुतमईन (संतुष्ट) हो जाते।

जकात और सदक़ात का फर्ज होना

9 हिजरी में जकात फर्ज (अनिवार्य) हुई।

हिजजतुल विदा (आखरी हज)

अल्लाह ने जो चाहा उसकी तकमील (पूरा) कर दी अल्लाह के घर (काबा) की गंदगी और बुत परस्ती से सफाई हो गई और मुसलमानों में हज का शौक पैदा हो गया। हज किये हुए काफी अरसा हो चुका था। अतः कअबे की मुहब्बत बहुत बढ़ गई थी। उधर अल्लाह के इल्म में नबी (सल्ललाहु अलैहि व सल्लम) की उम्मत से

www.abulhasanalinadwi.org

जुदाई की घड़ी भी करीब आ गई थी। हालात का तकाजा हुआ कि उम्मत को विदाअ़ कहा जाए तो अल्लाह ने आपको हज करने की इजाजत दी। इस्लाम में आपका यह पहला हज था और आखिरी भी।

आप हज के लिए मदीने से निकले ताकि लोगों से मुलाकात करें और दीन और हज की जरूरी बातों की शिक्षा दें और उनको हज करने का तरीका बतायें। इस्लाम की अमानत उम्मत तक पहुंचायें और उन्हें आखरी वसियत करें और उम्मत से वअदा लें और जाहिलियत के निशान मिटायें उनको अपने पैरों के नीचे रौंद डालें। उस साल (वर्ष) एक लाख मुसलमानों ने हज किया। इसी हज को हिज्जतुल विदाअ़ कहते हैं।

आपने हज कैसे फरमाया (किया)

रसूलुल्लाह ने जब हज का इरादा फरमाया और लोगों को इसकी जानकारी हो गयी तो उन्होंने भी आपके साथ हज का इरादा कर लिया।

मदीने के आस पास के लोगों को आपके हज पर जाने की बात मालूम हुई तो उन्होंने भी आपके साथ हज करने का इरादा कर लिया और मदीने आने लगे रास्ते में आपको बड़ी तादाद में लोग मिलते चले गये और आपके दायें, बाये, आगे और पीछे जमा थे और जहां तक नजर जाती आदमियों का समंद्र नजर आता था।

नबी सल्लाहो अलैहे वसल्लम जुहर की नमाज के बाद सनीचर के दिन 25 जीक़ादा को चार रक़आत नमाज पढ़कर मदीने से निकले। चलने से पहले आपने खुतबा दिया और लोगों को एहराम, उसके वाजिबात और उसकी सुन्नतों की शिक्षा दी। वहाँ से चलकर जुलहुलैफा जो मदीने से 10 किमी0 पर है और मदीने की मीक़ात है में एहराम बांधा।

फिर आप तलबिया पढ़ते हुए रवाना हुए। आप फरमा रहे थे

www.abulhasanalinadwi.org

लब्बैक अल्लाहुम्मा लब्बैक, लब्बैक ला शरीक लक लब्बैक इन्नल हमद वन निअ़मत लक वल मुल़क ला शरीक लक आप 4 जिलहिज्जा को मक्का मुकररमा पहुंचे और मसजिदे हराम में दाखिल हुए। आपने सबसे पहले बेतुल्लाह शरीफ (काबा) का तवाफ किया और सफा मरवा के बीच सई (दौड़) की। आपने मक्का मुकररमा में 4 दिन क्यिाम फरमाया फिर तरविया के दिन यानि 8 जिल हिज्जा को अपने सहाबा के साथ मिना रवाना हुए दिन वहां क्यिाम फरमाया वहाँ जुहर और असर की नमाज़ पढ़ी और रात मिना ही में गुजारी। 9 जिल हिज्जा को सुरज निकला तोमिना से अरफात के लिए रवाना हुए। उस दिन जुमा था। आप अरफात में रूके आपने अरफात के दिन अपनी सवारी पर से ही लोगों को खुतबा दिया जिसमें इस्लाम की बुनियादी बातों को दोहराया। इस खुतबे में आपने शिर्क और जाहिलियत की बुनयादों को समाप्त कर दिया। आपने उन बातों को बताया जिनकी हुरमत पर सब मिल्लतों का इत्तिफाक है यानी खून रेजी और लोगों के माल और इज्जत की हुरमत। इस खुतबे में आपने तमाम जाहिली रस्मो रिवाज को अपने पैरों तले रोंध डाला। जाहिलियत का तमाम सूद समाप्त कर दिया। औरतों के साथ भलाई करने को कहा और फरमाया कि उनके जो हुकुक मरदों पर अनिवार्य हैं जैसे उनका नान व नफका, उनके कपड़े वगैरा और उनके साथ भलाई।

उस खुतबे में आपने अल्लाह की किताब को मजबूती से पकड़े रहने की वसीयत की ताकि कभी रास्ता न भटके आपने फरमाया कि क्यिामत में आपके बारे में पूछा जायेगा। आपने फरमाया तुम क्या गवाही दोगे। लोगों ने कहा कि हम गवाही देंगे कि आपने हम तक अल्लाह का पैगाम पहुँचाया, उसका हक अदा कर दिया और लोगों के साथ भलाई की फिर आपने आसमान की तरफ उंगली उठाई और कहा कि अल्लाह तू इन पर गवाह रहना इसको आपने तीन बार दोहराया

www.abulhasanalinadwi.org

फिर आपने फरमाया कि वह लोग जो हाजिर हैं वह गैर हाजिर लोगों को पैगाम पहुँचा दें।

खुतबा समाप्त हुआ। आपने हजरत बिलाल को बुलाया हजरत बिलाल ने अजान दी। जुहर की 2 रकात पढ़ी फिर आप खड़े हुए और असर की 2 रकात पढ़ी। जब आप नमाज़ से फारिग हुए (नमाज़ पढ़ चुके) तो आप मौकफ़ (खड़े होने की जगह) पर तशरिफ लाये। आप अपने ऊँट पर तशरिफ रखते थे। आपने सुरज गुरूब होने तक अल्लाह से बड़े खुशूअ़ खुजूअ़ (लगन) से और गिड़ गिड़ा कर दुआ़ मांगी। दुआ़ के वक्त (समय) आपके हाथ सीने तक उठे हुए थे। आप फरमा रहे थे कि ऐ रब (ऐ खुदा) ऐ अल्लाह तू मेरी बात और मेरा कलाम सुनता है। मेरी जगह को देखता है मेरा जाहिर और मेरा बातिन तू जानता है। तुझसे मेरी कोई चीज पोशिदा और छुपी हुई नहीं है। मैं मुसीबत ज़दा हूँ। हिरासां (परेशान) हूँ अपने गुनाहों का एतराफ (स्वीकार) करता हूँ। तेरे हुजूर सवाल करता हूँ जैसे बेकस सवाल करता है। तेरे आगे गिड़गिड़ाता हूँ। जैसे गुनाहगार गिड़गिड़ाता है। तुझसे मांगता हूँ जैसे डरने वाला मुसीबत ज़दा तुझसे मांगता है, जिसकी गरदन तेरे आगे झुकी हो, उसके आंसू बह रहे हों, उसका जिस्म (बदन) तेरे सामने झुका हुआ हो उसकी नाक खाक आलूद हो (मिट्टी लगी हुई) ऐ अल्लाह तू अपनी पुकार के साथ बद बख्त न करना। ऐ अल्लाह तू मेरे लिये मेहरबान और रहीम होजा। ऐ सब से अच्छा सवाल कुबूल (स्वीकार) करने वाले और सबसे अच्छा देने वाले। इस मौके पर यह आयत नाजिल हुई। अनुवाद : "आज के दिन तुम्हारे लिए तुम्हारे दीन को मुकम्मल़ (पूर्ण) कर दिया और मैंने तुम पर अपनी निअमतें पूरी कर दीं और मैंने इस्लाम को तुम्हारा दीन (बन्ने के लिए) पसंद कर लिया" *(सूरः मायदा 5/3)*

जब सूरज डूब गया तो आप अरफात से चले। जब आप

www.abulhasanalinadwi.org

मुजदलफा पहुंचे तो आपने मग़रिब और इशा की नमाज साथ पढ़ी। सुबह तक सो गये। सुबह सादिक हुई तो आपने सुबह की अव्वल वक्त नमाज पढ़ी फिर आप सवार होकर मशअरि हराम आये। वहां आपने किबले की तरफ मुंह किया और तकबीर तहलील की और अल्लाह से बड़ी खुशूअ़ खुजूअ़ से दुआ मांगी। सूरज निकलने से पहले आप बड़ी तेजी से मुजदलिफा से रवाना हुए और मिना तशरिफ ले आये। उसके बाद आप कंकरी मारने के स्थान पर तशरिफ ले गये और जमरतुलउक्बा को कंकरी मारी फिर आप मिना लौट आये और लोगों से खिताब फरमाया उसमें आपने कुर्बानी के दिन की हुरमत (सम्मान) लोगों को बताई कि अल्लाह के यहाँ इस की क्या फजीलत है। मक्का की हुरमत (सम्मान) सभी शहरों पर और जो अल्लाह की किताब के साथ क्यादत करे उसकी इताअ़त करने को आपने आदेश दिया। फिर आपने मनासिके हज मालूम कर लेने को फरमाया कि मुझसे मालूम करो। आपने फरमाया कि देखो मेरे बाद दीन से न फिर जाना (काफिर न हो जाना) कि एक दूसरे की आपस में गरदन काटने लगो। आपने अपनी बातों की तबलीग के लिए लोगों को उभारा। आपने अपने खुतबे में फरमाया कि देखो अपने रब (खुदा) की इबादत करते रहो। पांचों वक्त की नमाज पढ़ते रहो, रमजान माह के रोजे रखो। और जिस काम को करने का हुक्म दिया जा रहा है वह करोगे तो अल्लाह तुम्हें जन्नत में दाखिल कर देगा। उस दिन आपने लोगों को अलविदा कहा तो लोगों ने कहा यह अलविदाई (आखिरी) हज है।

फिर आप मिना में कुरबानी की जगह गये और आपने 63 ऊँटों को अपने हाथ से जब्ह किया। आपने जितने जानवरों की कुरबानी की वह तादाद आपकी उम्र आयु के बराबर थी फिर आपने हजरत अली से फरमाया कि 100 ऊँटों में से जबह करने के बाद बच रहे ऊँटों को तुम जबह करो। जब कुरबानी पूरी हो गई तो आपने बाल बनाने वाले

www.abulhasanalinadwi.org

को बुलवाया और सर मुण्डवाया और अपने आस पास के लोगों में बाँट दिये फिर आप मक्का तशरीफ लाये और तवाफे जियारत फरमाया फिर ज़म ज़म के पास आये और ज़म ज़म खड़े होकर पिया उसी दिन मिना तशरिफ ले आये और रात वहीं रहे। जब सुबह हुई तो जवाल का इन्तेजार किया। सूरज ढलने के बाद जुमरात (कंकरी मारने की जगह) गये जमरतुल ऊला से शुरू किया, फिर जुमरतुलवस्ता फिर उकबा (आखरी) पर कंकरी मारी फिर आप तीसरे दिन की कंकरी मारने तक वहीं रूके और उनको तीन दिन (अय्यामे तशरीक़) में पूरा किया फिर आप मक्का मुकररमा तशरिफ ले गये और सहरी के वक्त (समय) तवाफे विदाअ़ अदा किया। फिर आपने लोगों को मदीने रवाना होने को फरमाया। जब आप जुल हुलैफा पहुंचे तो आपने वहां रात गुजारी और जब आपने मदीने को देखा तो तीन बार तकबीर कही (अल्लाह की बड़ाई की) और फरमाया-

उसका कोई शरीक नहीं है। वह अकेला है। उसका कोई शरीक नहीं है। उसी की बादशाही है और उसी के लिए सब तारीफ है। वह हर चीज पर कादिर है। हम लौटने वाले, तौबा करने वाले, इबादत करने वाले सजदा करने वाले और अपने रब की तारीफ (हम्द) करने वाले है अल्लाह ने अपना वादा पूरा किया और उसने अपने बन्दों की मदद (सहायता) की और तनहा उसने दुश्मन को शिक़स्त दी। फिर दिन में आप मदीने में दाखिल हुए।

वफात (देहांत)
तबलीगी और तशरीई कामों का पूरा होना और लिकाए (मिलन) रब्बी का आना

जब दीन का काम पूरा हो गया तो अल्लाह ने फरमाया कि :-

आज के दिन मैंने तुम्हारे लिये तुम्हारे दीन को पूरा कर दिया और

www.abulhasanalinadwi.org

मैंने तुम पर अपनी निअमतें तमाम (पूरा) कर दीं और इस्लाम को तुम्हारा दीन पसंद किया।

जब रिसालत का पैगाम आपने पहुचाँ दिया और अमानत अदा कर दी। अल्लाह के रास्ते में मेहनत और जान खपाने का जो हक था वह अदा कर दिया और अल्लाह ने रसूल की आंख को लोगों के झुण्ड के झुण्ड दीन में दाखिल होने की वजह से ठंडक पहुँचाई तो अल्लाह ने अपने नबी को यह संसार छोड़ने की इजाजत दे दी और अल्लाह से मिलने का समय आ गया इसके बारे में लोगों से

अल्लाह ने फरमाया :-

ऐ मुहम्मद (सल्लाहो अलेहे वसल्लम) जब खुदा की मदद (सहायता) और फत़्ह (फत़्हे मक्का) आ पहुंचे और आप लोगों को अल्लाह के दीन में झुण्ड के झुण्ड इस्लाम में दाखिल होना देख लें तो अपने रब की तसबीह और हमद (तारिफ) कीजिये और उससे इसतिग़्फार की दुआ कीजिये वह बड़ा तौबा कुबूल करने वाला है।

रसूलुल्लाह का मरजे वफात

रसूलुल्लाह की बीमारी की इबतिदा (शुरूआत) माह सफर के आखरी दिनों में हुई। वह मरज शुरू ऐसे हुआ कि आप (बकीउल ग़रकद) में आधी रात को तशरिफ ले गये। उनके लिए आपने दुआए मगफ़िरत की और फिर आप अपने परिवार में लौट आये। जब सुबह हुई तो आपके सर में दर्द शुरू हुआ।

उम्मुल मुअमिनीन हज़रत आयशा फरमाती है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) जब बक़ी से वापस आये तो आपने मुझे सर दर्द में मुबतला देखा। उस समय मैं कह रही थी कि हाय मेरा सर, मेरा सर उस समय आपके सर में दर्द बढ़ गया। उस दिन आप

www.abulhasanalinadwi.org

हज़रत मैमूना के घर में थे। फिर आपने अपनी अज़्वाजे मुतहहरात (पवित्र पत्नियां) को बुलाया और उनसे इजाज़त मांगी कि आप हज़रत आयशा के घर रूक जायें। उन सबने आपको रूकने की इजाज़्त दे दी। उस समय आप इस तरह घर से निकले कि आपके पाव (पैर) दो आदमियों के बीच घिसट रहे थे। उन दो आदमियों में से एक हजरत फजल बिन अब्बास और दूसरे हजरत अली थे। आपने अपने सर पर कपड़ा बांध रखा था। पाव जमीन छू रहे थे इस हालत में आप हजरत आयशा के घर में दाखिल हुए। हजरत आयशा फरमाती हैं कि आप अपनी इस बीमारी में जिसमें आपका विसाल (देहांत) हुआ वह फरमाते थे "मैं उस खाने की तकलीफ महसूस कर रहा हूँ जो मैने खैबर में खाया था। इस वक़्त उस जहर से मेरे दिल की रग (अबहरी) कट रही है।

आख़िरी (अंतिम) लशकर (सेना)

इन्हीं दिनों आपने हज़रत उसामा बिन जैद बिन हारिसा को सेना के साथ शाम को भेजा और फ़रमाया कि उनके घोड़े बल्का और दारून तक जरूर (अवश्य) जायें जो फ़लस्तीन का हिस्सा (भाग) है।

आपने उस लशकर (सेना) में चुने हुए अंसार और मुहाजिरीन को शामिल किया। उनमें सबसे बड़े हज़रत उमर थे। आपने लशकर रवाना किया ही था कि आपकी बीमारी और बढ़ गई अभी यह लशकर अलजरफ़ में पड़ाव डाले था हज़रत अबू बकर ने आपके विसाल के बाद इस लशकर को भिजवाया ताकि आपके हुक्म (आदेश) का पालन हो और आपका मक़सद पूरा हो।

रसुलुल्लाह (सल्ललाहु अलैहि व सल्लम) ने इस बीमारी में मुसलमानों को वसियत की कि सहाबा मदीने आने वाले मेहमानों की मेहमानदारी उस तरह करेंगे जैसे आप किया करते थे और जज़ीरतुल

www.abulhasanalinadwi.org

अरब में कोई दूसरा दीन (धरम) न रहने दें। आपने फ़रमाया कि यहां से सभी मुशरिकीन को निकाल बाहर करो।

घमण्ड से मुसलमानों को रोकना और मुसलमानों के लिए दुआ

जिस दिन आप सरकी तकलीफ में मुबतिला हुए बहुत से लोग हज़रत आयशा के घर जमा हुए रसूलुल्लाह (सल्ललाहु अलैहि व सल्लम) ने उन सबका स्वागत किया और हिदायत और मदद की दुआ दी और फ़रमाया कि मैं तुम्हें अल्लाह से डरते रहने की वसीयत करता हूँ और अल्लाह को तुम पर निगहबान छोड़ता हूँ मैं उसी की तरफ से डराने वाला हूँ और यह कि तुम उसके बंदों और उसके शहरों पर चढ़ाई न करो। अल्लाह ने मेरे और तुम्हारे लिए फ़रमाया है कि यह आखिरत का घर हम उन लोगों के लिए करते हैं जो जमीन में न लड़ाई चाहते हैं और न फ़साद और अच्छा अनजाम परहेज गारो के लिए है। क्या जहन्नम (दोजख) घमण्ड करने वालों के लिए काफी नहीं है।

दुनिया के माल से कनारा कशी और बचे हुए माल को घर में रखने पर अपनी ना पसंदीदगी

हज़रत आयशा फरमाती हैं कि रसूलुल्लाह ने उस बीमारी में जिसमें आपका विसाल हुआ फ़रमाया कि ऐ आयशा मैं सोने का क्या करूं। आपके पास सात, आठ या नौ दिरहम थे। आप उनको हाथ में लेकर उलटने पलटने लगे और फ़रमाया कि यदि यह माल मेरे पास रहा और अपने रब से जा मिला तो गोया मैने अल्लाह पर भरोसा और यकीन नहीं किया ऐ आयशा इनको खर्च कर दो।

www.abulhasanalinadwi.org

नमाज़ का एहतिमाम और हज़रत अबू बकर की इमामत

रसूलुल्लाह (सल्ललाहु अलैहि व सल्लम) का दर्द जब ज़ियादा (अधिक) बढ़ गया तो आपने फ़रमाया क्या लोगों ने नमाज़ पहले पढ़ ली। सहाबा ने जवाब दिया नहीं या रसूलुल्लाह (सल्ललाहु अलैहि व सल्लम) हम आपका इन्तेजार कर रहे हैं। आपने फ़रमाया कि लगन में पानी रख दो लोगों ने पानी रख दिया। आपने गुस्ल (स्नान) फ़रमाया और तैयारी की आप बेहोश हो गये। जब आपको होश आया तो फिर पूछा कि क्या लोगों ने नमाज पढ़ली सहाबा ने जवाब दिया नहीं या रसूलुल्लाह हम आपका इन्तेजार कर रहे हैं। आपने फ़रमाया कि लगन में पानी रख दो। पानी रख दिया गया आप नहाये और तैयारी फरमाई तो फिर बेहोश हो गये फिर होश आया तो आपने फरमाया कि क्या लोगों ने नमाज़ पढ़ ली। सहाबा ने कहा कि नहीं या रसूलुल्लाह हम आपके मुनंतजिर हैं। आपने लगन में पानी रखने को फरमाया पानी रख दिया गया। आपने गुस्ल किया, तैयारी कर रहे थे कि आप फिर बेहोश हो गये। होश आया तो आपने पूछा कि क्या लोगों ने नमाज पढ़ ली। सहाबा ने कहा कि नहीं या रसूलुल्लाह हम आपका मस्जिद में बैठे नमाज़े इशा के लिए इन्तजार कर रहे हैं। आपने हज़रत अबू बकर के पास पैगाम भेजा कि वह नमाज़ पढ़ायें। हजरत अबू बकर नर्म दिल इनसान थे उन्होंने हजरत उमर से नमाज़ पढ़ाने को कहा। हज़रत उमर ने कहा कि नहीं। आप इसके ज्यादा मुसतहिक हैं। फिर उन्होंने उन दिनों में कई नमाज़े पढ़ाई।

फिर आपको इफ़ाका (सम्भाला) हुआ तो आप, दो आदमियों (इनमें एक हजरत अब्बास और दूसरे हज़रत अली) के सहारे बाहर तशरीफ़ लाये। उस वक्त जुहर की नमाज़ हो रही थी जब हज़रत अबू

www.abulhasanalinadwi.org

बकर को आपके आने का एहसास हुआ तो उन्होंने पीछे हटना चाहा मगर आपने उनको इशारे से पीछे हटने से मना फरमा दिया। फिर आपने दोनों सहाबा से कहा कि वह आपको नीचे हज़रत अबू बकर के पास बिठा दे। हज़रत अबू बकर खड़े होकर नमाज़ पढ़ा रहे थे और रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) बैठ कर नमाज़ अदा फरमा रहे थे।

आखिरी अंतिम खुतबा

आखिरी खुतबे में जब आप मिमबर पर तशरीफ़ फ़रमा थे और सर पर कपड़ा बंधा था फ़रमाया कि–

अल्लाह ने अपने बन्दों में से एक बन्दे को दुनिया और अल्लाह के पास जो है उसमें इखतियार दिया तो उसने अल्लाह के पास जो है उसे पसन्द कर लिया। हजरत अबूबकर आपकी इस बात का मतलब (अर्थ) समझ गये कि यह बात आप अपने लिये फ़रमा रहे हैं। वह सोच कर रो पड़े और कहा कि या रसूलुल्लाह (सल्ललाहु अलैहि व सल्लम) हमारी जान, माल और औलाद सब आप पर कुरबान हैं।

मुसलमानों पर आखरी निगाह जब कि वह सब सफें बनाये नमाज़ में खड़े थे

हज़रत अबू बकर नमाज़ पढ़ा रहे थे। पीर (सोमवार) की सुबह की नमाज़ में सफ़ बाधे खड़े थे। आपने अपने हुजरे मुबारक (कमरे) का परदा उठाया और मुसलमानों को देखा कि वह अपने रब के हुज़ूर (सामने) खड़े हैं। आपने देखा आपकी दावत और कोशिश (प्रयास) सफ़ल हुई तो खुशी से आपका चेहर-ए-अनवर चमक उठा।

सहाबा फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्ललाहु अलैहि व सल्लम)

www.abulhasanalinadwi.org

ने हज़रत आयशा का हुजरा (कमरा) का परदा खोला। आप हम लोगों को खड़े देख रहे थे। उस समय आपका चेहरा मुसहफ के वरक़ की तरह हो रहा था। फिर आप मुस्कुराये तो हम लोगों को खुशी हुई और हमने समझा कि आप नमाज के लिए तशरीफ़ ला रहे हैं। लेकिन आपने नमाज पूरी करने का इशारा किया फिर आपने परदा गिरा दिया और उसी दिन आपका विसाल (इन्तेकाल) हुआ।

कब्रो को पूजने और उन्हें मस्जिद बनाने से डराना

सबसे आखिरी बात जो आपने फरमाई यह थी कि अल्लाह यहूद व नसारा को बरबाद करें जिन्होंने अपने नाबियों की कबरों को सजदागाह बना लिया है और दीन अरब की जमीन पर न बाकी रहें।

हज़रत आयशा और इब्ने अब्बास कहते हैं कि जब रसूलुल्लाह पर निज़ाई कैफ़ियत हुई तो आप अपनी धारीदार चादर को अपने चेहरे मुबारक पर डाल लिया। जब आप बेहोश हो जाते तो आपका चेहरा खुल जाता। उसी हालत में आपने फरमाया कि यहूद व नसारा पर अल्लाह की लानत हो जिन्होंने अपने नबियों की कबरों को सजदागाह (मस्जिद) बना लिया। इससे आपने लोगों को डराया।

आखरी (अंतिम) वसियत

जब विसाल (इन्तेकाल) का समय करीब आया तो आपने सब लोगों को वसियत की कि नमाज की पाबंदी करें और आपने (नीचे) मातहत काम करने वालों का खयाल रखें। आपकी आवाज सीने में बंद होना शुरू हुई और जबान में हरकत की ताकत खत्म हो गई। हज़रत अली फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्ललाहु अलैहि व सल्लम) ने नमाज़ जकात और लौडी गुलामों के साथ अच्छा व्यवहार करने की

www.abulhasanalinadwi.org

तकीद की।

हजरत आयशा फरमाती हैं कि मैं आप पर मुअव्विज़तैन कुर्आन की आखरी सूरों को पढ़कर दम करने लगी तो मैंने देखा कि आपकी निगाह आसमान की तरफ उठी हुई थी और आप फरमा रहे थे कि सबसे अअ़ला (उत्तम) रफीक के पास सबसे अअला रफीक के पास।

उसी समय हज़रत अब्दुर रहमान बिन अबूबक्र दाखिल हुए और उनके हाथ में मिसवाक थी। आपने उनको निगाह जमाकर देखा जिससे उनको खयाल हुआ कि शायद आपको मिसवाक की जरूरत (आवश्यकता) है। हज़रत आ़यशा फरमाती है कि मैंने उनसे मिसवाक लेकर अपने दातों से नर्म किया और फिर वह मिसवाक आपको दे दी तो आपने अच्छे तरीके से मिसवाक की। जब उसको मुझे लौटाने लगे तो वह आपके हाथ से गिर गयी।

हजरत आयशा फरमाती हैं कि आपके हाथ में पानी का प्याला था। आप उसमें हाथ डालकर अपने चेहरे पर फेरते थे और फरमाते थे इबादत के लायक केवल, अल्लाह है। ला इलाह इल्ललाह बेशक मौत की सख्तियां हैं फिर आपने अपनी दायी उंगली को उठाया और फरमाया कि अअ़ला और बरतर रफी के पास सबसे अअ़ला और बरतर रफीक के पास फिर आपकी जान कब्ज हो गई और आपका हाथ पानी में गिर गया।

हज़रत आयशा फ़रमाती हैं कि आपका सर मेरी रान पर था आप पर एक क्षण (लमहे) के लिए बेहोशी तारी हुई फिर आपको एफ़ाका हुआ तो आपने अपनी निगाहें छत पर लगादी और फ़रमाया अल्लाहुम्मर्रफ़ीक़्लअअ़ला आखिरी लफ़्ज (शब्द थे) जो आपने फरमाये।

www.abulhasanalinadwi.org

रसूलुल्लाह ने दुनिया को कैसे छोड़ा

आपने जब दुनिया (संसार) छोड़ी तो आप जज़ीरतुल अरब (अरब खाड़ी) के हाकिम थे। दुनिया के सभी बादशाह व सम्राट डरते थे लेकिन जब आपका विसाल हुआ तो घर में न तो दीनार था और न दिरहम न गुलाम थे और न कोई बांदी (लौंडी) और न कोई चीज छोड़ी। केवल एक सफेद रंग का खच्चर, असलेहा और थोड़ी सी जमीन जिसको आपने सदका कर दिया। जब आपका विसाल हुआ तो आपकी जिरह एक यहूदी के पास तीस साआ जौं के बदले गिरवीं थी। विसाल तक आप जौ देकर उसको छुड़ा न सके।

अपनी बीमारी की हालत में आपने 40 गुलामों को आजाद किया। आपके पास 6 या सात दीनार थे जिनका सदका करने के लिए आपने हज़रत आइशा से कहा हजरत आइशा फरमाती है कि जब आपके विसाल के समय घर में इल्मारी पर थोड़े से जौ थे। मैं उसी में खाती रही लेकिन जब मैंने उसका वजन किया तो वह खतम हो गये।

जवाल का वक्त था

पीर सोमवार का दिन था, तारीख 12 रबीउल अव्वल थी और सन 11 "हिजरी और ज़वाल का वक्त था आपकी आयु उस समय 63 वर्ष थी। यह दिन मुसलमानों के लिए सबसे अधिक तारीक व मुसीबत का दिन था। इनसानियत के लिए यह बहुत बड़ा हादिसा था जिस तरह आपकी पैदाइश (जन्म) के समय सबके लिए बाबरकत और खुशी का दिन था।

हज़रत अनस अबू सईद खुदरी कहते हैं कि जिस दिन आपकी विलादत (जन्म) हुई वह दिन हर चीज से अधिक रोशन था, और जिस दिन आपका विसाल हुआ वह दिन सबके लिए तारीक दिन था।

www.abulhasanalinadwi.org

उम्मे ऐमन रो रही थी तो उनसे पूछा गया क्यों रो रही हो? हुजूर (सल्ललाहु अलैहि व सल्लम) की जुदाई पर उन्होंने जवाब दिया कि मैं इसलिए नहीं रो रही हूँ कि आपका विसाल हो गया। यह तो होना ही था। मुझे रोना इस बात पर आ रहा है कि आपके बाद वही का सिलसिला समाप्त हो गया।

सहाबा पर आपके विसाल का क्या असर (प्रभाव) पड़ा

सहाबा को आपसे जो महब्बत थी उसको देखते हुए आपके विसाल की खबर (सूचना) उनपर बिजली बनकर गिरी। इसलिए कि सहाबा आपसे बड़ी महब्बत रखते थे। वह आपकी शफ़क़त में इस तरह दिन गुजारे थे जैसे बच्चे अपने माता पिता की आगोश में दिन गुजारते हैं। बल्कि उससे भी अधिक। अल्लाह फ़रमाता है-

ऐ लोगो तुम्हारे पास ऐसे रसूल आये जो तुम्हारी नस्ल (जिंस)से हैं जिन पर तुम्हारी तकलीफ (कष्ट) गरां गुजरती है। जो तुम्हारे फायदे (लाभ) के ख्वाहिशमन्द (इच्छुक हैं) ईमानदारों के साथ बड़े शफ़ीक व मेहरबान (दयालू) है।

(सूरह तौब 128)

सहाबा में से हर व्यक्ति समझता था कि वह आपका सबसे अधिक प्रिय आदर वाला है। आपके विसाल की सूचना पर कुछ ने यकीन नहीं किया। इनमें सबसे आगे हज़रत उमर थे। उन्होंने उनकी बातों पर यकीन नहीं किया जिन्होंने आपके विसाल की खबर दी थी (सूचना) खबर पाकर वह सीधे मस्जिद गये। और खुतबे में लोगों से कहा कि आपका विसाल उस समय तक नहीं हो सकता जब तक मुनाफ़िक खतम न हो जाये।

www.abulhasanalinadwi.org

हज़रत अबूबकर का आख़री फैसला

हजरत अबू बक्र पहाड़ के समान अटल थे। वह न तो हिल सकते थे न ढुल सकते थे। हज़रत अबू बक्र को आपके विसाल की सूचना मिली तो शीघ्र घर से निकले और मस्जिद पहुँच गये उस समय हज़रत उमर लोगों से बात चीत कर रहे थे। वह सीधे हज़रत आयशा के कमरे में आये। उस समय आपका जिस्मे मुबारक (पवित्र) शव कपड़े से ढका हुआ था। हज़रत अबू बकर ने आपका चेहरा मुबारक खोला उसका बोसा लिया और फरमाया कि आप पर मेरे माता पिता कुरबान जो मौत आपके लिए लिखी थी उसका मजा आपने चख लिया। इसके बाद दोबारा मौत की तकलीफ न होगी फिर आप पर चादर डाल दी। फिर आपके कमरे से बाहर आ गये हज़रत उमर को बाते करते पाकर हज़रत उमर से कहा कि ऐ उमर ठहरो और खामोश हो जाओ लेकिन उन्होंने चुप होने से इनकार कर दिया। उनका खामोश न होते देखकर हज़रत अबू बक्र लोगों से मुखातब हुए। लोग उमर की बातें छोड़कर हज़रत अबू बक्र की बाते सुनने लगे। हज़रत अबू बक्र ने पहले अल्लाह की तारीफ की और फिर कहा कि ऐ लोगो जो कोई (हज़रत) मुहम्मद की पूजा करता था तो वह जान ले कि मुहम्मद की वफ़ात (देहांत) हो गई और जो अल्लाह की पूजा करता था वह जान ले कि अल्लाह सदा के लिए जिन्दा है। फिर उन्होंने यह आयत पढ़ी–

और मोहम्मद तो रसूल हैं। आपसे पहले और भी बहुत से रसूल गुजर चुके हैं। सो यदि आपका विसाल हो जाये या आप शहीद हो जायें तो क्या तुम लोग (अपने दीन से) वापस लौट जाओगे और जो शख्स (व्यक्ति) अपने दीन से फिरा वह अल्लाह का कोई नुकसान (हानि) नहीं करेगा और अल्लाह जल्द ही शुक्र करने वालों को बदला देगा।

(आले इमरान 3/244)

www.abulhasanalinadwi.org

जो सहाबा इस समय मौजूद (उपस्थित) थे कहते हैं कि ऐसा जान पड़ता था जैसे यह आयत हजरत अबू बक्र ने पढ़ी उसी समय उतरी है। और हजरत अबू बक्र ने उनकी बात कह दी। हज़रत उमर कहते हैं कि बखुदा जब मैंने हज़रत अबू बकर के मुँह से यह आयत सुनी तो मैं हैरान रह गया और मै जमीन पर गिर गया। मेरे पैर मेरा बोझ नहीं उठा सकते थे। मैंने समझ लिया कि हुजूर का इन्तकाल हो गया।

खिलाफत पर हजरत अबू बक्र से बेअत

उस समय जब मुसलमानों ने सकीफ़ा बनी साअ़दा में हज़रत अबू बक्र की खिलाफत पर बेअत की। ताकि शैतान को भड़काने और लोगों में फूट डालने का मौका अवसर न मिल पाये। और मुसलमानों में उस समय जब नबी (सल्ललाहु अलैहि व सल्लम) इस दुनिया से जा रहे हों इत्तिहाद (एकता) हो उनका अमीर (नेता) हो जो उनके मामले को देखे भाले। उसी में आपकी तजहीज व तदफीन शामिल है।

मुसलमानों ने आपको कैसे रुखसत (विदा) किया और आप पर कैसे नमाज़ पढ़ी

लोग शांत हो गये उनकी हैरत और परेशानी समाप्त हो गयी और लोग उन कार्यो में मशगूल (व्यस्त) हो गये जिनकी तालीम (शिक्षा) आपने दुनिया छोड़ते समय दी थी। जब सहाबा ने आपके गुस्ल (नहलाकर) और कफ़न से फुरसत पाई जिसको आपके परिवार ने किया था तो आपका जसदे मुबारक (पवित्र शव), आपके हुजरे मुबारक (कमरा) में रख दिया गया। उस समय हज़रत अबू बक्र ने बताया कि उन्हींने रसूलुल्लाह को यह कहते सुना था कि जब भी दुनिया से कोई नबी जाता है तो उसको वहीं दफ़न कर दिया जाता है

www.abulhasanalinadwi.org

जहाँ उसका विसाल हुआ है। इसलिए वहीं आपकी लहद (कबर) खोदकर तैयार की गई। यह कार्य हजरत अबूतलहा अंसारी ने किया। फिर सहाबा ने टुकड़ियों में जाकर आप पर नमाज़ पढ़ी। जब मर्द पढ़ चुके तो महिलाओं ने जा जा कर आप पर नमाज पढ़ी। महिलाओं के बाद बच्चों और बच्चियों ने जा जा कर आप पर नमाज पढ़ी। कोई आपकी कब्र पर नहीं झुका।

वह दिन मंगल का था, मदीने में वह दिन ग़म का था। सुबह हज़रत बिलाल ने जब अजान दी तो आपका जिक्र आया तो सब रो दिये उससे मुसलमानों का ग़म (दु:ख) और बढ़ गया। लोग उस अजान के सुनने के आदी थे जिसमें आप खुद (स्वयं) मौजूद रहते थे।

उम्मुल मोमेनीन हज़रत उम्मे सलमा फरमाती है कि

हम मुसीबत और कष्ट जो आपके बाद हम पर पड़ा आपकी वफ़ात की याद करते तो कम पड़ जाता था आप फ़रमाया करते थे ऐ लोगो जब किसी मुसलमान को कोई कष्ट या मुसीबत पहुँचे तो मेरी मुसीबत याद कर ले उसको शान्ति मिलेगी। मेरी उम्मत में किसी भी शख्स को मेरी जुदाई की मुसीबत से जियादा मुसीबत नहीं पहुंची।

उम्माहातुल मोमेनीन

हज़रत खदीजा बिन खुवेलद अलकिरशिया अल असदिया आपकी पहली बीबी (प्रथम पवित्र पत्नी थीं) नबी होने के पूर्व आपने उस समय उनसे शादी की जब हजरत खदीजा की आयु 40 वर्ष थी। हजरत खदीजा का विसाल हिजरत से 3 वर्ष पूर्व हुआ हज़रत इब्राहिम के अलावा सारी संतान हज़रत खदीजा से हुई। इनके इन्तेक़ाल के बाद आपने हज़रत सौदा बिन्त जमआ कुरैशिया से, फिर हज़रत आयशा

www.abulhasanalinadwi.org

बिन्त अबू बक्र सिद्दीक से निकाह फरमाया। हज़रत आयशा महिलाओं में सबसे अधिक विद्वान (आलिमा) और फ़कीहा थीं। फिर आपने हज़रत हफ़सा फिर आपने हज़रत जैनब बिन्त खुजैमा से निकाह फ़रमाया उनका दो माह के बाद इन्तेकाल हो गया। फिर आपने हज़रत उम्मे सलमा हिन्द बिन्त अबू उमैय्या अल किरशिया अलमख़ जूमिया से निकाह फ़रमायां इनका इन्तेक़ाल सबसे आखीर में हुआ। फिर आपने हज़रत जैनब बिन्त जहश जो आपकी फुफी उमैय्या की बेटी थी और उसी जुबे ज्वेरिया बिन्त अलहारिस से निकाह फरमाया। फिर उम्मे हबीबा रमला बिन्ते अबी सुफ़यान, फिर सफीया बिन्ते हुई बिन्त अखतब से निकाह फरमाया इसके बाद मैमूना बिन्त अल हारिस अल हिललिया से निकाह फ़रमाया यह आखिरी हैं जिनसे आपने निकाह फ़रमाया। जब आपका विसाल हुआ आपके अक्द (निकाह) में 9 पत्नियां थीं। हजरत खदीजा तथा हज़रत जैनब का इन्तेकाल आपकी जिन्दगी में हो गया था। विसाल के समय आपके निकाह में 2 बाँदिया थीं। एक हज़रत मारया बिन्त शमून अलमिसरिया जो मक़ूकस मिसर के बादशाह ने आपको हदये में दी थी और जो हज़रत इब्राहीम की माता थीं और दूसरी रैहाना बिन्त जैद थीं जो कबीले बनी नजीर से थीं वह मुसलमान हो गई थी। रसूलुल्लाह ने उन्हें आजाद करके निकाह फ़रमा लिया था।

आपकी अवलाद

हज़रत खदीजा से आपका बेटा जिनका नाम कासिम था और इन्हीं के नाम पर आपकी कुन्नीयत अबुल कासिम थी। इनका इन्तेकाल बचपन में ही हो गया था। फिर जैनब, फिर रूकय्या, उम्मे कुलसुम, फ़ातिमा, अब्दुल्लाह, (तय्यब, ताहिर) का जन्म हुआ ताहिर व तैय्यब अब्दुल्लाह के लक़ब थे। यह सब औलाद हज़रत खदीजा से हुई।

www.abulhasanalinadwi.org

हज़रत फ़ातिमा आपको अपनी औलादों में सबसे अधिक महबूब थीं। आपने उनसे बताया कि वह जन्नत में समस्त महिलाओं की सरदार होगी। हज़रत फ़ातिमा की शादी हज़रत अली से हुई जो आपके चाचा के लड़के थे। इनके दो लड़के एक हसन तथा दूसरे हुसैन थे। आपने इन दोनों के लिए फ़रमाया कि यह दोनों जन्नत में नव जवान जन्नतियों के सरदार होंगे।

हज़रत मारिया किबतिया से इब्राहिम पैदा हुए वह जब जरा बड़े हुए तो उनका इन्तेक़ाल हो गया। उनके इन्तेक़ाल के समय आपने फ़रमाया था कि आँख रोती है, दिल परेशान है हम अल्लाह को नाराज करने वाली कोई बात नहीं कर सकते। ऐ इब्राहिम हमें तुम्हारी जुदाई का ग़म है।

आपके अखलाक व आदाब

हज़रत अली जो आपके साथ अधिक रहे आपके अखलाक़ आपके व्यौहार दूसरे लोगों के मुकाबले ज्यादा जानते थे। वह फ़रमाते थे कि आपने कभी गाली नहीं बकी किसी से बद कलामी नहीं की बाजार में किसी से चीख कर या ऊँची आवाज में बात नहीं की कभी बुराई का बदला बुराई से नहीं दिया उसको माफ किया जिसने आपके साथ बुराई की। कभी अपने हाथ से किसी को नहीं मारा सिवाये इसके आपने अल्लाह की राह में जिहाद किया कभी औरत (महिला) और ना ही आपने किसी नौकर को मारा। मैंने किसी से आपको अपना बदला लेते कभी नहीं देखा। हां यदि किसी ने अल्लाह की हुरमत को खत्म करना चाहा तो आपको गुस्सा आता और आप इस मामले में सख्त होते आपको जिन कामों के करने का हुक्म दिया जाता आप उसमें से सरल कार्य को करते जब घर में होते तो आम आदमियों की तरह

www.abulhasanalinadwi.org

रहते आप अपने कपड़े स्वयं (खुद) धोते बकरी का दूध खुद दूहते और अपना काम आप स्वयं करते। आप जब भी किसी मजलिस में बैठते या उठते तो अल्लाह का जिक्र करते हुए किसी मजलिस में जाते तो आपको जहाँ जगह (स्थान) मिलती वहीं बैठ जाते और ऐसा ही करने का आप सबको आदेश भी देते। आप मजालिस में बैठने वाले को उसका हक़ देते। हर आदमी समझता कि वही आपकी नजरों में जियादा इज्ज़त वाला है। जो कोई आपको अपने पास बिठाता या आपसे मामला करता तो आप उसके सामने खड़े रहते। उस समय तक जब तक वह वहाँ से चला नहीं जाता कोई आपसे अपनी जरूरत बताता या सवाल करता तो उसकी जरूरत को पूरी फरमाते। या उसको नरमी से मुतमइन (संतुष्ट) करके वापस करते।

आप अखलाक और अच्छे व्यवहार में बहुत बढ़े हुए थे। आप लोगों में उनके पिता के स्थान पर थे। आप सबके साथ समानता बराबरी का मामला फ़रमाते। आपकी मजलिस शर्मो व हया वाली मजलिस होती थी। आप सबसे अधिक सख़ी (दानी) थे। सबसे ज्यादा सच बात कहने वाले नरम तबीअत वाले और परिवार में सबसे अच्छी तरह रहने वाले थे। जो आपको अचानक देखता डरता और जो आपसे मामला करता वो आपसे महब्बत करने लग जाता। आपको जो देखता कहता कि आप जैसा न मैंने आपसे पहले दखा और न आपके बाद।

अल्लाह ने अपने नबी को हसीन व जमील बनाया और उनको अपनी महब्बत और हैबत अता की, हजरत बरा बिन आजिब आपकी तारीफ़ में फ़रमाते हैं कि-

आप मियाना कद थे। मैंने आपको एक बार लाल लिवास में देखा मुझे आप इतने हसीन व जमील नज़र आये कि इससे पहले इतनी

www.abulhasanalinadwi.org

हसीना व खूबसूरत चीज़ नहीं देखी। आपके अवसाफ़ बताते हुए हज़रत अबू हुरैरा कहते हैं कि आप मियाना क़द थे लम्बाई के करीब़ आपकी घनी व सियाह (काली) दाढ़ी थी, पट्टों के बाल लम्बे और दोनों आखों के बाल घने थे। दोनों कंधों के बीच फासला ज्यादा था कहते हैं कि मैने आप जैसा न पहले देखा और न बाद में। हज़रत अनस कहते हैं कि मैंने किसी रेशम़ व हरीर को आपकी हथेली से ज्यादा नरम नहीं पाया और मैंने आपकी खुशबू से ज्यादा अच्छी कोई खुशबू नहीं सूंघी।

(समाप्त)

www.abulhasanalinadwi.org